इब्रानियों की पत्री

Hebrews

यह अध्ययन, हिन्दी स्टडी बाइबल का एक भाग है।

इसकी विशेषताएं :

1. सभी पदों को बायीं ओर रखा गया है, ताकि पढ़ते समय निरंतरता बनी रहे।
2. प्रत्येक पद का आरंभ बोल्ड (**Bold**) अक्षर से किया गया है।
3. एक पृष्ठ पर केवल उतने ही पद दिये गये हैं, जितने पदों का अध्ययन दिया गया है।
4. आपके सुझावों का स्वागत है।

इब्रानियों की पत्री

१ पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप–दादों से थोड़ा थोड़ा करके और भांति भांति से भविष्यद्वक्ताओं
२ के द्वारा बातें की। **उसने** इन दिनों के अन्त में हमसे पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं
३ का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है। **वह** उसकी महिमा का
प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता

अध्याय 1

1:1 – ***"परमेश्वर... बातें की"*** – इस पत्र का यह एक बड़ा विषय है। पुराने नियम में हम उन सभी बातों को पाते हैं, जिन्हें परमेश्वर ने कहा था। तुलना करें मत्ती 4:4; 2 पतरस 1:21; 2 तीमुथि. 3:16। देखें, 1:6, 7,8,10; 2:11–13; 3:7; 4:3; 5:5,6; 6:13,14; 7:21; 8:8; 10:5,15,17, 12:25,26; 13:5।

"थोड़ा थोड़ा करके और भाँति भाँति से" – देखें, उत्पत्ति 15:1,12; 18:1,10; 28:12–15; निर्गमन 3:1–4, 19:20; 25:22; 33:11; 34:5–7; यहोशू 5:13–15; 2शमू. 23:1–3; 1 राजा 19:11–13; यशा. 6:1–8; यिर्म. 1:4,9,10; यहेज. 2:1,2; दानिय्येल 8:15–18; 9:20–22।

"बापदादों" – इब्री लोगों के पूर्वज।

"भविष्यद्वक्ता" – पुराने नियम (वाचा) के वे लोग जिन्हें परमेश्वर ने प्रेरित किया और अपना संदेश देने के लिये भेजा था। उत्पत्ति 20:6 आदि से संबंधित टिप्पणी को देखें। क्योंकि भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बोलने वाला सच्चा परमेश्वर था, इसलिये स्पष्ट है कि उसके मार्गों और उसकी इच्छा को समझने के लिये पुराने नियम का अध्ययन आवश्यक है।

1:2 – इब्रानियों में तमाम तुलनात्मक बातों के विवरण की शुरूआत पद 1 और 2 में है।

"उसका पुत्र" – यूहन्ना 7:16,17; 8:28; 12:49,50; 17:8। व्यवस्था. 18:18,19 में वर्णित अंतिम महान भविष्यद्वक्ता यीशु थे। 2–4 पद में इस पत्र का लेखक परमेश्वर के पुत्र (यीशु) के विषय में नौ महत्वपूर्ण बातें कहता है।

"वारिस" – लेखक यह लिखना आरम्भ करता है कि परमेश्वर का पुत्र कौन है और भविष्यद्वक्ताओं से कितना महान है। वारिस का अर्थ है उसको हासिल करना जिसकी प्रतिज्ञा की गयी है।

"सारी सृष्टि रची है" – पद 10; उत्पत्ति 1:1; यूहन्ना 1:1–3; 1 कुरि. 8:6; कुलु. 1:6। सारी सृष्टि के बनाए जाने से पहले पुत्र था – पृथ्वी पर उत्पन्न होने के फलस्वरूप वह परमेश्वर का पुत्र नहीं बना (यूहन्ना 17:5; कुलु. 1:17)। पुत्र पर अधिक जानकारी के लिये मत्ती 3:16,17; 11:27; यूहन्ना 3:16; 5:18–23 की टिप्पणी देखें।

1:3 – ***"उसकी महिमा का प्रकाश"*** – का अर्थ है अलौकिक स्वभाव। परमेश्वर को प्रकाश (1 यूहन्ना 1:5) कहा जा सकता है। यीशु, इस प्रकाश का चमकना है। तुलना करें लूका 1:78–79; 2:29–32; यूहन्ना 1:4,5,9; 8:12; 2 कुरि. 4:6। सूर्य का तेज सूर्य को और उसके तत्व को प्रगट करता है। इसी प्रकार मसीह परमेश्वर को प्रगट करता है और उसके पास परमेश्वर का स्वभाव है – यूहन्ना 1:14,18; 10:30; 14:9; दूसरे पद फिलि. 2:6, लूका 2:11 उसका स्वभाव पिता के समान था, वही परमेश्वर की महिमा हो सकता था। वह "प्रकाश का प्रकाश" था।

"उसके तत्व की छाप" – 2 कुरि. 4:4; कुलु. 1:15 की तुलना करें। जिस यूनानी शब्द का अनुवाद स्वभाव है उसका अर्थ है 'तत्व', 'सार', 'वास्तविक स्वभाव'। परमेश्वर अपनी अनंत आत्मिक स्थिति में पहुंच न होने वाले, अदृश्य प्रकाश में रहता है और अदृश्य है (1 तीमु. 6:16; यूहन्ना 1:18)। वह परमेश्वर के स्वभाव और गुणों सहित पूरी तरह से मसीह में प्रगट हुआ (कुलु. 2:9)। जो कुछ परमेश्वर है, वह मसीह स्वयं में प्रगट करता है, जिसका स्वभाव परमेश्वर का सा था, केवल उसी

४ है। वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा। **वह** स्वर्गदूतों से उतना
५ ही उत्तम ठहरा, जितना उसने उनसे बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया। **क्योंकि**
स्वर्गदूतों में से उसने कब किसी से कहा, कि तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ? और
६ फिर यह, कि मैं उसका पिता हूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा? **और** जब पहिलौठे को जगत में

के विषय में यह कहा जा सकता है। फिलि. 2:6 में दिये गये पदों को देखें।

"उसके सामर्थ के वचन से" – कुलु. 1:17 से तुलना करें। उसका वचन उसकी इच्छा को बताता है – वह जो कुछ कहता है उसे किया जाता है। इस सृष्टि में आकाशगंगा, तारामंडल, सूर्य, और दूसरे अन्य ग्रह यीशु की सामर्थ से इस प्रकार सम्हाले जाते हैं कि वे टकरा न जाएँ। जिस उद्देश्य से सब कुछ बनाया गया है, वह सब यीशु के द्वारा ही पूरा होता है। इसमें भी हम यह देखते हैं कि जो परमेश्वर का स्वभाव है वही यीशु का भी है। केवल परमेश्वर ही है जिसका वचन इतना सामर्थी हो सकता था, जो कि सारी सृष्टि को संभाल सके?

"पापों को धोकर" – इसका अर्थ यह है कि यीशु ने क्रूस पर अपने बलिदान के द्वारा, मनुष्यों के पापों से शुद्धता पाने के लिये एक मार्ग सिद्ध किया (7:27; 9:26; मत्ती 26:18; 10:10; 1 यूहन्ना 1:7; यूहन्ना 1:29; प्रका. 1:5)।

"जा बैठा" – 13;2:9;10:12; भजन 110:1; मरकुस 16:19; प्रेरित 2:33; प्रका. 3:21। क्रूस पर अपने बलिदान के द्वारा पापों से शुद्धता के कार्य को पूरा करके वह सृष्टि की सामर्थ और महिमा के सर्वोच्च स्थान पर बैठ गया।

1:4 – यीशु को भविष्यद्वक्ताओं से उत्तम दिखाकर (पद 1,2) लेखक ने उसे स्वर्गदूतों से भी बढ़कर दिखाया है। उत्पत्ति 16:7 में 'स्वर्गदूतों' पर टिप्पणी देखें।

"ठहरा" – यूनानी में "बनकर" भी है। पृथ्वी पर आने से पहले वह स्वर्गदूतों से बढ़कर था। किंतु पृथ्वी पर एक मनुष्य के रूप में वह "स्वर्गदूतों से थोड़ा कम था" – 2:9 । अपने पुनरुत्थान के बाद उसने स्वर्गदूतों से ऊँचा स्थान हासिल किया। यूहन्ना 7:16,17; 8:28; 12:49,50; 17:8। व्यवस्था. 18:18,19

"उत्तम नाम" – यह उत्तम नाम 'पुत्र' है। इसका अर्थ उससे है जो सृष्टि का प्रभु है, पिता के स्वभाव को रखता है और जिसकी उपासना की जानी चाहिये (6,8,10)। फिलि. 2:9–11 से तुलना करें। स्वर्गदूतों से कम स्थान लेकर उसने संसार में जन्म लिया और वह नाम प्राप्त किया जो उसके इस संसार में आने से पहले परमेश्वर के पुत्र का था। यहाँ मसीह द्वारा स्थापित नयी वाचा को स्वर्गदूतों द्वारा दी गई पुरानी वाचा से उत्तम दिखाया गया है – 2:2 ।

1:5 – देखें भजन 2:7, 2शमू. 7:14। कोई स्वर्गदूत स्वयं के लिये "परमेश्वर का पुत्र" पद के लिये दावा नहीं कर सकता। (यूहन्ना 3:16 पर टिप्पणी देखें)। 2 शमू. 7:14 में परमेश्वर पहले दाऊद के पुत्र सुलैमान के विषय कहता है। किन्तु उसे मालूम था कि सुलैमान से बढ़कर एक और आएगा जो कि दाऊद का पुत्र और परमेश्वर का पुत्र होगा (रोमि. 1:3,4; यशा. 9:6)।

1:6 – *"पहिलौठा"* – यूनानी में अर्थ है असाधारण या सर्वश्रेष्ठ। पिता परमेश्वर को भी "पहिलौठा" कहने में कोई आपत्ति नहीं है क्योंकि इसका अर्थ है सृष्टि में परम प्रधान या सर्वश्रेष्ठ। कुलु. 1:15 पर टिप्पणी देखें। इस शब्द का अर्थ शाब्दिक रीति से जन्म नहीं है (देखें भजन. 89:27 – "अपना पहिलौठा और पृथ्वी के राजाओं पर प्रधान ठहराऊंगा")।

"दण्डवत करें" – पुराने नियम के यूनानी अनुवाद (सेप्टूजिन्ट) में ये शब्द व्यवस्था. 32:43 में आए हैं। यहाँ पवित्र आत्मा इन शब्दों पर अपने सहमति की छाप लगाता है। भजन 97:7 भी देखें। क्योंकि स्वर्गदूतों से कहा गया है कि वे उसे दण्डवत करें, इसलिये यह स्पष्ट है कि मसीह उनसे कहीं

७ फिर लाता है, तो कहता है कि परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत करें। **और** स्वर्गदूतों के
विषय में यह कहता है कि वह अपने दूतों को पवन, और अपने सेवकों को धधकती आग बनाता
८ है। **परन्तु** पुत्र से कहता है कि हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा; तेरे राज्य का
९ राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है। **तू** ने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रखा; इस कारण परमेश्वर,
१० तेरे परमेश्वर ने तेरे साथियों से बढ़कर हर्षरूपी तेल से तुझे अभिषेक किया। **और** यह कि, हे
११ प्रभु, आदि में तू ने पृथ्वी की नेव डाली, और स्वर्ग तेरे हाथों की कारीगरी है। **वे** तो नाश हो
१२ जाएंगे, परन्तु तू बना रहेगा; और वे सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएंगे। **तू** उन्हें चादर के
समान लपेटेगा, और वे वस्त्र के समान बदल जाएंगे; परंतु तू वही है और तेरे वर्षो का अन्त
१३ न होगा। **और** स्वर्गदूतों में से उसने किससे कब कहा, कि तू मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि
१४ मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे की पीढ़ी न कर दूं? **क्या** वे सब सेवा टहल करनेवाली
आत्माएं नहीं, जो उद्धार पानेवालों के लिए सेवा करने को भेजी जाती हैं?

अधिक श्रेष्ठ है। यह भी स्पष्ट है कि मसीह और पिता का स्वभाव एक ही है – यदि ऐसा न होता तो वह स्वर्गदूतों को आज्ञा न देता कि वे मसीह की आराधना करें। बाइबल में आराधना केवल परमेश्वर के लिये है (देखें मत्ती 4:10)।

1:7,8 – भजन 104:4; 45:6,7 पद देखें। ये पद दिखाते हैं कि स्वर्गदूत वे जीव हैं जिन्हें परमेश्वर ने बनाया है। परमेश्वर के पुत्र को बनाया नहीं गया, किंतु उसका और परमेश्वर का स्वभाव एक सा है। पद 8 में पिता पुत्र से बात करता है और दाऊद के मुख से कहता है – "हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन"। जो लोग यीशु के परमेश्वर होने को अस्वीकार करते हैं उन्होंने इसी वाक्य को दूसरी तरह से कहने का प्रयास किया है, "परमेश्वर तेरा सिंहासन है।" यह एक हास्यास्पद अनुवाद है। यह अनुवाद वास्तव में मसीह को परमेश्वर से महान दर्शाता है – क्योंकि जो सिंहासन पर विराजमान है, वह सिंहासन से श्रेष्ठ है। मसीह के ईश्वरत्व के संबंध में फिलि. 2:6 में और संदर्भ देखें।

1:9 – *'तेरा परमेश्वर'* – परमेश्वर पिता – इफिसियों 1:3।

1:10–12 – *"और यह कि"* – भजन 102:25–27 देखें। यह भी भविष्यद्वक्ता के द्वारा परमेश्वर के बातचीत किये जाने का उदाहरण है। और वह परमेश्वर के पुत्र मसीह को "प्रभु" कहता है (पद 8) और पद 10 में यह कि मसीह ने स्वर्ग, आकाश और पृथ्वी को बनाया। (उत्पत्ति 1:1)। मसीह और परमेश्वर का स्वभाव एकसा है इसका यह और एक प्रमाण है, क्योंकि केवल परमेश्वर ही सिरजनहार है (उत्पत्ति 1:1)। पद 11,12 में परमेश्वर कहता है कि पुत्र न बदलने वाला और अनंत है। ये गुण केवल परमेश्वर ही में हैं। केवल परमेश्वर ही "वस्त्र की तरह" लपेट सकता है (पद 12)? और मसीह ऐसा करेगा। भजन 102:1 यहोवा परमेश्वर से एक प्रार्थना है, किंतु यहाँ लेखक कहता है कि यह मसीह से की गई प्रार्थना है। दूसरे शब्दों में, यहोवा मसीह में प्रगट हुआ। लूका 2:11 में अन्य पद देखें।

1:13 – भजन 110:1, इस सृष्टि में मात्र मसीह को परमेश्वर ने सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया है।

1:14 – मसीह मानवजाति का स्वामी/प्रभु है (पद 10, रोमि. 14:9, फिलि. 2:9–11)। किंतु स्वर्गदूत सेवक हैं जो उनकी सेवा के लिये भेजे गए हैं, जो उद्धार के वारिस होंगे, जो मसीह में विश्वासी हैं। यहाँ "उद्धार" का अर्थ उनके उद्धार का अंतिम चरण – रोमि. 8:23,29,30; 1 पतरस 1:5। यहाँ हमें यह नहीं बताया गया है कि स्वर्गदूत हमारे लिये क्या सेवा करते हैं। उत्पत्ति 16:7 स्वर्गदूतों पर टिप्पणी देखें।

इन पदों के साथ लेखक अपने पहले मुख्य मुद्दे को पूरा करता है – परमेश्वर ने अपने पुत्र

२ **इस** कारण चाहिए कि हम उन बातों पर जो हमने सुनी हैं, और भी मन लगाएं, ऐसा न हो कि
२ उनसे दूर चले जाएं। **क्योंकि** जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था जब वह स्थिर रहा
३ और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक ठीक बदला मिला, **तो** हम लोग ऐसे बड़े
उद्धार से निश्चिंत रहकर कैसे बच सकते हैं, जिसकी चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई, और

के द्वारा बातें की है जो उसके समान स्वभाव रखता है और वह सारे मनुष्यों और सारे स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है। हम इस बात से आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर का प्रकाशन उसके पुत्र के द्वारा उसका अंतिम प्रकाशन है। अपने पुत्र को भेजने और उसके द्वारा बातें करने के बाद, वह क्यों अपने किसी पुराने तरीके को अपनाकर मनुष्यों में से किसी को भविष्यद्वक्ता चुनकर उसके द्वारा बातें करता?

अध्याय 2

2:1–4 – पाँच गम्भीर चितौनियों मे से यह पहली है। अन्य चितौनियाँ 3:7–19; 6:1–8; 10:26–31; 12:25–29 में पायी जाती हैं। यह चितौनियाँ सुसमाचार को हल्का–फुल्का समझने (2:3), अविश्वास (3:12,19), विश्वास से मुकरने (6:6), जानबूझकर पाप में पड़े रहने, परमेश्वर और उसकी सच्चाई के प्रकाश को स्वीकार न करने (12:25) के विरोध में है। इन सभी पाँच बातों को एक शब्द 'विश्वास त्याग' कहा जा सकता है। विश्वास त्याग का अर्थ है परमेश्वर के विरोध में बलवा करना और उसके प्रगट किये गये सत्य से मुकरना।

2:1 – ***"जो हमने सुनी हैं"*** – प्रभु यीशु का सुसमाचार।

"दूर चले जाएँ" – उस सत्य से जो परमेश्वर ने हमें दिया है। दूर चले जाना सबसे आसान बात है। उसके लिये प्रयासों की जरूरत नहीं है। संसार में ऐसी बहुत सी बातें हैं जो मनुष्य को परमेश्वर से दूर ले जाती हैं।

2:2 – ***"स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया मसीह का वचन"*** – ऐसा माना जाता है कि मूसा द्वारा दी गई व्यवस्था को स्वर्गदूतों की सहायता से पहुंचाया गया था। देखें, गलतियों 3:19 और प्रेरित. 7:23।

"स्थिर रहा" – स्वर्गदूतों द्वारा लायी गयी व्यवस्था को मानना अनिवार्य था, (निर्ग. 19:5, लैव्य. 18:1–5, व्यवस्था 6:1–3; 32:45–47), और न मानने पर दण्ड – लैव्य. 26:14–39; व्यवस्था. 28:15–68; 2 राजा 17:7–20।

2:3 – ***"उद्धार"*** – जो उद्धार परमेश्वर ने मसीह के द्वारा दिया है (रोमि. 1:16)। लेखक का कहना यहाँ यह है कि पुत्र द्वारा परमेश्वर का प्रकाशन (सुसमाचार, नयी वाचा) स्वर्गदूतों द्वारा दिए गए उसके प्रकाशन से श्रेष्ठ है। जिन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था को नज़रअंदाज किया वे बच न पाए; न ही वे बच पायेंगे जो मसीह के सुसमाचार की उपेक्षा करते हैं। सुसमाचार परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह का प्रकाशन है, और मनुष्यों के लिये उद्धार प्रदान करता है। परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि जो सुसमाचार सुनते हैं और उसे हल्का फुल्का जानते हैं वे दण्ड से बच पायेंगे। बल्कि उनका दण्ड अधिक भयानक और अधिक निश्चित होगा क्योंकि जिस सुसमाचार की वे उपेक्षा कर रहे हैं वह पिछले किसी भी प्रकाशन से श्रेष्ठ है।

सुसमाचार को "ऐसा बड़ा उद्धार" कहा गया है। मसीह का सुसमाचार निम्नलिखित बातों में श्रेष्ठ है।
उसका लेखक : स्वयं परमेश्वर,
उसकी निश्चितता : कई अचूक प्रमाण (प्रे. का. 1:3),
उसका अनोखापन : मात्र एक और एक ही सत्य सुसमाचार है – यूहन्ना 14:6; प्रे. का. 4:12
उसकी उद्धार करने की सामर्थ – 7:25; रोमि. 1:16
उसके प्रेम और अनुग्रह का प्रकाशन – रोमि. 5:8
उसके न्याय का सन्तुष्ट किया जाना – रोमि. 3:25,26

४ सुननेवालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ? **साथ ही** परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों,
अद्‌भुत कामों, और अनेक प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने
५ के द्वारा इसकी गवाही देता रहा। **उसने** उस आनेवाले जगत को जिसकी चर्चा हम कर रहे
६ हैं, स्वर्गदूतों के आधीन न किया; **वरन्** किसी ने कहीं यह गवाही दी है, कि मनुष्य क्या है कि
७ तू उसकी सुधि लेता है? या मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उस पर दृष्टि करता है? **तू** ने उसे
स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया; तू ने उस पर महिमा और आदर का मुकुट रखा और उसे
८ अपने हाथों के कामों पर अधिकार दिया। **तू** ने सब कुछ उसके पावों के नीचे कर दिया,
इसलिए जबकि उसने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, तो उसने कुछ भी रख न छोड़ा, जो
९ उसके आधीन न हो; परंतु हम अब तक सब कुछ उसके आधीन नहीं देखते। **परंतु** हम यीशु
को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और
आदर का मुकुट पहने हुए देखते हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिए मृत्यु

उसके स्थायी परिणाम – 9:12; 10:10,14; रोमि. 5:9,10; आदि।

इस बात पर ध्यान दें, परमेश्वर के न्यायपूर्ण दण्ड का सामना करने के लिये यह जरूरी नहीं कि मनुष्य सक्रिय रूप से सुसमाचार का इन्कार करें। हल्का फुल्का समझना ही उसे अस्वीकार करना है।

"जिसकी चर्चा प्रभु के द्वारा हुई" – सुसमाचार की पहली चर्चा प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हुई (मरकुस 1:14,15; लूका 4:18–21)।

2:4 – ***"परमेश्वर भी"*** – पिता ने आश्चर्यकर्मों के द्वारा अपने पुत्र के सुसमाचार की पुष्टि की – मत्ती 28:6 (रोमि. 1:4); मरकुस 16:20; प्रे. का. 2:43; 5:12–16; आदि।

"और वरदानों" – पवित्र आत्मा के वरदान, सुसमाचार के विषय में परमेश्वर की गवाही थी (1 कुरि. 12:7–11)।

2:5–18 – कुछ लोगों के प्रश्न कि यदि मसीह स्वर्गदूतों से उत्तम है, तो मनुष्य रूप में स्वर्गदूतों से कम कैसे था? स्वर्गदूतों से जो बढ़कर था, उसने फिर परीक्षा, दुख और मृत्यु का साम्हना क्यों किया? बहुत से यहूदियों के लिये यह असम्भव बात थी (1 कुरि. 1:23)। इसीलिये वे उसे 'परमेश्वर मनुष्य रूप में' स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं थे – यूहन्ना 5:17,18; 10:31–33।

लेखक इन पदों में दो बातें कहता है : केवल थोड़े समय के लिये मसीह स्वर्गदूतों से कम किया गया था (पद 9), और यह उचित एवं आवश्यक था कि उसे स्वर्गदूतों से कम एक मनुष्य बनाया जाए, ताकि वह लोगों का उद्धारकर्ता बन सके (पद 10,14,17)।

2:5 – ***"आने वाले जगत"*** – मत्ती 25:31,34; प्रेरित. 3:21; रोमि. 8:18–23; यशा. 11; प्रका. 20–22 अध्याय।

2:6–8 – भजन 8:4–6 की ओर संकेत देते हुए लेखक दिखाता है कि आने वाले जगत में परमेश्वर स्वर्गदूतों को नहीं, मनुष्यों को शासक बनाएगा। देखें मत्ती 19:28, 24:46,47; 25:21; लूका 19:17; 2 तीमु. 2:12; प्रका. 5:10; 20:6; 22:5।

"परंतु हम अब तक" – पद 8 पूरी तरह से पूरा नहीं हुआ है। जिस ऊँचे पद को परमेश्वर मनुष्य को देना चाहता था, अब तक वह उसका नहीं है।

2:9 – आने वाले जगत के ऊपर मनुष्य का अधिकार होना केवल यीशु के द्वारा ही सम्भव है। वह "अंतिम आदम" (1 कुरि. 15:45–47) मनुष्य जाति का प्रतिनिधि है। वह छुटकारा पाए हुए उन लोगों का अगुवा है जो आने वाले जगत पर शासन करेगा। वह मनुष्य को स्वर्गदूतों से ऊपर का स्थान देना चाहता था। इसलिये हालांकि वह स्वर्गदूतों का निर्माण करने वाला है, फिर भी उसे स्वर्गदूतों से कम किया गया – यह कि वह मनुष्य बन गया था (यूहन्ना 1:14; फिल. 2:5–8)। मनुष्य बनने के पीछे उसका उद्देश्य था, लोगों के लिये मरना।

१० का स्वाद चखे। **क्योंकि** जिसके लिए सब कुछ है, और जिसके द्वारा सब कुछ है, उसे यही
अच्छा लगा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाए, तो उनके उद्धार के कर्ता को दुख
११ उठाने के द्वारा सिद्ध करे। **क्योंकि** पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किए जाते हैं, सब एक ही
१२ मूल से हैं; इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता; **किन्तु** कहता है कि मैं तेरा नाम
१३ अपने भाइयों को सुनाऊंगा, सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा। **और** फिर यह कि मैं उस
पर भरोसा रखूंगा; और फिर यह कि देख, मैं और बच्चे जिन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया है।
१४ **इसलिए** जबकि बच्चे मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी

"मृत्यु का स्वाद चखे" – का अर्थ है मरना। मनुष्य के लिये यह परमेश्वर का उद्देश्य था कि आने वाले जगत पर वह शासन करे,, किंतु इस उद्देश्य के पूरा होने में एक रुकावट थी। सभी पापी थे और अपने पापों के दण्ड के रूप में मृत्यु के आधीन थे (उत्पत्ति 2:17; रोमि. 5:12; 6:23)। प्रभु यीशु 'प्रत्येक व्यक्ति के लिये' मरने आया – 2 कुरि. 5:14,15, 1 तीमु. 2:6; 1 यूहन्ना 2:2।

2:10 –*"बहुत से पुत्रों को महिमा"* – जो कुछ परमेश्वर ने किया है और लोगों में कर रहा है उसका यही उद्देश्य है। यूहन्ना 17:22,24; रोमि. 5:2; 8:18, 28–30, 9:23; 2 कुरि. 4:17; इफि. 1:18 से तुलना करें।

"उद्धार के कर्ता" – प्रभु यीशु – 12:2। जिस महिमा को परमेश्वर ने लोगों के लिये तैयार किया है, उसको प्राप्त करने के लिये उसने एक मार्ग भी तैयार किया है। "सिद्ध करने" का अर्थ यह नहीं है कि यीशु का स्वभाव उसके दुखों से पहले सिद्ध नहीं था। वह अपने चरित्र और कार्यों में निष्पाप और सिद्ध था। यहाँ अर्थ यह है कि लोगों के उद्धारकर्ता के रूप में कार्य करने के लिये परमेश्वर ने उसे दुखों के द्वारा पूरी तरह उपयुक्त पाया – 5:7–9; 7:28।

2:11–18 – जिन लोगों को परमेश्वर महिमा देने वाला है, प्रभु यीशु ने पूरी तरह से स्वयं को उनके समान कर दिया था।

2:11 – *"पवित्र करने वाला"* – यह मसीह है। देखें इब्रा. 10:10,14, 13:12। लैव्य. 20:6 और 17:17–19 की टिप्पणी। जो पवित्र किए जाते हैं वे वे ही हैं जो उसमें विश्वास करते हैं और उसे उद्धारकर्ता के रूप में और महिमा की ओर ले जाने वाले के रूप में ग्रहण करते हैं। परमेश्वर ने उन्हें बाकी मानवजाति से अलग किया है और परमेश्वर के लिये पवित्र किया है।

2:12,13 – प्रभु यीशु और उसके विश्वासी एक समान मानवी स्वभाव रखते हैं और परमेश्वर के साथ उनका समान रिश्ता है। इसके प्रमाण के रूप में लेखक भजन 22:22 और यशा. 8:17,18 इन पदों की ओर संकेत करता है।

2:14,15 – *"बच्चे"* – परमेश्वर की सन्तान। पद 10 में "बहुत से पुत्र" सारी मनुष्य जाति की ओर संकेत हैं। मसीह उन्हीं के समान मांस और लोहू (शरीर) में प्रगट हुआ– मत्ती 1:20,21, लूका 2:5–7, 24:49, यूहन्ना 1:14, 6:53–58। ऐसा करने के पीछे तीन उद्देश्य थे, मरना (मत्ती 16:21, 20:28, यूहन्ना 10:17,18), मृत्यु के द्वारा शैतान का नाश करना और अपने लोगों को स्वतंत्र करना। मत्ती 4:1–10 में शैतान पर व्याख्या देखें।

"मृत्यु पर सामर्थ" – आदम और हव्वा को पाप में गिराकर शैतान इस संसार में मृत्यु को लाया – उत्पत्ति 3। मनुष्य को दास बनाकर वह पाप और मृत्यु के क्षेत्र में राज्य करता है एवं उन्हें आत्मिक मृत्यु की दशा में रखता है – 2 तीमु. 2:26। ऐसा प्रतीत होता है कि उसे मार डालने का भी अधिकार है – अय्यूब 2:6, 1 कुरि. 5:5। अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा मसीह ने शैतान को हराया और यह सम्भव किया कि मनुष्य पाप की क्षमा, आत्मिक जीवन पाए और मृत्यु से पूरी तरह छूट जाए – यूहन्ना 5:24, 11:25,26, 1 कुरि. 15:54,57; 2 तीमु. 1:10। इसका अर्थ है शैतान का तख्ता पलटा जाना और उसका एवं उसके राज्य का सर्वनाश – यूहन्ना 12:31; प्रका. 20:10,14,15।

हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उसे, अर्थात् शैतान को जिसे मृत्यु पर सामर्थ मिली थी, निकम्मा
१५,१६ कर दे। **और** जितने मृत्यु के भय के कारण जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले; **क्योंकि**
१७ वह तो स्वर्गदूतों को नहीं, वरन् इब्राहीम के वंश को संभालता है। **इस** कारण उसको चाहिए
था कि सब बातों में अपने भाइयों के समान हो, जिससे वह उन बातों में जो परमेश्वर से संबंध रखती
हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने, ताकि लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित करे।
१८ **वह** उनकी भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है, क्योंकि उसने भी परीक्षा में दुख
उठाया।

"सामर्थ मिली" – यूनानी भाषा में क्रिया वर्तमान काल को दर्शाती है। जो लोग अब तक अपने पापों में हैं और मसीह को अस्वीकार कर रहे हैं, उनके ऊपर उसे मृत्यु की सामर्थ अभी भी है, किंतु मसीह में विश्वासियों के ऊपर नहीं (1 कुरि. 5:5 जैसे उदाहरण को छोड़कर)। मसीह ने हमें शैतान की सामर्थ और अन्धकार के राज्य से छुड़ाया और हमें परमेश्वर के राज्य में लाया है (प्रे. का. 26:18; कुलु. 1:13)।

ध्यान दें कि "मृत्यु के भय" के द्वारा शैतान मनुष्यों को अपनी बन्धुवाई में रखता है। "मृत्यु का भय" यह मात्र मरने के डर से बढ़कर है – यह इस बात का डर है कि मृत्यु के पश्चात क्या होगा, जिसके कारण लोग झूठे मतों की चपेट में आ जाते हैं। मसीह विश्वासियों को मृत्यु के भय से और दूसरे बन्धनों से छुड़ाता है – यूहन्ना 8:32,36; रोमि. 6:18; 8:2,15,21; 2 कुरि. 5:6–8; फिलि. 1:21–23।

2:16 – इस पद का अनुवाद कठिन है। शायद इसका अर्थ है मनुष्य बनने के कारण वह स्वर्गदूतों को नहीं, किंतु लोगों को संभालने के योग्य है या अधिकार रखता है।

"इब्राहीम का वंश" – मनुष्यों की सहायता करने के लिये मसीह स्वर्गदूत नहीं, मनुष्य बन गया। इब्राहीम के वंश के अर्थात् वे यहूदी जिन्होंने मसीह पर विश्वास किया है और उसकी आत्मिक सन्तान जो उसके समान परमेश्वर पर विश्वास करती है – रोमि. 4:11,12,16,17; गल. 3:7–9।

2:17 – *"सब बातों में... अपने भाइयों के समान"* – इसका अर्थ यह नहीं है कि यीशु पापी था या लोगों के समान पापी स्वभाव का था। देखें 4:15, 7:26; लूका 1:35, यूहन्ना 8:46, 2 कुरि. 5:21, 1 पतरस 2:22। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि वह एक मनुष्य था, परमेश्वर नहीं – 1:6,8। इसका अर्थ यह है कि उसके पास वास्तविक मांस, रक्त और मानव स्वभाव था (पद 14) और उसे वास्तविक दुखों और परीक्षाओं का साम्हना करना पड़ा (पद 18)। इसके दो उद्देश्य थे – प्रायश्चित करना और लोगों के लिये महायाजक बनना। प्रायश्चित के संबंध में पद निर्ग. 29:33, 25:17; रोमि. 3:25,26 देखें।

"महायाजक" – यहाँ लेखक इस पत्री में एक महत्वपूर्ण विषय का परिचय कराता है (3:1; 4:14; 5:10; 6:20; 7:26; 8:1; 9:11; 10:21)। बाईबिल में एक याजक वह था, जो लोगों के लिये बलि चढ़ाया करता था, परमेश्वर के तम्बू के कार्यो पर निगरानी रखता और परमेश्वर के साम्हने लोगों का प्रतिनिधित्व किया करता था। निर्ग. 28:1 की टिप्पणी देखें। सभी याजकों के ऊपर महायाजक था, कुछ कार्य केवल वही कर सकता था – 5:1–3; 9:7। लैव्य. अध्याय 16 देखें।

(परमेश्वर ने पुराने नियम के याजकपन को समाप्त कर दिया है। अन्य किसी धर्म में याजकपन की स्थापना परमेश्वर द्वारा प्रतिस्थापित नहीं थी। स्वर्ग में मसीह ही महायाजक है और पृथ्वी पर उसके विश्वासी ही ऐसे याजक हैं जो उसे ग्रहणयोग्य हैं – 1 पतरस 2:5,8; प्रका. 1:6।

"प्रायश्चित" – अधिकांश बाईबिल के ज्ञाता यह मानते हैं कि 'प्रायश्चित' शब्द के लिये यूनानी भाषा में प्रयुक्त शब्द मसीह द्वारा "परमेश्वर के क्रोध को दूर कर उसे प्रसन्न" करने के अर्थ को प्रगट करता है। रोमि. 3:25 और 1 यूहन्ना 2:2 में देखें।

2:18 – देखें 4:15; मत्ती 4:1–10। यीशु ने परीक्षाओं का साम्हना किया। शैतान ने उसे परीक्षा में डालने का प्रयास किया कि वह मात्र अपने ही विषय में सोचे, क्रूस से बचे और परमेश्वर की आज्ञा को तोड़े। इसलिये कि वह इन सारी बातों से गुज़रा है, वह अनुभव से शैतान के मार्गों को जानता

३ सो हे पवित्र भाइयो, तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर
२ जिसका हम अंगीकार करते हैं, ध्यान करो। **वह** अपने नियुक्त करनेवाले के लिए विश्वासयोग्य
३ था, जैसा मूसा भी उसके सारे घर में था। **क्योंकि** वह मूसा से इतना बढ़कर महिमा के योग्य
४ समझा गया है, जितना कि घर का बनाने वाला घर से बढ़कर आदर रखता है। **हर** एक घर
५ को कोई न कोई बनानेवाला होता है, परंतु जिसने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर है। **मूसा**
उसके सारे घर में सेवक के समान विश्वासयोग्य रहा, ताकि जिन बातों का वर्णन होनेवाला
६ था, उनकी गवाही दे। **परंतु** मसीह पुत्र के समान उसके घर का अधिकारी है, और उसका घर
हम हैं, यदि हम साहस पर, और अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।
७,८ **इसलिए** जैसा पवित्र आत्मा कहता है कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, **तो** अपने मन को
कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय और परीक्षा के दिन जंगल में इस्राएलियों ने

है और उन लोगों से सहानुभूति रखता है जो इनका साम्हना कर रहे हैं। मत्ती 6:13; 1 कुरि. 10:13 की टिप्पणी देखें।

अध्याय 3

3:1–6 – मसीह मूसा से श्रेष्ठ है। मूसा परमेश्वर के घर में सेवक था, किंतु यीशु परमेश्वर का पुत्र घर के ऊपर अधिकारी है।

3:1 – *"स्वर्गीय बुलाहट"* – विश्वासियों की बुलाहट स्वर्ग से है और वह उन्हें स्वर्ग ले जाती है (रोमि. 8:30)।

"प्रेरित" – बाईबिल में केवल यही एक स्थान है जहाँ मसीह को प्रेरित कहा गया है। इसका अर्थ है परमेश्वर ने उसे अपना कार्य पूरा करने हेतु संसार में भेजा और उसके द्वारा बातें की (1:2; यूहन्ना 6:48–49)।

3:2 – मूसा और यीशु विश्वासयोग्य थे – गिनती 12:6; यूहन्ना 8:28,29; 17:4।

"घर" – का अर्थ है परमेश्वर का घर, परमेश्वर के लोग।

3:3,4 – मूसा परमेश्वर के घर का एक भाग था, किंतु यीशु है जिसने उसकी सृष्टि की। इसलिये स्पष्ट है कि यीशु मूसा से बढ़कर है।

3:5,6 – घर में सेवक से कहीं बढ़कर पुत्र का पद है। "जिन बातों का वर्णन होनेवाला था", उनके विषय में मूसा ने कहा। इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने एक और सत्य के प्रकाशन की ओर संकेत किया (तुलना 10:1)। मूसा ने मसीह के विषय में गवाही दी – लूका 24:27; यूहन्ना 5:46।

"उसका घर हम हैं" – मूसा ने इस्त्राएलियों की सेवा की। मसीह का घर, उस पर विश्वास करने वाले सभी सदस्य हैं, और वह उस घर का अधिकारी है।

"यदि" – पद 14; कुलु. 1:23; 1 कुरि. 15:2 देखें। यह हमें नहीं सिखाता कि उसके घर के वे विश्वासी सदस्य अपना विश्वास खोकर अपनी सदस्यता खो सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि विश्वास में बने रहना सदस्यता का वास्तविक प्रमाण है। पद 14 देखें। वह व्यक्ति जो धीरज और आशा खो देता है, सुसमाचार का इन्कार करता है, और पाप के जीवन में फिर लौट जाता है, कभी सुसमाचार का भागी हुआ ऐसा मानना व्यर्थ है (10:39; यूहन्ना 10:27; 1 यूहन्ना 2:19)। दुख की बात है कि कई लोग यह दावा करते हैं कि वे परमेश्वर के घर के हैं, परंतु हैं नहीं।

3:7–19 – ये पद विश्वास त्याग के विषय में दूसरी चितौनी हैं। पद 7–11, भजन 95:7–11 से लिये गये हैं। इस पद की टिप्पणी देखें। ये कहते हैं कि संपूर्ण पीढ़ी परमेश्वर का घराना कहलायी जा सकती है, फिर भी अविश्वास की दोषी बनकर उन आशीषों से वंचित रह सकती है, जिन्हें देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने विश्वासियों से की है (पद 19)। यदि ये एक बार हो चुका, तो कई बार हो सकता है।

3:7 – *"पवित्र आत्मा कहता है"* – हालाँकि भजन 95 एक व्यक्ति के द्वारा लिखा गया, किंतु उसे परमेश्वर के आत्मा ने प्रेरित किया और उसके द्वारा बातचीत की। तुलना करें 9:8; 1 तीमु. 3:16; 2 पतरस 1:21।

९,१० किया था, **जहां** तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे जांचकर परखा और चालीस वर्ष तक मेरे काम देखे। **इस**
कारण मैं उस समय के लोगों से रूठा रहा, और कहा, कि इनके मन सदा भटकते रहते हैं,
११ और इन्होंने मेरे मार्गों को नहीं पहचाना। **तब** मैंने क्रोध में आकर शपथ खाई कि वे मेरे विश्राम
१२ में प्रवेश करने न पाएंगे। **हे** भाइयो, चौकस रहो, कि तुममें ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न
१३ हो, जो जीवित परमेश्वर से दूर हट जाए; **वरन्** जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है,
प्रति दिन एक दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुममें से कोई व्यक्ति पाप के
१४ छल में आकर कठोर हो जाए। **क्योंकि** हम मसीह के भागी हुए हैं, यदि हम अपने प्रथम भरोसे
१५ पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें। **जबकि** कहा जाता है कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो,

---

"आज" – यह शब्द एक नए आरम्भ, अवसर के एक नए दिन की ओर संकेत करता है। इसका अर्थ है मसीह के सुसमाचार का एक नया युग। 2 कुरि. 6:1,2 से तुलना करें।

3:8 – *"क्रोध दिलाने"* – निर्ग. 17:1–7, भजन 95:8।

"चालीस वर्ष तक" – गिनति 14:26–35।

"सदा भटकते रहते हैं" – बाहरी रीति से वे परमेश्वर के लोग कहलाते हैं, भीतरी रीति से वे कठोर, अविश्वासी और बलवई हैं। तुलना करें 58:3; भजन 1:2,3; 53:6।

3:11 –*"क्रोध"* – गिनती 25:3 में परमेश्वर के क्रोध पर टिप्पणी देखें।

"मेरे विश्राम" – मरुस्थल की यात्रा और कनान के शत्रुओं से विश्राम (व्यवस्था. 1:34–36; 12:9; यहोशू 23:1)।

3:12–19 – भजन 95:7–11 के शब्दों को लेखक अपने काल के यहूदियों की स्थिति में लागू करता है। हम अपने समाज में कलीसियाओं की स्थिति में इसे लागू कर सकते हैं। जो लोग परमेश्वर के लोग कहलाए जाते हैं उनके विश्वास के सम्बंध में चेतावनी है।

3:12 – *"चौकस रहो"* – 12:25; अविश्वास की भयंकर संभावना है। इसके विषय में अत्यंत सचेत रहें। अविश्वासी हृदय पापमय हृदय है। अविश्वासी हृदय को देखा नहीं जा सकता, परंतु उसका बाहरी प्रमाण है परमेश्वर से मुँह फेर लेना। जब कभी लोग परमेश्वर से मुँह फेरते हैं, तब कारण उनकी बुद्धि, तर्क या शिक्षा नहीं होती। हृदय की स्थिति यह निर्धारित करती है कि मनुष्य क्या करते हैं। तुलना करें नीतिवचन 4:23।

3:13 – मसीही विश्वासियों को चाहिए कि वे निरंतर दूसरे विश्वासियों को परमेश्वर पर सच्चा विश्वास करने, और उस विश्वास में बने रहने, और पाप से दूर रहने हेतु प्रोत्साहित करते रहें। पाप के विषय में दो बातों पर ध्यान दें। पाप परमेश्वर के विरुद्ध मनुष्य के हृदय को कठोर करता है और वह एक धोखा है (2 थिस्सल. 2:10)।

पाप एक अत्यंत धोखादायक सामर्थ है जो मनुष्यों को अन्धा बनाती है और उन्हें विनाश के चौड़े मार्ग पर ले जाती है।

3:14 – पद 6। इस पद का काल देखें – हम मसीह के भागी हो चुके हैं, (न कि भविष्य में होंगे), यदि हम अन्त तक उसमें स्थिर बने रहे। बीते समय में हुयी वास्तविक घटना को भविष्य मिटा नहीं सकता। लेखक परमेश्वर के सच्चे लोगों का वर्णन कर रहा है। लेखक परमेश्वर के सच्चे विश्वासियों की परिभाषा प्रस्तुत करता है – वे मसीह के भागी हैं और विश्वास में बने रहते हैं। विश्वास की परीक्षा हो सकती है, सच्चा विश्वासी धीरज के साथ अंत तक उसमें बने रहता है। मसीही विश्वासी के रूप में मात्र आरंभ करना काफी नहीं है। हमें अन्त तक उसमें बने रहना है। सच्चे विश्वासी अंत तक उसमें बने रहते हैं, विश्वास त्यागने वाले नहीं (तुलना करें 10:35–39; रोमि. 5:9–10; यूहन्ना 10:27; 17:11,12; लूका 22:31,32; 1 यूहन्ना 2:19)।

3:15 – हृदय कठोर करना और परमेश्वर के विरोध में बलवा करना अविश्वासी हृदय का एक प्रमाण है।

१६ तो अपने मनों को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय किया था। **किन** लोगों ने
१७ सुनकर क्रोध दिलाया? क्या उन सब ने नहीं, जो मूसा के द्वारा मिसर से निकले थे? **वह**
चालीस वर्ष तक किन लोगों से रूठा रहा? क्या उन्हीं से नहीं, जिन्होंने पाप किया, और उनके
१८ शव जंगल में पड़े रहें? **उसने** किनसे शपथ खाई कि तुम मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाओगे;
१९ केवल उनसे जिन्होंने आज्ञा न मानी? **सो** हम देखते हैं कि वे अविश्वास के कारण प्रवेश न
कर सके।

४ **इसलिए** जबकि उसके विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक है, तो हमें डरना चाहिए;
२ ऐसा न हो कि तुममें से कोई व्यक्ति उससे रहित जान पड़े। **हमें** उन्हीं के समान सुसमाचार

3:16 – ***"उन सब ने नहीं"*** – दो व्यक्तियों को छोड़कर पूरा इस्त्राएल देश (गिनती 14:1,2,30)।

"मिस्त्र से निकले" – निर्ग. 14:29–31।

3:17 – पद 10; 1 कुरिं. 10:1–12; इफि. 5:6; कुलु. 3:6। लेखक इस सम्भावना की चेतावनी दे रहा है कि उसकी पीढ़ी के इब्री लोगों को भी परमेश्वर के क्रोध का साम्हना करना पड़ सकता है। उनके लिये यह आवश्यक था कि वे विश्वास करें और मसीह में परमेश्वर के प्रकाशन की आज्ञा मानें।

3:18,19 – पद 11, गिनती 14:11; व्यवस्था. 9:24; भजन 78:10–12,21,22; प्रेरित 7:51–53।

"आज्ञा न मानी" – इसका अनुवाद "विश्वास न किया" भी हो सकता है। यूहन्ना 3:16 की टिप्पणी देखें। अनाज्ञाकारिता और अविश्वास (पद 19) साथ साथ चलते हैं। वे मनुष्यों को परमेश्वर की आशीषों को पाने से दूर रखते हैं। इन्हीं कारणों से इस्त्राएल कनान में प्रवेश न कर सका। इसी प्रकार ये बातें लोगों को स्वर्ग में प्रवेश करने से रोकेंगी।

अध्याय 4

4:1–13 – इस खण्ड का विषय परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करना है – पद 1। मसीह में विश्वास करने वाले इसमें प्रवेश करते हैं, किंतु अविश्वास करने वाले इस्त्राएली न कर सके – पद 2,3। इस प्रकार का विश्राम इस्त्राएल के दिनों में उपलब्ध था और वे उसमें प्रवेश न कर सके और यह परमेश्वर का उद्देश्य था कि कुछ लोग इसमें प्रवेश करें, इसलिये उसने एक दूसरा दिन और समय निश्चित किया – पद 6–8।

सारांश : अभी एक विश्राम है, जिसमें प्रवेश किया जा सकता है – पद 9,10।

प्रोत्साहन : इसमें प्रवेश करने का भरसक प्रयत्न करें – पद 11, इसलिये कि परमेश्वर का वचन परख सकता है और अविश्वासी के प्रवेश करने पर सदैव के लिये रोक लगा सकता है – पद 12,13।

4:1 – ***"परमेश्वर के विश्राम"*** – का अर्थ है आत्मिक विश्राम जिसके विषय में यीशु ने मत्ती 11:28 में कहा था। यह मसीह में उद्धार को दिखाता है। कनान की भूमि उस विश्राम का मात्र चित्र है (यहोशू 1:18 की टिप्पणी देखें।)

"तुममें से कोई" – वह 'हममें से कोई' नहीं कहता है। वह यह नहीं कहता है कि विश्वासी को उद्धार का आश्वासन नहीं हो सकता है या उन्हें किसी रीति से भयभीत होना चाहिये कि वे कहीं खो न जाएँ। (देखें 2:15; लूका 12:32; रोमि. 8:15; 1 यूहन्ना 5:13)। लेखक स्वयं के विषय में भयभीत नहीं था, किंतु दूसरों के लिये। हम सभी लोगों ने सतर्क होना चाहिये। जब मसीही कहलाने वाले अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के चिन्ह दिखाते हैं, तब हमको उन्हें चेतावनी और प्रोत्साहन देने में सावधानी बरतनी चाहिये – 3:13; 1 तीमु. 5:20।

4:2 – इस्त्राएल को यह शुभ संदेश दिया गया था कि प्रतिज्ञा किया हुआ देश तुम्हारे साम्हने है; जाओ और इसे ले लो – व्यवस्था. 1:19–21। मनुष्यों को जिस सुसमाचार का प्रचार किया जा रहा

सुनाया गया है, परंतु सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ; क्योंकि सुननेवालों के मन
३ में विश्वास के साथ नहीं बैठा। **और** हम जिन्होंने विश्वास किया है, उस विश्राम में प्रवेश करते
हैं; जैसा उसने कहा कि मैंने अपने क्रोध में शपथ खाई, कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न
४ पाएंगे, यद्यपि जगत की उत्पत्ति के समय से उसके काम हो चुके थे। **क्योंकि** सातवें दिन के
विषय में उसने कहीं इस प्रकार कहा है कि परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सब कामों को निपटा
५ करके विश्राम किया। **वह** इस जगह फिर यह कहता है कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश न करने
६ पाएंगे। **तो** जब यह बात बाकी है कि कई और हैं जो उस विश्राम में प्रवेश करें, और जिन्हें
उसका सुसमाचार पहले सुनाया गया, उन्होंने आज्ञा न मानने के कारण उसमें प्रवेश न किया;
७ **तो फिर** वह किसी विशेष दिन को ठहराकर इतने दिन के बाद दाऊद की पुस्तक में उसे आज
का दिन कहता है, जैसे पहले कहा गया कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों
८ को कठोर न करो। **और** यदि यहोशू उन्हें विश्राम में प्रवेश करा लेता, तो उसके बाद दूसरे दिन
९ की चर्चा न होती। **इसलिए** जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का विश्राम बाकी
१० है। **क्योंकि** जिसने उसके विश्राम में प्रवेश किया है, उसने भी परमेश्वर के समान अपने कामों

है वह है : परमेश्वर आपको मसीह में विश्राम और उद्धार प्रदान करता है। उन्हें विश्वास के द्वारा ग्रहण करें। इस्राएली लोग भूमि को लेने तैयार नहीं थे, इस तरह उन्होंने अपने अविश्वास और अनाज्ञाकारिता को व्यक्त किया। आज लोग मसीह को ग्रहण करने से और उसमें परमेश्वर की आशीषों को लेने से इन्कार करते हैं और इस तरह अपने अविश्वास को दर्शाते हैं। सुसमाचार सुनना ही काफी नहीं है, उसके साथ विश्वास का होना जरूरी है, ऐसा विश्वास जो आज्ञाकारिता को उत्पन्न करता है।

4:3 – परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करने का मात्र तरीका मसीह पर विश्वास करना है – जिस विश्राम के विषय में परमेश्वर ने कहा था – भजन 95:11।

4:4,5 – लेखक उत्पत्ति 2:2 और भजन 95:11 में दिखाता है कि परमेश्वर का एक 'विश्राम' है और सृष्टि के बनाए जाने के पश्चात् से है। परमेश्वर का विश्राम उस आत्मिक विश्राम का चित्र है, जो वह विश्वासियों को देता है।

4:6–8 – यह परमेश्वर का उद्देश्य है कि लोग उसके विश्राम में प्रवेश करें। इस्त्राएल ने कनान देश में प्रवेश करने के बाद ऐसा नहीं किया (जो कि उस विश्राम का एक प्रकार था। यहोशू के द्वारा परमेश्वर ने उन्हें मानवीय शत्रुओं से आराम दिया। इसलिये परमेश्वर ने एक नये समय को नियुक्त किया और उसे "आज का दिन" कहा। "आज का दिन" – का अर्थ है यीशु मसीह के प्रथम बार आने के बाद से। देखें 3:7। न यहोशू, न मूसा, न व्यवस्था, न ही पूरी वाचा लोगों को वह विश्राम दे सकी जो परमेश्वर ने उनके लिये रखा था। इसलिये परमेश्वर ने एक दूसरे समय और दूसरी वाचा को नियुक्त किया।

4:9 – *"सब्त का विश्राम"* – यूनानी में 'सबैटिस्मौस' – सब्त 'मानना' या 'विश्राम'। सब्त के विषय में देखें निर्ग. 20:8–11। यहूदी सब्त को आने वाले संसार के चित्र के रूप में देखते थे – "इस्त्राएलियों ने कहा, ओ सम्पूर्ण विश्व के प्रभु, आने वाले विश्व का एक रूप दिखा। परमेश्वर ने उत्तर दिया, वह सब्त ही उसका प्रकार है (यह यहूदी ग्रंथ में लिखा है)। उन्होंने कहा कि भजन 92 सब्त का भजन था, क्योंकि यह आने वाले विश्व को दिखाता है, जो कि पूरा सब्त का दिन है। क्योंकि यह आने वाले विश्व की ओर संकेत करता है जो कि पूरा सब्त और अनंत जीवन के लिये विश्राम है।" यहाँ लगता है कि लेखक ऐसा ही सिखा रहा है।

4:10 – विश्वासी विश्राम में कब प्रवेश करते हैं? निश्चित रीति से अपने पार्थिव जीवन के बाद। तब वे अपने परिश्रम से परमेश्वर की उपस्थिति में विश्राम पाते हैं। तुलना करें, प्रका. 14:13; 2 कुरिं.

११ को समाप्त किया है। **इसलिए** हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ऐसा न हो
१२ कि कोई उनके समान आज्ञा न मानकर गिर पड़े। **क्योंकि** परमेश्वर का वचन जीवित, और
प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ
गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, आर पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों
१३ को जांचता है। **सृष्टि** की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है। और ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है,
जो उसकी दृष्टि से छिपा हो, परन्तु उसकी आखों के सामने सब वस्तुएं खुली और बेपरदा हैं
१४ जिसे हमें लेखा देना होगा। **इसलिए** जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर
गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु, तो आओं, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहे।

5:8; फिलि. 1:21–24)। किंतु कुछ अर्थों में, वे इसी विश्राम में प्रवेश करते हैं – मत्ती 11:28,29। यह विश्राम अंतिम सब्त का विश्राम नहीं, किंतु यह उसका पूर्वानुभव है। इसका अर्थ है, उद्धार के लिये मात्र मसीह पर भरोसा रखना और अपने कार्यों के आधार पर उद्धार प्राप्त करने का प्रयास न करना (रोमि. 4:4,5)। यह विश्राम यहीं अभी आरम्भ होता है, किंतु परमेश्वर की उपस्थिति अन्तिम सिद्ध विश्राम होगा। यदि हम यह विश्राम अभी इस पृथ्वी पर मसीह में नहीं आरंभ करते हैं, तो आने वाले विश्व के सब्त का विश्राम नहीं पाएंगे यह निश्चित है।

4:11 – मत्ती 11:12, लूका 13:24; 2 कुरिं. 13:5; 2 पतरस 1:10 से तुलना करें। हम स्वयं में, और दूसरे मसीहियों में अविश्वास और अनाज्ञाकारिता को देखने का प्रयत्न करें, और लक्ष्य की ओर विश्वास से मिल कर आगे बढ़ें। यह निश्चित जानकर कि हमारे पास मसीह के द्वारा प्रतिज्ञा किया हुआ विश्राम अभी है और हम उसके साथ जुड़े हुए आगे बढ़ रहे हैं, तो निस्संदेह हम उस अन्तिम विश्राम में प्रवेश करेंगे।

"प्रयत्न करें" – यहाँ कार्यों के आधार पर उद्धार नहीं सिखाया जा रहा है, लेकिन एक बने रहने वाले विश्वास पर (3:14)।

4:12,13 – लेखक कह रहा है, "अविश्वास का एक बुरा हृदय", एक हृदय "जो पाप के धोखे से कठोर हो गया है" (3:12,13), परमेश्वर से छिपा नहीं रह सकता। परमेश्वर का वचन भीतरी मनुष्य को प्रगट करता है और परमेश्वर जिसने अपना वचन दिया है, यह जानेगा कि किस को उस विश्राम में प्रवेश कराए और किसको बाहर रखे।

"जीवित और प्रबल" – 1 पतरस 1:23

"तलवार" – इफि. 6:17; यिर्म. 23:24 से तुलना करें।

"उसकी दृष्टि" – 2 इतिहास 16:9; भजन 14:2; 90:8; 139:1–12; यिर्म. 23:24; मत्ती 6:4;।

"लेखा देना" – मत्ती 12:36; प्रेरित. 17:31; रोमि. 14:12; प्रका. 22:12।

4:14 – जिस विषय का परिचय लेखक ने 2:17 में दिया था, उसकी ओर वह वापस लौटता है। प्रोत्साहन और चेतावनी देकर वह 10:18 तक अपने विषय को जारी रखता है।

"आओ... थामे रहे" – 3:1; 4:1। परमेश्वर हमें सत्य इसलिये देता है ताकि हम उसे लागू करें।

"हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है" – ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्येक धर्म में मनुष्य एक मध यस्थ (पुरोहित) की आवश्यकता महसूस करता है – एक ऐसा व्यक्ति जिसे वे अपनी तुलना में परमेश्वर के अधिक निकट समझते हैं। मसीह के आने से पहले लगभग 1400 वर्षों तक यहूदी मत में याजक (पुरोहित) और महायाजक (महपुरोहित) होते रहे थे। किंतु मसीह के माननेवालों के साम्हने दिखने वाला कोई याजक नहीं था। यहूदियों ने, जो मसीह पर विश्वास नहीं करते थे, सोचा और कहा होगा कि उन्हें पूरी पृथ्वी पर उनका कोई याजक नहीं है, इसलिये उनके लिये कोई महायाजक है ही नहीं।

१५ **क्योंकि** हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके;
१६ वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। **इसलिए** आओ, हम
अनुग्रह के सिंहासन के निकट साहस के साथ चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं,
जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।

इस पत्री का लेखक इसी गलत धारणा को सही करना चाहता है। मसीह के विश्वासियों के पास सर्वश्रेष्ठ सम्भावित महायाजक है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र। इसलिये कि वह पृथ्वी पर नहीं है और दिखायी नहीं देता, इसमें कोई हर्ज़ नहीं है – बल्कि इसके विपरीत है, क्योंकि वह परमेश्वर के समक्ष पृथ्वी के और किसी भी याजक से अच्छा काम कर सकता है। इस सत्य की अज्ञानता लोगों को प्रत्येक स्थान पर मानवीय मध्यस्थ के बंधन में रखती है। इसलिये लेखक यीशु मसीह को एक महायाजक के रूप में प्रगट करने के लिये और यह दिखाने के लिये कि वह इस कार्य के लिये कितना उपयुक्त है, अत्याधिक परिश्रम करता है।

4:15 – ***"हमारे साथ दुखी न हो सके"*** – यह एक कारण था कि अपने इस्त्राएली लोगों के लिये याजकपन को स्थापित करने के लिये परमेश्वर ने ऐसा किया। आदर्श याजक वह था जो लोगों की निर्बलताओं, दुखों, कठिनाईयों और आवश्यकताओं को जानता था और परमेश्वर के समक्ष उन्हें सहानुभूति के साथ प्रस्तुत कर सकता था – 5:1,2; निर्ग. 28:29 से तुलना करें। इस्त्राएल के याजक या संसार के किसी और मत के याजक से बढ़कर प्रभु यीशु मसीह यह कार्य कर सकता था।

"हमारी निर्बलता" – हममें से प्रत्येक में यह भरी पड़ी है। तुलना करें मत्ती 26:41; रोमि. 7:18; 8:26; 1 कुरिं. 2:3; 2 कुरिं. 12:5,9, गलतियों 5:17।

"परखा गया" – 2:18; मत्ती 4:1–10। इसलिये वह हमारे साथ सहानुभूति रख सकता है। यीशु ने सारी परीक्षाओं का साम्हना किया जिस में से पृथ्वी पर हर मनुष्य गुज़रता है। उसमें वास्तविक माँस और लोहू था और वह वास्तविक मानवी स्वभाव था – 2:14। उसने यह अनुभव से जाना कि किस तरह शैतान परमेश्वर के लोगों के विरोध में गरजता फिरता है। वह पाप की भयानक सामर्थ को जानता है जिसका उपयोग शैतान हमारे और हमारे विश्वास के विरोध में करता है। उसने शैतान के हर अग्निमय तीरों का साम्हना किया। फिर भी वह निष्पाप निकला।

"निष्पाप निकला" – इसके दो अर्थ हो सकते हैं, एक यह कि प्रलोभन में फँसा नहीं, परंतु प्रत्येक बार विजय के साथ परीक्षा से बाहर निकल आया; या यह कि उसके पास पापमय स्वभाव नहीं था। सच पूछें तो दोनों ही बातें सही हैं (2:17 की टिप्पणी देखें)। किंतु क्या यह सम्भव है कि जिस व्यक्ति के पास पापमय स्वभाव नहीं है, उसके साम्हने प्रलोभन हो? हाँ है, देखें, उत्पत्ति 3:1–6; 2 पतरस 2:4; यहूदा 6।

4:16 – ***"अनुग्रह का सिंहासन"*** – परमेश्वर का सिंहासन जहाँ वह बैठकर इस सृष्टि पर शासन करता है। हमारा महायाजक प्रभु यीशु उसके साथ राज करता है। 1:3 प्रका. 3:21। हमारे पापों के लिये बलिदान हो जाने के कारण, अब अनुग्रह का राज्य है। देखें रोमि. 5:21; 6:14। वह स्वयं हमसे कहता है कि हम अपनी जरूरतों के लिये उसके निकट आएँ – मत्ती 6:9–13; 7:7–10; यूहन्ना 16:23,24। हमारी सबसे बड़ी जरूरतें हैं दया और अनुग्रह। हमें चूकने, बुराई में गिरने से बचना है, और यदि हम चूक जाते हैं तो हमें क्षमा की आवश्यकता है। हमें वह बल चाहिए जो अनुग्रह हमें प्रदान करता है और जब हम अपनी कमजोरी में गिर जाते हैं तब हमें तरस और दया की जरूरत होती है। हम अनुग्रह के सिंहासन के पास आते हैं, हमें यह निश्चित जानना है कि कोई भी सामर्थ परमेश्वर को हमारी जरूरत की वस्तुओं को हमें देने से नहीं रोक सकती। हम जानते हैं कि हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिये वह तैयार है (फिलि. 4:19 तुलना करें)।

५ क्योंकि हर एक महायाजक मनुष्यों में से लिया जाता है, और मनुष्यों ही के लिए उन बातों के
विषय में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, ठहराया जाता है कि भेंट और पाप बलि चढ़ाया
२ करे। **वह** अज्ञानों, और भूले भटकों के साथ नर्मी से व्यवहार कर सकता है, इसलिए कि वह
३ आप भी निर्बलता से घिरा है। **और** इसी लिए उसे चाहिए कि जैसे लोगों के लिए, वैसे ही अपने
४ लिए भी पाप–बलि चढ़ाया करे। **यह** आदर का पद कोई अपने आप से नहीं लेता, जब तक
५ कि हारून के समान परमेश्वर की ओर से ठहराया न जाए। **वैसे** ही मसीह ने भी महायाजक
बनने का बड़प्पन अपने आप से नहीं लिया, परन्तु उसको परमेश्वर ने दिया, जिसने उससे कहा
६ था कि तू मेरा पुत्र है, आज मैं ही ने तुझे जन्म दिया है। **वह** दूसरी जगह में भी कहता है,
७ तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिए याजक है। **उसने** अपनी देह में रहने के दिनों में
ऊंचे शब्द से पुकार पुकारकर, और आंसू बहा बहाकर उससे जो उसको मृत्यु से बचा सकता

अध्याय 5

5:1–10 – लेखक महायाजक के विषय पर चर्चा जारी रखता है। 1–4 पदों में इस्त्राएलियों में अच्छे महायाजक की योग्यताओं का वर्णन है। 5–10 पद दिखाते हैं कि मसीह में ये सभी गुण है।

5:1 – ***"हर एक"*** – मूसा और मसीह के बीच के समय के इस्त्राएल की धार्मिक व्यवस्था की ओर संकेत है।

5:2 – ***"अज्ञानों और भूले भटकों"*** – लैव्य. 4:2; 5:17; गिनती 15:28। ऐसे लोगों से याजक नरमी से व्यवहार करता था, किंतु जो लोग जानबूझकर और उद्दण्डता के साथ पाप करते थे उनके लिये कठोर सजा थी – 2:2; गिनती 15:30–36 आदि।

5:3 – ***"अपने लिये पाप बलि चढ़ाया करे"*** – लैव्य. 16:3–6। दूसरे अन्य लोगों के समान इस्त्राएल में महायाजक निर्बल था और उसकी पाप में गिरने की प्रवृत्ति थी। प्रथम महायाजक हारून की निर्बलता को देखें, निर्ग. अध्याय 32।

"लोगों के लिये" – लैव्य. 16:15,16,32–34।

5:4 – निर्ग. 28:1।

5:5 – 1:5; भजन 2:7।

5:6 – पद 10; 6:20; 7:17। देखें भजन 110:4; भजन 110:5 में शब्द 'पुत्र' मसीह के लिये है और जिस प्रकार से हारून को परमेश्वर ने अब याजक ठहराया था, उसी प्रकार यीशु को भी ठहराया।

"मलिकिसिदक" – अध्याय 7 में नोट्स देखें।

5:7–9 – लेखक यह दिखाता है कि मसीह में महायाजक के दूसरे गुण भी थे – लोगों पर दया दिखाने की योग्यता। पृथ्वी पर उसके दुखों के फलस्वरूप उसकी यह योग्यता सिद्ध हो गयी थी। इस पत्री में अन्य किसी स्थान में वह दिखाता है कि किस तरह मसीह ने महायाजक की अन्य जिम्मेदारियों को पूरा किया – लोगों की ओर से परमेश्वर के सामने खड़े होना (वचन 1; 7:25; 9:24), और उनके पापों के लिये बलिदान चढ़ाना (7:27; 8:3; 9:11,12; 10:28; 10:10,14)।

5:7 – ***"प्रार्थनाएँ और बिनतियाँ"*** – अपने पृथ्वी पर रहने के दिनों में प्रभु यीशु एक प्रार्थना करने वाला जन था (मत्ती 14:23; लूका 5:16)। परंतु लेखक यहाँ एक निश्चित समय का उल्लेख करता है जब वह मृत्यु का साम्हना कर रहा था। संभावना है कि वह मसीह के गतसमनी बाग के अनुभव के विषय में कहता है (मत्ती 26:36–46; मरकुस 14:32–42; लूका 22:39–46)। यहाँ वह दुख से व्याकुल हुआ, उसका पसीना मानो लोहू की बून्दों की नाई टपक रहा था। ये सारी बातें परीक्षा के भयानक समय को और दैहिक कमजोरी के अनुभव को दर्शाती हैं (तुलना करें 2 कुरि. 13:4)।

"जो उसको मृत्यु से बचा सकता था" – कुछ आलोचकों को कहना है कि शैतान उसे

८ था, प्रार्थनाएं और बिनती की, और भक्तिभाव के कारण उसकी सुनी गई। **पुत्र** होने पर भी,
९ उसने दुख उठा–उठा कर आज्ञा माननी सीखी, **और** सिद्ध बनकर अपने सब आज्ञा माननेवालों
१० के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया। **और** उसे परमेश्वर की ओर से मलिकिसिदक

गतसमनी बाग में ही मार डालना चाहता था और यीशु परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि वह उसे इससे बचाए और क्रूस पर पापों के बलिदान के रूप में मरने की योग्यता प्रदान करे। परंतु इस प्रकार की शिक्षा बाईबिल में नहीं पायी जाती। कुछ लोग कहते हैं कि वह क्रूस की मृत्यु से बचाए जाने के लिये प्रार्थना कर रहा था। परंतु यह सच नहीं हो सकता क्योंकि वह अपने मृत्यु के उद्देश्य को जानता था (मत्ती 20:28; यूहन्ना 10:17,18)। और आगे लेखक यह भी कहता है कि 'उसकी सुनी गयी'। हम जानते हैं कि उसने तो क्रूस की मृत्यु सही। इसलिये उसकी प्रार्थना यह नहीं थी।

सम्भावित अर्थ यह है, कि यीशु इसलिये प्रार्थना कर रहा था कि मृत्यु के पश्चात् मृत्यु के दायरे से पिता उसे छुड़ा ले, ताकि मृत्यु उसके ऊपर अपना प्रभाव न बनाए रखे (प्रेरित 2:24)। दूसरे शब्दों में, पिता उसे मृतकों में से जीवित करे। तुलना करें भजन 22:15–21। (पद 19–20 पुनरुत्थान के लिये उसकी प्रार्थना प्रतीत होती है)।

"सुनी गई" – इसका अर्थ है उसकी प्रार्थना का उत्तर मिला। हम यह जानते हैं कि उसे क्रूस पर मरने से बचाया नहीं गया, जिसका अर्थ हुआ कि उसने क्रूस की मृत्यु से बचाव के लिये प्रार्थना नहीं की थी।

किंतु क्या यीशु को यह ज्ञान नहीं था कि परमेश्वर उसे जिला देगा? फिर उसके लिये प्रार्थना क्यों करना? उसे यह ज्ञान था कि परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह उसे जिला देगा (भजन 16:10)।

किंतु प्रार्थना का यह महत्वपूर्ण अंग है – परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पूरे होने के लिये उसके सामने गिड़गिड़ाना (तुलना करें यूहन्ना अध्याय 17; दानिय्येल. 10:2–19 आदि) और जब भयंकर अनुभव का प्याला उसके साम्हने आया (मत्ती 26:39; 2 कुरिं. 5:21), और वह अंधकार का समय जो उसके ऊपर आया (लूका 22:53), तब यीशु बड़ा व्याकुल होकर आँसुओं से रोया। और पिता ने उसकी सुन ली (मत्ती 28:6)। इसलिये कि यीशु में पिता के प्रति श्रद्धा थी।

5:8 – ***"आज्ञा माननी सीखी"*** – इसका अर्थ यह नहीं है कि वह कभी अनाज्ञाकारी था, और उसने धीरे धीरे आज्ञा माननी सीखी। अनाज्ञाकारिता परमेश्वर का विरोध करना है और वह कभी भी अनाज्ञाकारी नहीं था (यूहन्ना 4:34; 6:38; 8:29; फिलि. 2:6–8; 1 पतरस 2:21,22)। किंतु उसने अपने अनुभव से यह सीखा कि आज्ञाकारिता का अर्थ क्या है। यह भी कि आज्ञाकारिता में अपनी इच्छा को मारना, परीक्षाओं का साम्हना करना और दुख उठाना सभी सम्मिलित है। उस प्याले (मत्ती 26:39) को जो उसके साम्हने था, देखकर वह यह अनुभव कर सका कि आज्ञाकारिता आसान नहीं है।

5:9 – ***"सिद्ध बनकर"*** – इसका अर्थ यह नहीं है कि उसके जीवन में कुछ खोट थी, जिसके सुधार की आवश्यकता थी। 2:10 के सम्बंध में टिप्पणी देखें, परमेश्वर ने उसे हमारे महायाजक बनाने के लिये दुखों के अनुभव में से जाने दिया। इस प्रक्रिया में से जाए बिना वह हमारे लिये ऐसा सिद्ध नहीं बन सकता था जिसकी हमें आवश्यकता थी।

"आज्ञा मानी" – इस पद के प्रकाश में और दूसरे पद, जैसे यूहन्ना 3:36; प्रेरित. 5:32; 2 थिस्सल. 1:8), क्या हम यह कह सकते हैं कि जो व्यक्ति यीशु की आज्ञा मानने से इन्कार करता है, वह उद्धार प्राप्त कर सकता है? इसका अर्थ यह नहीं कि उद्धार कार्यों से मिलता है, किंतु पौलुस के अनुसार 'विश्वास' की आज्ञाकारिता से (रोमि. 1:5)। यह अनुग्रह है जो हमें ऐसा विश्वास और हृदय देता है, जिससे हम भरोसा कर सके (इफि. 2:8,9)। प्रेरित. 22:10 की टिप्पणी देखें।

११ की रीति पर महायाजक का पद मिला। **उसके** विषय में हमें बहुत सी बातें कहनी हैं, जिनका
१२ समझाना भी कठिन है, इसलिए कि तुम ऊंचा सुनने लगे हो। **समय** के विचार से तो तुम्हें गुरु
हो जाना चाहिए था, तौभी क्या यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की मूल
शिक्षा फिर से सिखाए? और ऐसे हो गए हो कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए।
१३ **दूध** पीनेवाले बच्चा धार्मिकता के वचन में अनुभवहीन होता है, क्योंकि वह बालक है।
१४ **परंतु** ठोस भोजन सयानों के लिए है, जिन्होंने अपने मनों को अभ्यास के द्वारा भले बुरे में भेद
करने के लिए तैयार किया हैं।

६ इसलिए आओ, मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर, हम सिद्धता की ओर आगे
२ बढ़ते जाएं, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने, **और** बपतिस्मों

5:11–14 – लेखक एक और प्रोत्साहन और चेतावनी आरम्भ करता है जो 6:12 में समाप्त होती है। यह वापस जाने के संबंध में चेतावनी है (6:6)। यह चेतावनी उसने इसलिये दी क्योंकि उसने इन यहूदियों में से आए हुए विश्वासियों के मसीही जीवन में उन्नति की कमी देखी।

5:12–14 – कई पासबान, प्रचारक, शिक्षक आज यही शिकायत करते हैं। कई मसीही विश्वासी हैं जो विश्वास में आने के कई वर्षो बाद भी केवल दूध ही माँगते हैं, और दूध ही लेते हैं, अर्थात् सुसमाचार की सरल सच्चाईयाँ। वे सुसमाचार की सभाओं में भीड़ लगाते हैं और बाईबिल अध्ययन से दूर रहते हैं। एक ही सच्चाई उन्हें बार बार सिखानी पड़ती है।

"धार्मिकता के वचन में अनुभवहीन" – आत्मिक जीवन में ऐसे शिशु धार्मिकता के विषय में शिक्षा सुन सकते हैं, किंतु अपने जीवन भर लागू करने के संबंध में उनके पास कोई अनुभव नहीं है।

"धार्मिकता के वचन" – शायद इसका अर्थ भी पद 12 का 'ठोस भोजन' है। 1 कुरिं. 2:6–10 में पौलुस ने ज्ञान के विषय में परिपक्व मसीहियों को सिखाया, इसका अर्थ भी वही है।

"ठोस भोजन" – का अर्थ है, 'यीशु एक महायाजक' जैसे विषय और दूसरे ऐसे सिद्धांतों के विषय शिक्षा। परमेश्वर की ऐसी सच्चाईयों को स्वीकार न करना अपरिपक्वता दिखाती है। देखें 1 कुरिं. 3:1–4।

5:14 – *"सयानों के लिये"* – जो लोग परमेश्वर के वचन के अभ्यास और आत्मिक समझ में दृढ़ हो गये हैं। प्रायः भले और बुरे में और सत्य एवं झूठ में भेद करना कठिन होता है। इसके लिये प्रशिक्षण (परमेश्वर के वचन की गहरी बातों के अर्थ को समझने में प्रयास) की आवश्यकता है। इसका अर्थ है निरंतर का प्रयास, अध्ययन और अनुशासन। जो लोग आत्मिक शिशु हैं, ये शायद वे लोग हैं, जिनके पास आत्मिक विकास के लिये थोड़ा समय और अवसर है या वे लोग जो प्रयास नहीं करना चाहते हैं।

अध्याय 6

6:1–2 – *"सिद्धता"* – "परिपक्वता" या "पूरा विकास" – 5:14; इफि. 4:13–15।

"आरंभ की बातों" – यह स्पष्ट नहीं कि किस आरंभ की बात की जा रही है। जो यहूदी मसीही हो गये थे, उन्हें वह लिख रहा है। यहूदी होने के नाते उन्होंने जिस पुराने नियम को प्राप्त किया था, शायद उसी की ओर संकेत है या नयी वाचा के काल में प्रेरितों द्वारा रखी गयी आरंभ की बातों के विषय में कहा जा रहा है। अर्थ संदेहस्पद है, क्योंकि यहाँ वर्णित छः बातों में से एक भी स्पष्ट रूप से मसीही नहीं है। सभी बातें पुरानी वाचा (नियम) में रखी नींव या आरंभ की बातों का एक भाग हो सकती हैं।

और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और अन्तिम न्याय की शिक्षारूपी नेव, फिर से न
३,४ डालें। **और** यदि परमेश्वर चाहे, तो हम यही करेंगे। **क्योंकि** जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है,

---

"मन फिराने और परमेश्वर पर विश्वास करने" – लेखक यहाँ "मसीह में विश्वास" की बात नहीं करता है।

"बपतिस्मों" – बहुवचन देखें। यदि वह यहाँ पर मसीही बपतिस्मे के विषय में कहता, तो एक वचन न होता? देखें इफि. 4:5। यहाँ पर *"धोया जाना"* एक सम्भावित और बेहतर अर्थ है। पुरानी वाचा में कई प्रकार का धोया जाना था – निर्ग. 29:4; 3:19–21; लैव्य. 11:25; 13:6; 14:8; 16:26; 17:16; गिनति 8:17; 19:18 आदि।

"हाथ रखने" – यह भी पुराने नियम में है – गिनती 8:10; 27:18; निर्ग. 29:10; लैव्य. 1:4।

"पुनरुत्थान" – (दानिय्येल 12:2; यशा. 26:19; भजन 16:10)।

"न्याय" – (भजन 9:8; 82:8; दानिय्येल 7:9,10; योएल 3:12)।

फिर भी वचन का ज्ञान रखने वाले कुछ लोग दूसरे दृष्टिकोण से देखते हैं। वे कहते हैं कि लेखक के मन में "परमेश्वर पर भरोसे" का अर्थ मसीह पर भरोसा भी हो सकता है। वे ये भी कहते हैं कि "बपतिस्मे" का अर्थ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का बपतिस्मा, मसीही बपतिस्मा, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा हो सकता है। हाथ रखना, आरंभिक कलीसिया में हाथ रखने की प्रथा हो सकती है (प्रेरित. 6:6; 8:16–18; 13:3 आदि)।

यदि यह सूची मसीही जीवन की नींव की बातों (आधारभूत बातें) का वर्णन करने के लिये उपयोग की जाए, तौभी यह एक विचित्र सूची होगी – इस सूची में मसीह के उत्पन्न होने, पाप के लिये बलिदान, पवित्र आत्मा के दिये जाने, मसीह की कलीसिया, मसीह के द्वारा अनंत जीवन के विषय कुछ भी नहीं है। संदेहस्पद होने के कारण यह नहीं कह सकते कि इसका अर्थ यह है या वह है।

6:4–6 – इन पदों का अर्थ लगाना सरल नहीं है। इनके अर्थ के विषय में बाईबिल का ज्ञान रखने वालों में आपस में मतभेद है। इन पदों के विषय भी चार प्रकार के मत हैं।

पहला, ये मसीह में विश्वासियों के संबंध में है, जो मसीह से मुकर कर अपने उद्धार को खो सकते हैं।

दूसरा, ये पद उन विश्वासियों की ओर संकेत करते हैं जो यदि गिर जाते हैं, अपना उद्धार नहीं खोते हैं। वे मात्र उन पुरस्कारों से वंचित रह जाएंगे जो उन्हें विश्वासयोग्य सेवा के कारण मिले होते।

तीसरी विचारधारा के लोग यह मानते हैं कि ये पद उन सच्चे विश्वासियों के विषय में है जिन्हें वापस जाने के वास्तविक खतरे के बारे में चेतावनी दी गयी थी, किंतु वे सचमुच में कभी विश्वास से नहीं मुकरेंगे।

चौथे मत वाले कहते हैं, कि ये वास्तविक विश्वासी नहीं है – जो बातें यहाँ लिखी गयी हैं वे विश्वासियों के संबंध में सत्य हैं, किंतु उन मसीहियों के संबंध में भी सही हो सकती हैं जो कभी भी सच्चे विश्वासी नहीं रहे हैं।

इस अध्ययन बाईबिल के लेखक का अपना मत यह है कि मसीह के सच्चे विश्वासी कभी विश्वास से मुकर नहीं जाते हैं, और न ही वे विश्वास त्याग से संबंधित कोई पाप करते हैं (2:1–4 से संबंधित टिप्पणी और 10:39; यूहन्ना 10:27; 1यूहन्ना 3:9; 5:18 देखें और तुलना करें यूहन्ना 5:24; 6:37–40; 10:27–29; 17:11,12; रोमि. 5:9,10; 8:28–39; फिलि. 1:6; 1पतरस 1:5)।

५ और जो स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं, **और**
६ परमेश्वर के उत्तम वचन का और आनेवाले युग की का स्वाद चख चुके हैं; **यदि** वे भटक जाएं,

---

हमें कभी भी इस तरह के रहस्यपूर्ण पदों (जैसा यहाँ इब्रानियों में पाया जाता है) का उपयोग स्पष्ट पदों को हटाने के लिये नहीं करना चाहिये। इब्रानियों के ये पद स्पष्ट रीति से यह नहीं कहते हैं कि मसीह में सच्चे विश्वासी विश्वास से मुकर जाते हैं और खो जाते हैं। सच पूछे तो इन पदों में मसीह में विश्वास की चर्चा तक भी नहीं की गयी है।

संपूर्ण नये नियम की शिक्षा के प्रकाश में तीसरा अर्थ सही लगता है। शैतान का यह प्रयास रहता है कि विश्वासी अपने विश्वास से मुकर जाये और इसका खतरा है भी। किन्तु खतरे की संभावना का अर्थ यह नहीं है कि ऐसा अवश्य होगा। यदि परमेश्वर का वचन, उसकी सम्हालने की योग्यता और उनके लिये मसीह की प्रार्थनाएँ यदि न होती तो यह संभव था (तुलना करें लूका 22:31,32; यूहन्ना 17:11,12; 1 पतरस 1:5)। किन्तु इन कारणों से वे मुकरने से बचे रहते हैं और जब खतरा आता है, मुकरने के विषय में दी गयी चितावनियों के कारण वे विश्वास को त्यागने से बचे रहते हैं।

किन्तु चौथा अर्थ संभवतः सही है। 4 से 6 पद उन लोगों के बारे में हो सकते हैं जो सत्य को जानते हैं, उसके द्वारा प्रभावित हुए हैं, परमेश्वर के राज्य के बहुत निकट आ चुके हैं, फिर भी उन्होंने उसमें प्रवेश नहीं किया है। जो लोग परमेश्वर की सन्तान नहीं हैं, किन्तु ऐसा ऐलान करते हैं, कुछ समय तक वे परमेश्वर की सन्तान दिखायी दे सकते हैं (तुलना 13:18–23; 24–23; 25:1–2; 2 कुरि. 11:14,15)। 4 से 6 पद में कही हुई बातें विश्वासियों के सम्बन्ध में सत्य हैं, किन्तु इस बात की भी संभावना है कि जो लोग विश्वासी नहीं हैं, किन्तु दिखायी देते हैं, उनके बारे में भी वे सत्य हैं।

6:4 – *"जिन्होंने ज्योति पाई"* – उन लोगों के विषय में कहा गया है, जो सत्य को जानते हैं। 10:26 से तुलना करें। मसीह की ज्योति उन पर चमकी है। किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्होंने ज्योति पर अपना भरोसा रखा या 'ज्योति की सन्तान' (यूहन्ना 12:35,36) बन गए। लोग बिना मन परिवर्तन और उद्धार के या यीशु पर बिना विश्वास किये सत्य को जानना जारी रख सकते हैं।

"स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं" – इसका यह अर्थ नहीं लगाना चाहिये कि उन्हें स्वर्गीय वरदान प्राप्त हो चुका है। हो सकता है कि लेखक ने यहाँ पर यूहन्ना 6:57 के 'खाने' शब्द की तुलना चखने से की होगी। गिनती 13:23,26 से तुलना करें। इस्त्राएली जिन्होंने कनान में अविश्वास के कारण कभी भी प्रवेश नहीं किया (3:19), कनान के फलों को चखा होगा।

"पवित्र आत्मा के भागी हो गये हैं" – लेखक यह नहीं कहता है कि उन्होंने 'पवित्र आत्मा पाया'। भागी होने का अर्थ यह हो सकता है और नहीं भी। पवित्र आत्मा का हिस्सेदार होना कई तरीकों से हो सकता है। झूठे बालाम को उसका अनुभव था (गिनती 24:2)। यहूदा इस्करियोती को था (मत्ती 10:1; यूहन्ना 6:70,71)। प्रेरित 8:9–24 में शिमोन इसका एक अच्छा उदाहरण हो सकता है। शायद यहाँ पर भागी होने का अर्थ है, सामर्थ के साथ पवित्रात्मा के कार्य के समय व्यक्ति का उपस्थित होना, आत्मा के द्वारा कायल किया जाना (यूहन्ना 16:8–11), पश्चाताप के स्थान पर, परमेश्वर के राज्य की सीमा तक आत्मा के द्वारा लाया जाना।

6:5 – *"वचन का स्वाद"* – तुलना करें मत्ती 13:20,21।

'आने वाले युग की सामर्थो' – मत्ती 7:22,23 से तुलना करें।

6:6 – *"यदि"* – शब्द यह नहीं सिखाता कि जिन लोगों का वर्णन 4,5 पद में है, वे विश्वास का त्याग करने वाले लोग हैं। किंतु निस्संदेह लेखक इसके खतरे के विषय में अवश्य सिखाता है।

तो उन्हें मन फिराव के लिए फिर नया बनाना असंभव है; क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र को अपने
७ लिए फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और खुले रूप में उस पर कलंक लगाते हैं। **क्योंकि** जो भूमि वर्षा
के पानी को जो उस पर बार बार पड़ता है, पी पीकर जिन लोगों के लिए वह जोती–बोई जाती
८ है, उनके काम का साग–पात उपजाती है, वह परमेश्वर से आशीष पाती है। **परंतु** यदि वह
झाड़ी और ऊंटकटारे उगाती है, तो निकम्मी और श्रापित होने पर है, और उसका अन्त जलाया
६ जाना है। **हे प्रियो,** यद्यपि हम ये बातें कहते हैं, तौभी तुम्हारे विषय में हम इससे अच्छी और
१० उद्धारवाली बातों का भरोसा करते हैं। **परमेश्वर** अन्यायी नहीं कि तुम्हारे काम, और उस प्रेम
को भूल जाए, जो तुमने उसके नाम के लिए इस रीति से दिखाया, कि पवित्र लोगों की सेवा

"भटक जाएं" – भटकना किसी पाप में पड़ जाने से अधिक भयंकर है। पतरस बुरी तरह से गिरा, किंतु पुनः उसने पश्चाताप किया और पुनः वापस आ गया (मत्ती 26:69–75)। यदि हम पाप में गिरते हैं, हमें क्षमा प्राप्त हो सकती है (1 यूहन्ना 1:9; 2:1; मत्ती 6:12; 12:31,32; नीति. 24:16 देखें)। "भटक जाएं" का अर्थ है विश्वास त्याग। इसका अर्थ पूरी तरह से सत्य को छोड़ देना भी है (2:1–4 की टिप्पणी देखें)। लेखक यह क्यों कहता है कि पश्चाताप के लिये उन्हें नया बनाना असम्भव है? वह यह क्यों नहीं कहता कि विश्वास का नवीनीकरण हो, यदि वह उन लोगों के विषय कह रहा है जिनके पास विश्वास है? पश्चाताप का अर्थ है, मन परिवर्तन, और यहाँ अर्थ यह हो सकता है, पहले इन इब्री लोगों ने यह सोचा कि यीशु उनका मसीह नहीं है। बाद में उन्होंने अपने मन को परिवर्तित किया और विश्वास किया कि वह है। पद 4,5 में उनके बारे में कहा गया है कि वे उससे वे पूरी तरह से मुकर गए, तो पुनः उन्हें मन परिवर्तन के स्थान पर कैसे लाया जा सकता है?

"फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं" – इससे हमें यह कारण मिल जाता है कि फिर उनके लिये कोई पश्चाताप क्यों नहीं है। वे मसीह का इन्कार करते हैं और उसके हत्यारों का पक्ष लेते हैं, जैसे यहूदा ने किया था। लेखक पिछड़ जाने से अधिक बुरी स्थिति की बात कर रहा है। पिछड़े हुए लोगों को पश्चाताप और विश्वास में लाना सम्भव है (2 कुरिं. 2:5–10; गलतियों 6:1; याकूब 4:8–10; भजन 32:3–5; 51:1–12; यिर्म. 3:12; यहेज. 18:30–32, होशे 14:1–4)।

'खुले रूप से कलंक' – यदि इब्री लोग मसीह को छोड़कर वापस यहूदी धर्म में जाते तो यह सब लोगों को मालूम हो जाता। यदि कोई व्यक्ति मसीह को ठुकराकर किसी दूसरे मत में जाता है, तो सभी लोग यह बात जान जाते हैं। इसका अर्थ मसीह और उसके सुसमाचार के लिये सार्वजनिक शर्म और इसका कारण लोग सच्चे परमेश्वर का अनादर भी करेंगे।

6:7,8 – इसके अर्थ को समझाने के लिये लेखक यह उदाहरण देता है। उत्पादन देने वाली भूमि विश्वासियों की ओर संकेत करती है (मत्ती 13:23 देखें)। फल न देने वाली भूमि अविश्वासियों और विश्वास त्यागने वालों को दर्शाती है। वे लोग परमेश्वर के लिये कोई फल नही उत्पन्न करते हैं (तुलना करें मत्ती 13:19–22; लूका 13:6–9 आदि)। दोनों प्रकार की भूमि पर वर्षा हो सकती है (यहाँ पर वर्षा परमेश्वर के सत्य और पवित्र आत्मा के प्रभाव को दिखाती है। किंतु परमेश्वर के लिये दोनों ही फल उत्पन्न नहीं करते हैं। एक मनुष्य के जीवन का उत्पादन (फल) यह प्रगट करता है कि वह मसीह में नहीं है। विश्वास त्याग के काँटे इस बात का चिन्ह हैं कि इन लोगों में मसीह कभी नहीं था (तुलना करें 1यूहन्ना 2:19; मत्ती 3:8; 7:16–20)।

6:9,10 – यह स्पष्ट है कि किसी भी प्रकार की अनावश्यक चितावनी जो उसके शब्दों द्वारा प्रगट हुयी होगी, उसे हटाने की वह चेष्टा करता है (तुलना करें 4:1; 8:15)। उसके "गिर जाने", "श्रापित होने" और "जलाए जाने" की सम्भावना से वह इस कारण इन्कार करता है क्योंकि उनके जीवन में आत्मिक फल प्रगट हुआ था। वे परमेश्वर से प्रेम रखते थे, परमेश्वर के लिये कार्य करते थे और

११ की, और कर भी रहे हो। **हम** बहुत चाहते हैं कि तुममें से हर एक व्यक्ति अन्त तक पूरी आशा
१२ के लिए ऐसा ही प्रयत्न करता रहे; **ताकि** तुम आलसी न हो जाओ; वरन् उनका अनुकरण करो
१३ जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं। **और** परमेश्वर ने इब्राहीम को
प्रतिज्ञा देते समय जबकि शपथ खाने के लिए किसी को अपने से बड़ा न पाया, तो अपनी ही
१४ शपथ खाकर कहा, कि **मैं** सचमुच तुझे बहुत आशीष दूंगा, और तेरी सन्तान को बढ़ाता
१५,१६ जाऊंगा। **और** इस रीति से उसने धीरज धरकर प्रतिज्ञा की हुई बात प्राप्त की। **मनुष्य** तो
अपने से किसी बड़े की शपथ खाया करते हैं, और उनके हर एक विवाद का फैसला शपथ
१७ से पक्का होता है। **इसलिए** जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर और भी साफ रीति से प्रगट
१८ करना चाहा, कि उसकी मनसा बदल नहीं सकती, तो शपथ को बीच में लाया; **ताकि** दो
बे–बदल बातों के द्वारा जिनके विषय में परमेश्वर का झूठा ठहरना अनहोना है, हमारा दृढ़ता
से ढाढ़स बन्ध जाए, जो शरण लेने को इसलिए दौड़े हैं कि उस आशा को जो सामने रखी
१९ हुई है, प्राप्त करें। **यह** आशा हमारे प्राण के लिए ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और परदे
२० के भीतर तक पहुंचता है, **जहां,** यीशु नें मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक

उन्होंने परमेश्वर के लोगों की सेवा की थी (10:32–34 देखें)। यदि मसीह के जीवन में इस प्रकार की बातें नहीं दिखायी देती तो उसके विश्वासी होने का क्या चिन्ह है? यदि उसके सम्बन्ध में 4,5 का सम्पूर्ण मत सही है और उसके जीवन में परमेश्वर के लिये कोई फल नहीं है, तो सब कुछ व्यर्थ है। वह आज ऐसी भूमि के समक्ष है, जो काँटे उगाती है।

"सेवा की" – मत्ती 25:34–40; 1 थिस्स. 1:3।

6:11,12 – वह चाहता था कि पद 4–8 में दी गयी चेतावनी से वे लोग सीखें। यदि वे मसीह में आगे बढ़ने के लिये तत्पर नहीं है तो उन सभी का अर्थ लगाने में हमारा और उनका कोई लाभ न होगा। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस पृथ्वी पर हमारे जीवन के अंत तक मसीह में विश्वास रखा जाए और उसकी सेवा की जाए। यदि हम ऐसा करें तो हम विश्वास त्यागने वाले नहीं होंगे और न ही हमें डरना चाहिये कि कहीं ऐसा हो।

"पूरा आशा" – 2 कुरिं. 13:5; 2 पतरस 1:10; 1 यूहन्ना 5:13।

"अंत तक" – 3:6,14; 10:36।

"आलसी" – मत्ती 25:26; नीति. 18:9; 24:30–34। आत्मिक बातों में आलस्य विनाशकारी है, जैसा दूसरे क्षेत्रों में भी होता है।

"धीरज" – 10:36; रोमि. 8:25; याकूब 1:4।

6:13–20 – अध्याय 5:11 में आरम्भ किये हुए भाग को लेखक यहाँ समाप्त करता है और हमें मसीह के महायाजक होने के विषय पर वापस लाता है (पद 20)। धीरज, विश्वास और परिश्रम के विषय में 11 और 12 पद में बताने के पश्चात् एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण देता है जिसके जीवन में यह बातें थीं। अंत में वह उन बातों को सभी विश्वासियों पर लागू करता है।

6:13–15 – अब्राहम सभी इब्रियों का पूर्वज था। रोमि 4:11,16 के अनुसार वह सभी विश्वास करनेवालों का पिता है। 11:18–19 में इब्राहिम के विश्वास का वर्णन है। विश्वास और धीरज का वह एक महान नमूना है।

"प्रतिज्ञा" – उत्पत्ति 22:16–18।

6:16–18 – यदि मनुष्य सत्य कहने के लिये शपथ लेता है तो उनसे और क्या अपेक्षा की जा सकती है? परमेश्वर से मनुष्य इससे अधिक और क्या अपेक्षा कर सकता है? शपथ के बाद मनुष्य झूठ बोल सकता है, किंतु परमेश्वर नहीं (तीतुस 1:2)। यदि कुछ करने की शपथ वह लेता है, वैसा वह करता है।

७ बनकर हमारे लिए अगुवे में के रूप में प्रवेश किया है।
इस मलिकिसिदक शालेम के राजा, और परम प्रधान परमेश्वर के याजक ने इब्राहीम से भेंट
२ करके उसे आशीष दी, जब वह (इब्राहीम) राजाओं को मारकर लौट रहा था। **इसी** को इब्राहीम
ने सब वस्तुओं का दसवां अंश भी दिया। यह पहले अपने नाम के अर्थ के अनुसार, "धार्मिकता
३ का राजा", और फिर "शालेम अर्थात् शान्ति का राजा" है, **जिसका** न पिता, न माता, न
वंशावली है, जिसके न दिनों का आदि है, और न जीवन का अन्त है; फिर भी परमेश्वर के पुत्र
४ के स्वरूप में ठहरये जाने के कारण वह निरंतर याजक बना रहता है। **अब** इस पर ध्यान करो
कि वह कैसा महान था, जिसको कुलपति इब्राहीम ने उसके अच्छे से अच्छे माल की लूट का

"दो बे–बदल बातें" – (पद 18) परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं और शपथ हैं। ये दोनों विश्वासियों के प्रोत्साहन के लिये हैं, विश्वासी शरण प्राप्त करने के लिये भागे हैं– पाप से, पाप के प्रति परमेश्वर के क्रोध से, पतित संसार से, और प्रत्येक उस बात से जो लोगों को अनंत उद्धार से अलग रखती हैं (गिनती 35:9–29 से तुलना करें)। उन्होंने परमेश्वर के अनंत उद्धार की प्रतिज्ञा को पकड़ लिया है। "शरण" – भजन 7:1; 18:2; 91:2 आदि।

6:19,20 – जिस आशा के विषय में बाईबिल बताती है, वह निर्बल और डाँवाडोल नहीं है। यह मज़बूत और सुरक्षित लंगर है। यह कभी न हिलने वाली है (रोमि. 5:2–5)। लंगर समुद्र में जहाज को एक स्थान पर स्थिर रखता है। आशा से विश्वासी एक स्थान पर स्थिर रहते हैं – 'परदे भीतर' (स्वर्ग जहाँ मसीह है) वहाँ विश्वास त्याग का कैसा तूफान भी क्यों न आ जाए, वे कभी भी नाश नहीं होंगे।

"परदा" – 10:19,20; मत्ती 27:51। मिलाप वाले तम्बू और मन्दिर दोनों में ही पवित्र और महापवित्र स्थान का विभाजन परदे के द्वारा किया गया था। महापवित्र स्थान स्वर्ग की ओर संकेत करता है। उन विश्वासियों ने वहाँ प्रवेश नहीं किया था, किंतु यीशु ने किया था। विश्वास और आशा के द्वारा वे सदा सदा के लिये उससे बँधे हुए थे। वह उनके साम्हने और उनके लिये वहाँ है – 4:44; 9:24; इफि. 2:6; कुलु. 3:3–14। वहाँ पर वह है और वही हमें वहाँ पहुँचाएगा – यूहन्ना 17:24।

अध्याय 7

7:1–3 – मलिकिसिदक मसीह का एक प्रकार है या उसके समान है जो राजा और याजक दोनों ही था 5:6,10; 6:2। पुराने नियम के इतिहास में मलिकिसिदक केवल एक बार प्रगट होता है – उत्पत्ति 14:19–20। नये नियम में इब्रानियों की पत्री में एक और बार उसके बारे में पढ़ने से पहले, भजन 110:4 में भी उसका वर्णन है। इसीलिये कुछ लोग यह सोचते हैं कि वह मसीह ही था। किंतु यदि मलिकिसिदक कनान में शालेम का एक राजा था, तो वह मसीह हो ही नहीं सकता। लेखक यहाँ कहता है कि वह परमेश्वर के पुत्र के सदृश्य था, न कि वह परमेश्वर का पुत्र था।

इसका अर्थ क्या है कि वह बिना पिता और माता के था? शायद इसका अर्थ है, कि बाईबिल में इन सब का कोई लेखा जोखा नहीं है। हम उसके माता–पिता, वंशावली, जन्म और मृत्यु के सम्बंध ा में कुछ नहीं जानते हैं। अचानक ही वह बाईबिल में प्रगट होता है और सदैव एक राजा याजक के रूप में मसीह की ओर संकेत करता है। मसीह धार्मिकता का राजा, शांति का राजा है जो कि अब्राहम से बढ़कर है, जिसकी उत्पत्ति नहीं और न ही अंत है (1:2,3,8,10–12), और वह सदा सदा के लिये याजक है (5:6)।

7:4–10 – लेखक मलिकिसिदक की महानता दिखाता है – वह अब्राहम से बढ़कर था (4–8), लेवी से उत्तम (19,20)। इसका अर्थ हुआ, पद में ऊँचा। यीशु का याजक का पद लेवी गोत्र के याजकपन से बढ़कर है, यही दिखाने का उसका उद्देश्य है।

५ दसवां अंश दिया। **लेवी** की सन्तान में से जो याजक का पद पाते हैं, उन्हें आज्ञा मिली है कि
लोगों, अर्थात् अपने भाइयों से, हालाँकि वे इब्राहीम ही की देह से जन्में थे, व्यवस्था के अनुसार
६ दसवां अशं लें। **परंतु** उसने, जो उनकी वंशावली में का भी न था, इब्राहीम से दसवां अंश लिया
७ और जिसे प्रतिज्ञाएं मिली थी उसे आशीष दी। **इसमें** संदेह नहीं, कि छोटा बड़े से आशीष पाता
८ है। यहां तो मरनहार मनुष्य दसवां अंश लेते हैं, परंतु वहां वही दसवां अंश लेता है, जिसकी
९ गवाही दी जाती है कि वह जीवित है। तो हम यह भी कह सकते हैं कि लेवी ने भी, जो दसंवा
१० लेता है, इब्राहीम में होकर दसवां अंश दिया। क्योंकि जिस समय मलिकिसिदक ने उसके
११ (लेवी) पिता से भेंट की, उस समय वह अपने पिता की देह में था। तब यदि लेवीय याजक
पद के द्वारा सिद्धता हो सकती है (जिसके सहारे से लोगों को व्यवस्था मिली थी) तो फिर
क्या आवश्यकता थी, कि दूसरा याजक मलिकिसिदक की रीति पर खड़ा हो, और हारून की
१२ रीति का न कहलाए? **क्योंकि** जब याजकपन बदला गया है, तो व्यवस्था का भी बदलना
१३ अवश्य है। **क्योंकि** जिसके विषय में ये बातें कही जाती हैं कि वह दूसरे गोत्र का है, जिसमें
१४ से किसी ने वेदी की सेवा नहीं की, **तो** स्पष्ट है, कि हमारा प्रभु यहूदा के गोत्र में से उदय
हुआ है और इस गोत्र के विषय में मूसा ने याजकपन की कुछ चर्चा नहीं की। यह बात और
१५ भी स्पष्ट हो जाती है, **क्योंकि** मलिकिसिदक के समान एक और ऐसा याजक उत्पन्न होनेवाला

7:5 – ***"लेवी"*** – इस्त्राएल का वह गोत्र है, जिसमें से पुराने नियम (वाचा) के सभी याजक (पुरोहित) आते हैं (गिनती 1:48–53; 3:5–10)।

"दशमांश" – लैव्य. 27:30, गिनती 18:24–28।

7:6 – जिसकी वंशावली क्या है, इसका कुछ ज्ञान नहीं है – मलिकिसिदक।

7:8 – *"यहाँ"* – जहाँ तक याजकों का प्रश्न है वे लेवी के वंश से हैं। *"वहाँ"* – मलिकिसिदक के विषय में।

7:9,10 – लेवी और उसके गोत्र के लोग जो अब्राहम से निकले, उन लोगों से भी मलिकिसिदक श्रेष्ठ था, वह सबसे ऊँचे पद पर था। मलिकिसिदक को अब्राहम के द्वारा दसवां अंश दिये जाने के 120 वर्ष बाद लेवी उत्पन्न हुआ था।

7:11–19 – इस अध्याय के शेष भाग, और (10:18 तक) लेखक यह दिखाता है कि याजक के रूप में मसीह लेवी के गोत्र के याजक से कितना अधिक बढ़कर है। यह भी कि पुराने समय का याजकपन पूर्ण रूप से अपूर्ण था। यदि इस पुराने याजकपन के द्वारा वह सब हासिल किया जा सकता था जो परमेश्वर चाहता था, तो मलिकिसिदक के क्रम के अनुसार एक दूसरे याजक की आवश्यकता नहीं पड़ती।

7:11 – ***'सिद्धता'*** – 10:4। लेवी के गोत्र का याजकपन मनुष्यों के पाप को मिटा न सका, हृदय को परिवर्तन कर न सका और स्वर्ग के लिये योग्य बना न सका।

7:12 – व्यवस्था और पुराने नियम के याजकपन एकदूसरे से बँधे हुए से हैं। एक की असफलता से सब कुछ असफल हो गया और पुरानी वाचा भी (अध्याय 8), और परमेश्वर ने इसे अलग हटाकर एक बेहतर और नयी सच्चाई को सामने रखा।

7:13,14 – ***"यहूदा"*** – यीशु यहूदा गोत्र में से था (मत्ती 1:1,3–6,16)। यदि यीशु चाहता तो पृथ्वी पर, उसके जीवन काल में मंदिर का प्रशासन न ही उसे पवित्र स्थान में प्रवेश करने देता, न वेदी के साम्हने सेवा का अवसर देता (8:4; गिनती 3:10)।

7:15–17 – लेखक कहता है कि याजकपन और व्यवस्था में एक परिवर्तन आया है – पद 12। यह स्पष्ट है कि यहूदा के गोत्र को परमेश्वर ने महायाजक के रूप में ठहराया, लेकिन इसका आधार

१६ था, **जो** शारीरिक आज्ञा की व्यवस्था के अनुसार नहीं, परंतु अविनाशी जीवन की सामर्थ के
१७ अनुसार नियुक्त हो, तो हमारा दावा और भी स्पष्टता से प्रगट हो गया। **क्योंकि** उसके विषय
१८ में यह गवाही दी गई है, कि तू मलिकिसिदक की रीति पर युगानुयुग याजक है। **क्योंकि,**
१९ पहली आज्ञा निर्बल और निष्फल होने के कारण लोप हो गई। (**इसलिए** कि व्यवस्था ने किसी
बात को सिद्धता प्रदान नहीं की) और उसके स्थान पर एक ऐसी उत्तम आशा रखी गई है,
२० जिसके द्वारा हम परमेश्वर के समीप जा सकते हैं। **और** इसलिए कि मसीह की नियुक्ति बिना
२१ शपथ नहीं हुई, (**क्योंकि** वे तो बिना शपथ याजक ठहराए गए, परंतु यह शपथ के साथ उसकी
ओर से नियुक्त किया गया जिसने उसके विषय में कहा ,कि प्रभु ने शपथ खाई, और वह उससे
२२ फिर न पछताएगा कि तू युगानुयुग याजक है) **यीशु** एक उत्तम वाचा का जामिन ठहरा।
२३ वे तो बहुत से याजक बनते आए, इसका कारण यह था कि मृत्यु उन्हें रहने नहीं देती थी।
२४,२५ परंतु यह युगानुयुग रहता है; इस कारण उसका याजकपन अटल है। इसी लिए जो उसके
द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके

नया था। पुराने नियम के याजक उनकी वंशावली के आधार पर नहीं चुने गए थे। यह आवश्यक था कि वे लेवी और हारून के वंशज हों। किंतु परमेश्वर ने मसीह को उसके न समाप्त होने वाले जीवन के कारण चुना, पद 16,24।

7:17 – लेखक यह सिखा रहा है कि 110:4 की भविष्यवाणी संपूर्ण पुरानी वाचा, याजकपन और व्यवस्था को अलग हटाकर रख देने के सम्बंध में है।

7:18,19 – ***"पहली आज्ञा"*** – यह कि हारून और लेवी के वंश के पुरुष ही याजक बन सकते हैं, यह विधान निर्बल और व्यर्थ था। इसलिये संपूर्ण पुरानी वाचा का याजकपन और पुरानी वाचा, जो इस पर निर्भर थी, लोगों को उद्धार देने में निर्बल और व्यर्थ थी। उनसे कोई भी और कुछ भी सिद्ध नहीं हुआ – पद 11। इससे हमें एक महत्वपूर्ण सत्य सीखना चाहिये। इसलिये कि पुराने नियम के याजकपन को जिस परमेश्वर ने स्थापित किया था, दुर्बल और व्यर्थ ठहरा, तो किसी भी धर्म में प्रचलित मानवीय याजकपन और अधिक निर्बल और व्यर्थ होगा। किंतु परमेश्वर ने ऐसा इसलिये किया ताकि हमें सिखाए कि यह दुर्बल और व्यर्थ है और यह कि हम देखें, कि मसीह ही बड़ा याजक है, उसकी हमें आवश्यकता है।

7:18–20 – *'एक उत्तम आशा'* – इसका संबंध मसीह के याजकपन से है। हमारे प्रति उसके और उसके कार्य के द्वारा हम परमेश्वर के निकट आ सकते हैं – 10:19–22।

7:20–22 – मसीह का याजकपन लेवी के वंशज के याजकपन से बेहतर है, इसका एक और कारण लेखक देता है। जब परमेश्वर ने मसीह को महायाजक ठहराया, उसने गम्भीरता से यह प्रतिज्ञा की कि वह याजक ठहरेगा। लेवी के वंश के याजकों के संदर्भ में ऐसी कोई बात नहीं थी (6:11)। वह यह चाहता था कि यहूदी और (हम) मसीह के याजकपन के विषय में पूरी रीति से आश्वस्त हों। मनुष्य के उद्धार के लिये याजकपन एक नींव के समान है। यदि मलिकिसिदक के क्रम में मसीह एक याजक नहीं है, तो कभी भी किसी व्यक्ति के लिये उद्धार सम्भव नहीं है।

"एक उत्तम वाचा" – (पद 22) इस विषय में 8:6–13 में हम पाते हैं।

7:23–25 – पुराने नियम के याजकों से बढ़कर मसीह के उत्तम याजक होने का यहाँ एक और कारण है। मसीह का याजक होना स्थायी है, उनका नहीं। इस्त्राएल में प्रत्येक महायाजक पद को दूसरे के लिये छोड़ा जाता था। हारून और 70 इसवी. के बीच (जब मंदिर ढा दिया गया) अस्सी से अधिक महायाजक हुए थे। यीशु जीवित है और सदा सदा के लिये अपने कार्य को जारी रखता है। परिणाम स्वरूप वह अपने लोगों को सदा के लिये बचाने के योग्य है।

२६ लिए बिनती करने को सर्वदा जीवित है। **इसलिए** ऐसा ही महायाजक हमारे योग्य था, जो
पवित्र, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों से अलग, और स्वर्ग से भी ऊंचा किया हुआ
२७ हो; **और** उन महायाजकों के समान उसे आवश्यक नहीं कि प्रतिदिन पहले अपने पापों और
फिर लोगों के पापों के लिए बलिदान चढ़ाए; क्योंकि उसने अपने आप को बलिदान चढ़ाकर
२८ उसे एक ही बार निपटा दिया। **क्योंकि** व्यवस्था तो निर्बल मनुष्यों को महायाजक नियुक्त
करती है; परन्तु उस शपथ का वचन जो व्यवस्था के बाद खाई गई, उस पुत्र को नियुक्त
करती है जो युगानुयुग के लिए सिद्ध किया गया है।

८ अब जो बातें हम कह रहे हैं, उनमें से सब से मुख्य बात यह है, कि हमारा ऐसा महायाजक
२ है, जो स्वर्ग पर महामहिमन के सिंहासन के दाहिने जा बैठा, **और** पवित्र स्थान और उस सच्चे

7:25 – ***"पूरा पूरा"*** – का अर्थ सदा के लिये भी हो सकता है। यीशु लोगों को पूर्ण रूप से और सदैव के लिये बचाता है।

'क्योंकि' – लोगों का मसीह के द्वारा पूरी तरह और सदा के लिये बचाया जाना लोगों के लिये उसकी मध्यस्थता से सम्बंधित है। देखें 9:24; 1यूहन्ना 2:1; रोमि. 8:34। मसीह यीशु के विश्वासी, स्वर्ग के उसके जीवन के द्वारा उद्धार की स्थिति में रखे जाते हैं – रोमि. 5:9,10। उसके लोगों के लिये उसकी प्रार्थनाएं कैसी थी, उसका उदाहरण उसने तब दिया जब वह इस पृथ्वी पर था – यूहन्ना 17, लूका 22:32। क्योंकि वह स्वर्ग में मध्यस्थी करनेवाला महायाजक है, वह सभी विश्वासियों को महिमा में लाने के योग्य है (2:10)। परीक्षा में उनका सहायक है (2:18; 4:16)। अंत तक विश्वास में बने रहने में सहायक है (3:6,14; 10:39)।

7:26–28 – लेखक इस बात का कारण देता है कि मसीह का याजकपन पुराने नियम के याजकपन से बेहतर क्यों है। मसीह स्वयं उन सभी याजकों से बढ़कर है। वह हमारी वास्तविक आवश्यकता की पूर्ति करता है, जबकि दूसरे ऐसा नहीं कर सकते थे। वह पूर्णतया पवित्र है, किंतु वे पापी थे और उन्हें अपने पापों के लिये भी बलिदान चढ़ाना पड़ता था। अपने लोगों के लिये उन्हें बार बार बलिदान चढ़ाना पड़ता था। अपने बलिदान के द्वारा उसने सदा सदा के लिये उनके पापों को हटा दिया। वे निर्बल लोग थे, वह परमेश्वर का पुत्र है।

"पापियों से अलग" – इस पृथ्वी पर वह पापियों के साथ रहा, भोजन किया, उन्हें स्वीकार किया, उनका मित्र कहलाया, उन्हें प्रेम दिखाया, उनके लिये पाप बन गया और मर गया – मत्ती 11:29; लूका 15:2; रोमि. 5:8; 2कुरिं. 5:21; 1पतरस 3:18। किंतु चरित्र में वह उनसे अलग था। उनकी बुराई उसे अशुद्ध न कर सकी। वह निष्पाप था।

"स्वर्ग से ऊँचा किया हुआ" – 1:3; 8:1। यह बात दूसरे महायाजकों के विषय में सही नहीं थी।

"बलिदान चढ़ाकर... निपटा दिया" – ऐसा किसी अन्य याजक के बारे में सत्य नहीं था – पद 19।

7:28 – ***"शपथ"*** – पद 20–22।

"व्यवस्था के बाद" – इसलिये कि व्यवस्था और पुराने नियम का याजकपन दुर्बल और प्रभावहीन रहा, परमेश्वर ने दूसरे तरीके को स्थापित किया।

अध्याय 8

8:1–13 – लेखक यह कहना जारी रखता है कि मसीह का याजकपन, पुराने नियम के याजकपन से बढ़कर है (सभी प्रकार के याजकपन से भी)। यह बेहतर इसलिये है क्योंकि स्वर्ग में परमेश्वर के सच्चे स्थान में वह याजक के रूप में सेवा करता है, किंतु पुराने नियम के सभी याजक पृथ्वी के मन्दिर में सेवा करते थे जो स्वर्गिक स्थान का एक छोटा सा चित्र है – पद 1–5। यीशु का

३ तम्बू का सेवक हुआ, जिसे किसी मनुष्य ने नहीं, वरन् प्रभु ने खड़ा किया था। **क्योंकि** हर एक
महायाजक भेंट, और बलिदान चढ़ाने के लिए ठहराया जाता है, इस कारण अवश्य है, कि
४ इसके पास भी कुछ चढ़ाने के लिए हो। **यदि** वह पृथ्वी पर होता, तो कभी याजक न होता,
५ इसलिए कि व्यवस्था के अनुसार भेंट चढ़ानेवाले तो हैं, **जो** स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप और
प्रतिबिम्ब की सेवा करते हैं, जैसे जब मूसा तम्बू बनाने पर था, तो उसे यह चेतावनी मिली कि
६ देख, जो नमूना तुझे पहाड़ पर दिखाया गया था, उसके अनुसार सब कुछ बनाना। **परंतु** उसको
उनकी सेवकाई से बढ़कर सेवा मिली, क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो
७ और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बान्धी गई है। **क्योंकि** यदि वह पहली वाचा निर्दोष होती, तो

याजकपन इसलिये भी श्रेष्ठ है क्योंकि यह पुरानी वाचा से बेहतर नयी वाचा से सम्बंधित है। पद 6–13।

8:1 – 1:3; 7:26 देखें।

8:2 – ***"सच्चा तम्बू"*** – 9:1,11; प्रका. 7:15; 11:19; 13;6; 14:15; 15:5,6; 16:1। निर्गमन के अध याय 25–30 में वर्णित पुराने नियम के तम्बू की तुलना में परमेश्वर का आत्मिक स्वर्गिक तम्बू (मन्दिर) झूठा नहीं था, किंतु यह "सत्य" कहलाया। पुरानी वाचा का तम्बू स्वर्गिक तम्बू का एक चित्र है – पद 5; 9:23,24; 10:1। निर्ग. 25:9 देखें। (ऐसा प्रतीत होगा कि यह स्वर्गिक तम्बू पृथ्वी तक फैला है। केवल महापवित्र स्थान जो कि परमेश्वर की उपस्थिति है, स्वर्ग में है। पीतल की वेदी – निर्ग. 27:1–8, जहाँ मसीह बलिदान हुआ था, कलवरी का एक चित्र है। स्वर्गिक तम्बू का हौद इस पृथ्वी पर है जहाँ मसीही विश्वासी अपने आप को धोते हैं – निर्ग. 30:17,21 से तुलना करें। पवित्र स्थान पृथ्वी पर मसीह की कलीसिया है – तुलना करें निर्ग. 25:31–40; प्रका. 1:12,13; 2:1। निर्ग. 30 अध्याय के अंत की टिप्पणी देखें।)

8:3 – देखिए 5:1 । ***"यह मनुष्य"*** – प्रभु यीशु। उसे स्वयं अपने आपको और अपने रक्त को देना था – 7:27; 9:14।

8:5 – पद 2। ***"उसे चेतावनी मिली"*** – निर्ग. 25:8,9,40; 26:30; 27:8। परमेश्वर ने चार बार यूँ ही आज्ञा नहीं दी थी। वह चाहता था कि पार्थिव तम्बू स्वर्गिक सत्यता सिखाए। वह नहीं चाहता था कि उसके द्वारा दिये गये तम्बू के नमूने से भिन्न तम्बू बनाए जाने के द्वारा सत्य को तोड़ा मरोड़ा जाए।

8:6 – लेखक मूसा द्वारा दी गई वाचा की तुलना यीशु द्वारा स्थापित वाचा से करता है। वह 10:18 तक यह करना जारी रखता है। निर्गमन 19:5,6,21–25 में पुरानी वाचा और यिर्म. 31:31–34; मत्ती 26:28 में नयी वाचा की टिप्पणी को देखें। 2 कुरिं. 3:6–18 में पुरानी और नयी वाचा के बीच तुलना देखें। मनुष्यों के उद्धार के लिये जो पुरानी वाचा न कर सकी वह नई वाचा कर सकी थी, क्योंकि नई वाचा पुरानी से बढ़कर है। एक वाचा, दो पक्षों के बीच की सहमति है या एक दूसरे से की गई प्रतिज्ञा। पुरानी वाचा में इस्त्राएलियों को परमेश्वर से यह प्रतिज्ञा मिली कि यदि वे उसकी व्यवस्था (नियम, निर्देश, आदि) का पालन करेंगे, तो उन्हें आशीष मिलेगी। नयी वाचा में परमेश्वर पापों की क्षमा, एक नया हृदय और परमेश्वर के ज्ञान की प्रतिज्ञा करता है जो अनंत जीवन देता है। मनुष्य को मन बदलना है, विश्वास करना है।

"उत्तम प्रतिज्ञाएँ" – पद 10–12। मसीह नयी वाचा का 'मध्यस्थ' है – 9:15; 12:24। उसी के द्वारा परमेश्वर ने नयी वाचा को स्थापित किया और उसी के द्वारा वह वाचा निरंतर प्रभावकारी बनती है।

8:7 – पुरानी वाचा की समस्या क्या थी? लोग पापी (भ्रष्ट) थे और परमेश्वर के नियमों का पालन

८ दूसरी के लिए अवसर न ढूंढ़ा जाता। **किन्तु** वह उन पर दोष लगाकर कहता है, कि प्रभु
कहता है, देखो, वे दिन आते हैं, कि मैं इस्राएल के घराने के साथ, और यहूदा के घराने के
९ साथ, नई वाचा बान्धूंगा। **यह** उस वाचा के समान न होगी, जो मैंने उनके पूर्वजों के साथ उस
समय बान्धी थी, जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिसर देश से निकाल लाया, क्योंकि वे मेरी
१० वाचा पर स्थिर न रहे, और मैंने उनकी सुधि न ली; प्रभु यही कहता है। **फिर** प्रभु कहता है
कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा, वह यह है, कि मैं अपनी
व्यवस्था को उनके मनों में डालूंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा, और मैं उनका परमेश्वर
११ ठहरूंगा, और वे मेरे लोग ठहरेगें। **और** हर एक अपने देशवाले को और अपने भाई को यह
१२ शिक्षा न देगा कि तुम प्रभु को पहचानो, क्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे। **क्योंकि**
१३ मैं उनके अधर्म के विषय में दयावन्त हूंगा, और उनके पापों को फिर स्मरण न करूंगा। **नई**
वाचा की स्थापना से उसने प्रथम वाचा को पुरानी ठहराई, और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो
जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है।

नहीं करना चाहते थे। इसलिये, आशीष के विपरीत उनके जीवन में श्राप आया – रोमि. 8:3; गल. 3:10–13।

8:8–12 – यिर्म. 31:31–34 की टिप्पणी देखें।

8:9 – *"मेरी वाचा में बने नहीं रहे"* – सारी समस्या तो यही थी। व्यवस्था की पुरानी वाचा लोगों को यह दिखा सकी कि उन्हें क्या करना चाहिये या कैसा बनना चाहिये, किंतु वह करने और वैसा बनने में उनकी सहायता न कर सकी। निर्गमन से लेकर मलाकी तक का पुराने नियम का इतिहास इस्त्राएल की विश्वासहीनता की कहानी है।

8:10 – यहाँ परमेश्वर अपने लोगों को नया और भिन्न बनाने की प्रतिज्ञा करता है, एक ऐसा नया मन और हृदय देने की प्रतिज्ञा करता है जो उसकी आज्ञाओं को मानेगा (तुलना करें यूहन्ना 1:12,13; 3:3–8; रोमि. 8:3,4; 2 कुरिं. 5:17; 1 पतरस 1:23)।

"मेरे लोग" – 2 कुरिं.6:16–18; 1 पतरस 2:9,10।

8:11 – *"सब मुझे जान लेंगे"* – मत्ती 11:27; यूहन्ना 14:7,17; 17:3,6; 2 कुरि. 4:6 आदि। नयी वाचा परमेश्वर के ज्ञान की प्रतिज्ञा करती है और वह देती है जिसकी प्रतिज्ञा की गई है। यह मात्र परमेश्वर के बारे में जानना नहीं है, किंतु सीधा अनुभव किया जानेवाला आत्मिक ज्ञान है। कोई और मार्ग, दर्शन शास्त्र, धार्मिक व्यवस्था यह ज्ञान नहीं दे सकती है। 1 कुरिं. 1:19–21; 2:7–16; कुलु. 2:8 की टिप्पणी देखें।

8:12 – यशा. 44:22; मीका 7:19; लूका 24:47; प्रेरित. 13:38,39; रोमि. 4:6–8, 8:33। 8–12 पदों में परमेश्वर के वचनों पर ध्यान दें – 'मैं ऐसा करूँगा' 'वैसा करूँगा'। पुरानी वाचा लोगों के शब्दों पर निर्भर थी, 'हम करेंगे' – निर्ग. 19:8; 24:7। इस कारणवश पुरानी वाचा निर्बल थी और असफल हो गई, और नयी वाचा सामर्थी है, एवं सफल होगी।

8:13 – *"पुरानी ठहराई"* – (रद्द कर दी गयी) उपयोग नहीं लाई जाने वाली, अस्वीकृत, मूसा द्वारा दी गई व्यवस्था का परमेश्वर की दृष्टि में अन्त आ पहुँचा था और इसके साथ ही पुराने याजकपन का भी अंत आ पहुँचा था।

"मिट जाना अनिवार्य है" – यरूशलेम में मंदिर था और याजक अपने कामों में लगे हुए थे। यह सब 70 इसवी में समाप्त हो गया। मत्ती 24:1,2 और लूका 19:41–44 देखें। उस समय से यरूशलेम में कोई यहूदी मंदिर नहीं है और न ही पुराने नियम की व्यवस्था के अनुसार याजकों का कार्य।

९ **उस** पहली वाचा में भी सेवा के नियम थे; और ऐसा पवित्र स्थान जो इस जगत का था,
२ **जिसमें** एक तम्बू बनाया गया, पहले तम्बू में दीवट, और मेज, और भेंट की रोटियां थीं; और
३ वह पवित्र स्थान कहलाता है। **और** दूसरे परदे के पीछे वह तम्बू था, जो परम पवित्र–स्थान
४ कहलाता है। **उसमें** सोने की धूपदानी, और चारों ओर से सोने से मढ़ा हुआ वाचा का संदूक
और इसमें मन्ना से भरा हुआ सोने का मर्तबान और हारून की छड़ी, जिसमें फूल निकल आ
५ गए थे और वाचा की पटियां थीं। **उसके** ऊपर दोनों तेजोमय करूब थे, जो प्रायश्चित के
ढक्कन पर छाया किए हुए थे। इन्हीं का एक एक करके वर्णन करने का अभी अवसर नहीं है।
६ **जब** ये वस्तुएं इस रीति से तैयार हो चुकीं, तब पहले तम्बू में तो याजक हर समय प्रवेश करके
७ सेवा के काम निभाते हैं। **परंतु** दूसरे में केवल महायाजक वर्ष भर में एक ही बार जाता है; और
बिना लोहू लिए नहीं जाता, जिसे वह अपने लिए और लोगों की भूल चूक के लिए चढावा

अध्याय 9

9:1 – इस अध्याय में लेखक पुराने नियमों के याजकपन और नए नियम के याजकपन की तुलना करता है। वह पुराने तम्बू और वहाँ याजक की सेवा के विषय में कहता है पद 1–7। वह यह भी बताता है कि सेवा और आराधना किस बात को दिखाती है – पद 8–10। फिर वह स्वर्गिक तम्बू में उसके प्रवेश और याजक के रूप में यीशु के बलिदान की बात कहता है – पद 11–28।

"पवित्र स्थान" – निर्ग. 25:8 देखें।

9:2 – निर्ग. 25:40 तम्बू और उसके निर्माण के बारे में है। स्थान से संबंधित वस्तुओं के महत्व को देखें। लैव्य. और गिनती के कई भाग इसकी सेवा से संबंधित हैं। इसको दिया गया स्थान यह दिखाता है कि परमेश्वर के सिखाने के कार्यक्रम में इसका क्या महत्व है। लगभग 40 अध्याय इस विषय पर दिये गये हैं। मनुष्य, पृथ्वी और स्वर्ग की सृष्टि के संबंध में मात्र दो अध्याय हैं (हालाँकि उत्पत्ति 1 और 2 के बाद बाईबिल में सृष्टि के संदर्भ में कई बार आया है। निर्ग. 30 के अंत में टिप्पणी देखें कि तम्बू को आत्मिक अभ्यास के लिये कैसे उपयोग किया जाए।

"दीवट" – निर्ग. 25:31–40।

"मेज" – निर्ग. 25:23–30।

9:3 – ***"दूसरा पर्दा"*** – निर्ग. 26:31–35। पहला पर्दा पवित्र स्थान को बाहरी आँगन से अलग करता है।

9:4 – "धूपदानी" – निर्ग. 30:1–10।

"संदूक" – निर्ग. 25:10–15।

"मन्ना" – निर्ग. 16:14–16,33।

"हारून की छड़" – गिनती 17:8–11।

"पटियाँ" – गिनती 25:16।

9:5 – ***"करूब"*** – निर्ग. 25:17–22।

"महिमा" – निर्ग. 40:34,35।

9:6 – ***"पहला तम्बू"*** – का अर्थ है पवित्र स्थान – पद 2।

"सेवा" – निर्ग. 27:21, 30:7,8; लैव्य. 24:5–9।

9:7 – ***"दूसरे तम्बू"*** – से अर्थ है अति पवित्र स्थान – पद 3। लैव्य. 16 अध्याय महायाजक के वर्ष में एक दिन के कार्य को बताता है। इन दोनों अध्यायों को भली–भाँति समझ लेने के लिये उनका एक साथ अध्ययन किया जाना चाहिए।

भूलचूक" – लेखक व्यवस्था के न जानने के कारण होने वाले या बिना जाने बूझे किये

८ चढ़ाता है। **इससे** पवित्र आत्मा यही दिखाता है, कि जब तक पहला तम्बू खड़ा है, तब तक
९ पवित्र स्थान का मार्ग प्रगट नहीं हुआ। **और** यह तम्बू तो वर्तमान समय के लिए एक दृष्टांत
है; जिसमें ऐसी भेंट और बलिदान चढ़ाए जाते हैं, जिनसे आराधना करनेवालों के विवेक सिद्ध
१० नहीं हो सकते। **इसलिए** कि वे केवल खाने पीने की वस्तुओं, और भांति भांति के स्नान
विधि के आधार पर शारीरिक नियम हैं, जो सुधार के समय तक के लिए नियुक्त किए गए हैं।
११ **परन्तु** जब मसीह आनेवाली अच्छी अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, तो उसने और

पापों के बारें में नहीं कहता है, किंतु ऐसे पाप जो परमेश्वर को न जानने (या उसकी व्यक्तिगत पहचान न होने) के कारण होते हैं, कहता है (तुलना करें इफिस. 4:17–19)। इस्त्राएल में प्रायश्चित के दिन लोगों के सभी प्रकार के पाप, अशुद्धता, दुष्टता, विद्रोह की क्षमा के लिये प्रावधान था – लैव्य. 16:21,22,30,34। (ध्यान दें इन शब्दों पर 'उनके सभी पाप')। लैव्य. 26 में महायाजक का कार्य गलतियों या बिना जान बूझकर किये गये पापों तक सीमित नहीं था। **9:8 –** ***"पवित्र आत्मा"*** – 3:7 (यूहन्ना 14:16,17)। इससे हमें लेखक के इस विश्वास को देखते हैं कि तम्बू और महायाजक के कार्य के संबंध में पवित्र आत्मा की प्रेरणा की भूमिका थी (2 तीमु. 3:16,17)। उसने इस्त्राएल में प्रायश्चित के दिन से क्या सिखाया? यह कि परमेश्वर की उपस्थिति में पहुँचने का मार्ग अब तक प्रगट नहीं किया गया है। जब तक तम्बू खड़ा था तब तक महायाजक के अलावा और कोई इस्राएली महा पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं कर सकता था। महा पवित्र स्थान तम्बू का वह स्थान था जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति थी। तम्बू यह सिखाता था कि परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के लिये रुकावटें क्या हैं, न कि कैसे उसमें प्रवेश किया जाए (नोट निर्ग. 27:9–19)।

इसका अर्थ यह नहीं है कि इस्त्राएल में कोई व्यक्ति, तम्बू को छोड़कर किसी और स्थान में परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश न कर सकता था। नहीं ऐसा नहीं है, तुलना करें उत्पत्ति 5:24; 6:9; 27:7; निर्ग. 33:14; भजन 51:11; 89:15। किंतु उस युग में परमेश्वर ने यह किस प्रकार संभव है, प्रगट नहीं किया था। अब उसने इसे प्रगट किया है। पापी लोग पूर्ण पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में इसलिये आ सकते हैं क्योंकि मसीह ने उनके पापों को उठाने के लिये बलिदान किया था – 10:19,20; 1 पतरस 3:18।

9:9 – पुराने नियम के बलिदान पाप के एहसास और दण्ड को हटाने के लिये पर्याप्त नहीं थे – 10:2। यदि विवेक शुद्ध नहीं है तो 'विश्वास के पूरे आश्वासन' (10:22) से परमेश्वर की उपस्थिति में जाना नहीं हो सकता है। विवेक पर प्रेरित. 23:1 में टिप्पणी देखें।

9:10 – भोजन आदि के संबंध में पुराने नियम (लैव्य. 11; निर्ग. 6:15,17; 28:7,8; निर्ग. 30:17–21; लैव्य 16:24) में आत्मिक सत्य के प्रकार और छाया थी। स्वयं में उनके कोई महत्व नहीं था, किंतु बाहरी रीति विधियाँ थीं। वह सब परमेश्वर ने सदा के लिये उन्हें नहीं दिया था – किंतु 'सुधार के समय' तक के लिये। यूनानी शब्द ***'सुधार'*** का अनुवाद का अर्थ है, सीधा किया जाना। पुराने नियम की गतिविधियाँ तब तक के लिये थीं, जब तक परमेश्वर एक नए प्रबंध ा (मसीह द्वारा स्थापित नई वाचा) का परिचय नहीं करता)।

9:11–28 – लेखक प्रभु यीशु के महायाजक होने के विषय को ले लेता है और दिखाता है कि जो कुछ पुरानी वाचा के महायाजक की गतिविधियों द्वारा नहीं किया जा सका वह सब किस तरह से मसीह याजक के द्वारा किया गया है।

9:11 – 8:2,5 देखें।

9:12 – ***"बकरों*** और ***बछड़ों"*** – लैव्य. 16:14,15,27।

भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात् इस सृष्टि का नहीं,
१२ **और** न ही बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, किन्तु अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार
१३ हमारे लिए अनन्त छुटकारा प्राप्त करके पवित्र स्थान में प्रवेश किया।। **क्योंकि** जब बकरों और
बैलों का लोहू और बछड़े की राख अपवित्र लोगों पर छिड़के जाने से शरीर की शुद्धता के लिए
१४ पवित्र करती है, तो मसीह का लोहू जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर
के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम

"अपने ही लोहू के द्वारा" – वचन 11–28 में, लोहू शब्द का 11 बार उपयोग किया गया है। बलिदान और मृत्यु शब्दों का कई बार उपयोग किया गया है और ये शब्द लोहू की ओर संकेत करते हैं। लेखक यह दर्शाता है कि मसीह का लोहू (बलिदान और मृत्यु) इतना महत्वपूर्ण है क्योंकि

वह विश्वासियों के विवेक को शुद्ध करता है (पद 14)।
यह उनके छुटकारे के लिये मुक्ति का दाम था (पद 16)।
यह क्षमा का मात्र एक ही आधार था (पद 22)।
वह स्वर्गिक वस्तुओं का शुद्ध करता था (पद 23)।
और वह पाप को मिटाता था (पद 26 और 28)।

"छुटकारा" – पद 15। भजन 78:35; मत्ती 20:28 की टिप्पणी देखें। यह देखें कि जो छुटकारा मसीह ने विश्वासियों के लिये हासिल किया है, वह सनातन है। तुलना करें 5:9; 10:14। इसका परिणाम स्थायी है। उसने उन्हें अपने लोहू की कीमत से खरीदा है और वे हमेशा के लिये उसके हैं – 1 पतरस 1:18,19; 1 कुरिं. 6:20; यूहन्ना 6:37; 17:6,11,12।

9:13 – ***"बछड़े"*** – गिनती अध्याय 19। अपराध, क्षमा या हृदय को पाप से शुद्ध कराने के संबंध में इस प्रकार से कुछ संबंध नहीं था और न ही किसी अन्य बलिदान का।

9:14 – ***"विवेक"*** – विवेक मनुष्य का वह भाग है जो उसके कार्यों को उचित अनुचित है, अच्छा बुरा ठहराता है। देखें, प्रेरित. 23:1; 24:16; रोमि. 2:15; 9:1; 1 कुरिं. 8:7; 10:28,29; 2 कुरिं. 1:12; 1 तीमु. 1:5' 3:9; 4:2; तीतुस 1:15। यदि हमारा विवेक पाप से अशुद्ध हो चुका है और अपराध चेतना है, तो इसे शुद्धता की आवश्यकता है। यह जानना आवश्यक है, कि पाप और अपराध हटा दिये गये हैं और अब कोई कारण नहीं रहा है कि परमेश्वर का न्याय और दण्ड आए।

यही मसीह का रक्त करता है। मसीह के बलिदान के विषय में हमारा ज्ञान और यह विश्वास कि उसका रक्त हमारे पापों को हटाने के लिये बहाया गया, हमारे विवेक को संतुष्ट करता है। मसीह का लोहू हमें इस ज्ञान से शुद्ध नहीं करता कि हम पापी हैं। 1 यूहन्ना 1:8; 1 तीमु. 1:5 आदि। किंतु आश्वासन देता है कि परमेश्वर का क्रोध हमसे हटा दिया गया है। परमेश्वर मसीह के बलिदान के सत्य का जो हमारे मनों में है, हमारे विवेक को सिखाने और शुद्ध करने के लिये करता है। प्रेरित 15:9 से तुलना करें।

एक जगाया हुआ विवेक जो दोषी ठहराता है और हमारे विरोध में, आक्रोश दिखाता है बड़ा कष्टदायी हो सकता है। वह शांति और विश्राम कैसे पा सकता है। केवल मसीह के बलिदान में। जब यह होता है तब हम स्वतंत्रता और आनंद से 'जीवित परमेश्वर की सेवा' कर सकते हैं। इस पद में त्रिएकत्व पर ध्यान करें – पुत्र ने पवित्र आत्मा के द्वारा पिता के प्रति अपने आपको चढ़ा दिया। त्रिएकत्व पर इन पदों पर टिप्पणी देखें मत्ती 3:16,17;

"निष्कलंक" – 4:15; 7:26; 1 पतरस 1:19; 2:22; 3:18।

9:15 – ***"इस कारणवश"*** – यह सत्य कि यीशु का रक्त विवेक को स्वच्छ करता है। पुराने नियम के बलिदान यह नहीं कर सकते थे – पद 9; 10:2।

१५ जीवित परमेश्वर की सेवा करो? **इसी** कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के
द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई है, बुलाए हुए लोग
१६ प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें। **क्योंकि** जहां वसीयतनामा तैयार किया गया
१७ वहां वसीयतनामा बनानेवाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। **क्योंकि** ऐसा वसीयतनामा
मरने पर ही अमल में आता है, और जब तक वसीयतनामा बनानेवाला जीवित रहता है, तब
१८ तक वह काम का नहीं होता। **इसी लिए** पहली वाचा भी बिना लोहू के नहीं बान्धी गई।
१९ **क्योंकि** जब मूसा सब लोगों को व्यवस्था की हर एक आज्ञा सुना चुका, तो उसने बछड़ों और
बकरों को लोहू लेकर, पानी और लाल ऊन, और जूफा के साथ, उस पुस्तक पर और सब
२० लोगों पर छिड़क दिया, **और** कहा कि यह उस वाचा का लोहू है, जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने
२१ तुम्हारे लिए दी है। **और** इसी रीति से उसने तम्बू और सेवा के सारे सामान पर लोहू छिड़का।
२२ **व्यवस्था** के अनुसार प्रायः सब वस्तुएं लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं; और बिना लोहू बहाए
२३ क्षमा नहीं होती। **इसलिए** अवश्य है कि स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप उनके द्वारा शुद्ध किए

"नयी वाचा का मध्यस्थ" – 8:6–13। यह वाचा यीशु के बहाए हुए लोहू के ऊपर आधारित है, सम्मिलित है, जिन्होंने उसके पृथ्वी पर आने से पहले पाप किया – मत्ती 26:28।

"छुटकारा" – "किसी के बदले में मुक्तिदाम" – पद 12; मत्ती 20:28।

"पहिली वाचा" – इस संसार के सभी युगों के लोगों के पापों के लिये मसीह मरा। इसमें वे लोग भी आते हैं, जिन्होंने उसके पृथ्वी पर आने से पहले पाप किया था, तुलना करें रोमि. 3:25।

"मीरास" – 1:2,14।

9:16 – ***"वसीयतनामा"*** – यूनानी का "वाचा" शब्द और "वसीयतनामा" एक ही है। हिन्दी भाषा में दोनों के लिये पूर्ण रूप से भिन्न शब्दों का उपयोग किया जाता है। पद 15 में लेखक 'मीरास' के विषय में कहता है जो विश्वासियों को प्राप्त होती है। अब वह कहता है कि जब तक वसीयतनामा तैयार करने वाले की मृत्यु नहीं हो जाती तब तक विरासत या मिरास नहीं मिल सकती।

9:18–20 – निर्ग. 24:1–8 देखें। लेखक पुरानी वाचा (निर्ग. 19:5) के विषय में कहता है कि वह एक वसीयत नामा हो। इस वाचा को परमेश्वर ने बनाया था और इस्त्राएल को मीरास की प्रतिज्ञा दी (व्यव. 12:8–10; यहोशू. 1:6; 23:4; भजन 105:11)। परंतु इस वाचा को पूरा करने के लिये परमेश्वर नहीं मरा, परंतु उसने नियुक्त किया कि पशु मारे जाएँ। जानवरों की मृत्यु परमेश्वर की वाचा को कैसे पूरी कर सकती है?

पशुओं का बलिदान मसीह की मृत्यु की तस्वीर थी। मूसा ने लोगों के शरीरों पर रक्त को छिड़का (निर्ग. 24:8), इस प्रकार मसीह ने अपना लोहू (आत्मिक रीति से विश्वासियों के हृदय और विवेक पर छिड़का है, 14:10–22)

9:22 – ***"लगभग सब कुछ"*** – सामान्यतया पशुओं का लोहू प्रायश्चित के लिये आवश्यक था। परंतु इसके कुछ अपवाद थे (लैव्य. 5:11–13; गिनति 31:22–24)।

"बिना लोहू बहाए पापों की क्षमा नहीं" – लैव्य. 17:11। परमेश्वर केवल मसीह द्वारा बहाए गए लोहू के आधार पर मनुष्यों को क्षमा प्रदान करता है – मत्ती 26:28; इफिस. 1:7।

9:23 – ***"वस्तुओं के प्रतिरूप"*** – 8:5; 10:1।

"स्वर्ग में की वस्तुएँ" – वे आत्मिक सच्चाईयाँ जिनका संबंध विश्वासियों के वर्तमान पवित्रीकरण, आराधना, और सेवा से है। 'उत्तम बलिदान' स्वयं मसीह और उसका रक्त।

9:24 – ***"प्रतिरूप"*** – स्वर्ग 'सच्चा' महा पवित्र स्थान है। तम्बू और मंदिर दोनों के पवित्र स्थान उसी नमूने पर बनाए गये थे। "सच्चा" – 8:2 की टिप्पणी देखें।

२४ जाएं; परंतु स्वर्ग में की वस्तुएं, आप इनसे उत्तम बलिदानों के द्वारा। **क्योंकि** मसीह ने उस
हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर
२५ स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिए अब परमेश्वर के सामने उपस्थित हो। **यह** नहीं कि
वह अपने आप को बार बार चढ़ाए, जैसा कि महायाजक प्रति वर्ष दूसरे का लोहू लिए पवित्र
२६ स्थान में प्रवेश किया करता है, **नहीं** तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उसको बार बार दुख
उठाना पड़ता; लेकिन अब युग के अन्त में वह एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान
२७ के द्वारा पाप को दूर कर दे। **जैसे** मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का
२८ होना नियुक्त है, **वैसे** ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिए एक बार बलिदान
हुआ और जो लोग उसकी प्रतीक्षा करते हैं, उनके उद्धार के लिए दूसरी बार बिना पाप के
दिखाई देगा।

"हमारे लिये" – 7:25; 1 तीमु. 2:5; 1 यूहन्ना 2:1।

9:25 – लैव्य. 16:14,15,34।

9:26 – *"एक बार प्रगट हुआ"* – 12:28; 10:10,14। दो हजार वर्ष पूर्व मसीह द्वारा एक ही बार किया गया बलिदान मनुष्यों के पापों की क्षमा के लिये जरूरी था। उसने स्वयं का बलिदान देकर जगत के पापों को उठा लिया (यूहन्ना 1:29)। इस बलिदान का फिर दोहराया जाना अनावश्यक और अविचारणीय है।

9:27 – *"एक बार मरना"* – बाईबिल यह नहीं बताती कि लोग पृथ्वी पर बार बार जन्म लेते और बार बार मरते हैं। केवल एक ही शारीरिक मृत्यु है और एक ही शारीरिक जन्म। अय्यूब 11:12; यूहन्ना 9:3 में पुर्नजन्म के विषय में देखें। पुनर्जन्म के द्वारा व्यक्ति उद्धार या मुक्ति पा सकता है यह कल्पना सरासर अनावश्यक और गलत है। मसीह ने अपने बलिदान के द्वारा हम सभों के पापों को उठा लिया। और उस पर विश्वास करने के द्वारा हम पापों की क्षमा, नया जन्म और उद्धार पा सकते हैं।

"न्याय का होना" – मत्ती 10:15; प्रे. का. 17:31। उस एक मृत्यु के द्वारा मरने के बाद, हम इस संसार में दोबारा जन्म नहीं लेते, परंतु उसके बाद न्याय होगा।

9:28 – *"बहुतों के अपराध"* – यशा. 53:11; मत्ती 26:28। तुलना करें यूहन्ना 1:29; 2 कुरि. 5:14; यूहन्ना 3:16; 1 यूहन्ना 2:2।

"दूसरी बार" – यूहन्ना 14:3। इस पद में उद्धार का अर्थ है, विश्वासियों का अंतिम उद्धार जिसे भविष्य की प्रक्रिया के रूप में देखा गया है। यह ऐसी मीरास के समान है जो यहाँ के पश्चात मिलने वाली है – 1:14, रोमि. 8:23,24; 1 पतरस 1:4,5। वे पाप की उपस्थिति, उसके परिणाम से बचाए जाएंगे और आत्मा, प्राण और देह का उद्धार प्राप्त करेंगे।

"जो लोग उसकी प्रतीक्षा करते हैं" – मत्ती 24:42–51। इसका अर्थ है आशा के साथ उसके आने की बाट जोहना। तुलना करें तीतुस 2:13। प्रायश्चित के दिन (लैव्य. अध्याय 16) महायाजक के महा पवित्र स्थान में प्रवेश करने के बाद लोग उसके वापस आने की बाहर प्रतीक्षा करते थे। यीशु ने महा पवित्र स्थान में, स्वर्ग में प्रवेश किया है। बाहर पृथ्वी पर लोग उसके आने की बाट जोह रहे हैं। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच का समय एक बड़े प्रायश्चित के दिन के समान है।

अध्याय 10

10:1 – *"छाया"* – 8:2,5; 9:23,24। व्यवस्था, तम्बू और भेंट और नियम ये "आने वाली अच्छी बातों

१० क्योंकि व्यवस्था जिसमें आनेवाली अच्छी वस्तुओं की छाया है, परंतु उनका असली स्वरूप नहीं,
२ इसलिए **उन** एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष चढ़ाए जाते हैं, पास आने
३ वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकती, **नहीं** तो उनका चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता? इसलिए
कि जब सेवा करनेवाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उनका विवेक उन्हें पापी न ठहराता।
४ **परन्तु** उनके द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है। **क्योंकि** अनहोना है, कि बैलों और

के" मात्र प्रतीक, और चित्र थे – मसीहियों के सनातन उद्धार के।

"सिद्ध नहीं कर सकती" – पद 14; 2:10; 5:9; 11:40; 12:23। पशुओं का बलिदान किसी को परमेश्वर की उपस्थिति के लिये सिद्ध नहीं बना सकता (7:11,19)। पशुओं के बलिदान के महत्व के लिये देखें लैव्य. 1:2।

10:2,3 – 9:9 देखें। ***"विवेक उन्हें पापी नहीं ठहराता"*** – या सम्भवतः 'पाप की चेतना'। लेखक का अर्थ है कि लोगों ने यदि वास्तव में सोचा था कि उनके पाप पूरी तरह से उनके बलिदानों के द्वारा हटा लिये गये थे, तो उनका विवेक शुद्ध हो गया होगा। उन्होंने यह भी महसूस किया होता कि उनके हृदय को अब उन्हें दोषी ठहराने की आवश्यकता नहीं। देखें 9:14।

10:4 – ***"अनहोना है"*** – यह अनहोना क्यों था? पशु मनुष्यों का स्थान नहीं ले सकते थे और न ही उनके स्थान पर मर सकते थे। वे मात्र एक प्रतीक थे। उनके (पशुओं) अज्ञानी होने के कारण, और अनिच्छा से वध किये जाने के कारण, वह दण्ड जो मनुष्य के ऊपर उसके अपराध के कारण था, उसे वे उठा नही सकते थे। यह दण्ड आत्मिक मृत्यु, और परमेश्वर से अलगाव था। देखें मत्ती 25:41; 2 थिस्सल. 1:9; प्रका. 20:14।

मनुष्य भी दूसरे मनुष्यों के लिये पाप बलि नहीं बन सकता था। हर मनुष्य पापी है और वह केवल अपने ही पापों के लिये मरेगा, किसी और के पापों के लिये नहीं। यदि कोई निष्पाप व्यक्ति होता, और यदि वह पापों के लिये बलिदान हो सकता, तो वह किसी और एक ही व्यक्ति के बदले में मर सकता, सारी मानवजाति के लिये नहीं। फिर परमेश्वर को भी इस बात के लिये सहमत होना पड़ता, और वह सहमत नहीं हुआ। प्रायश्चित के विषय में और दूसरे के ऐवज़ में मरने के लिये हमें निम्नलिखित बातों को समझना होगा।

जो भी पाप हम करते हैं, वह परमेश्वर के विरोध में करते हैं – भजन 51:4। जो पाप मनुष्य दूसरे लोगों के, या स्वयं के, या संसार के विरोध में करता है, वह पाप वास्तव में परमेश्वर के विरोध में ही है, क्योंकि सभी मनुष्य और सारी सृष्टि उसकी संपत्ति है। यदि परमेश्वर मनुष्यों को क्षमा करना चाहे, तो उसे उनके पापों के परिणाम को सहने के लिये तैयार होना होगा। और जो कुछ उन्होंने किया है उसके लिये कीमत चुकानी होगी। पाप, दण्ड या बलिदान के लिये पुकारता है (देखें गिनती 31:1–3; व्यव. 32:41,43; यशा. 34:8; 47:3; रोमि. 12:19)। कौन इस दण्ड को सहेगा या सह सकता है? उसके तोड़े हुए नियमों के कारण परमेश्वर को जिस न्यायोचित दण्ड की माँग है, वह कौन सह सकता है? क्या मनुष्य के लिये बलि किया गया पशु इस दण्ड को सह सकता है? यह असम्भव है, तो कौन कर सकता है? अपराधी लोग या परमेश्वर स्वयं? केवल वही एक निष्पाप मनुष्य के रूप में आकर लोगों के अपराधों के लिये स्वयं को बलिदान के रूप में देकर उनके दण्ड को सह सकता और उनके दण्ड को ले सकता था। यही उसने किया।

प्रायश्चित और क्षमा दुख पर आधारित है, बलि किये हुए पशु के दुख पर नहीं। हमारे अपने दुखों पर नहीं **किंतु परमेश्वर के।**

10:5–7 – भजन 40:6–8 की टिप्पणी देखे। ख्रीष्ट पूर्व तीसरी शताब्दी का पुराना नियम जो यूनानी भाषा में अनुवाद किया गया, उससे यह पद उद्धृत किया गया है। यहाँ लेखक पुराने नियम से यह सिखा रहा है कि पशु बलिदान के सम्बंध में उसकी शिक्षा सही है।

५ बकरों का लोहू पापों को दूर करे। **इसी** कारण वह जगत में आते समय कहता है कि बलिदान और
६ भेंट तू ने न चाही, लेकिन मेरे लिए एक देह तैयार की। **होम–बलियों** और पाप–बलियों से
७ तू प्रसन्न नहीं हुआ। **तब** मैंने कहा, 'देख, मैं आ गया हूं, (पवित्र वचन में मेरे विषय में लिखा
८ हुआ है) ताकि हे परमेश्वर, तेरी इच्छा पूरी करूं।' **वह** कहता है, कि न तू ने बलिदान और
भेंट और होम–बलियों और पाप–बलियों को चाहा, और न उनसे प्रसन्न हुआ; यद्यपि ये बलिदान तो
९ व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते हैं। **वह** यह भी कहता है, कि देख, मैं आ गया हूं, ताकि तेरी
१० इच्छा पूरी करूं; वह पहले को हटा देता है, ताकि दूसरे को स्थापित करे। **उसी** इच्छा से हम
११ यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं। **और**
हर एक याजक खड़े होकर प्रतिदिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो
१२ पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते; बार बार चढ़ाता है। **परंतु** यह व्यक्ति तो पापों के बदले

"बलिदान और भेंट" – परमेश्वर पशु बलि नहीं चाहता था किंतु उनसे बेहतर पद 7 का *"मैं"* मसीह की ओर संकेत करता है। "तेरी इच्छा, हे पिता", का यहाँ अर्थ है कि मनुष्यों के पापों के लिये मात्र मसीह ही को बलिदान होना था।

10:7 – मत्ती 26:39 आदि।

10:8 – ***"व्यवस्था के अनुसार चढ़ाये जाते थे"*** – परमेश्वर ने उन्हें इसलिये नियुक्त किया ताकि वे मसीह के बलिदान का एक प्रतीक ठहरे। किंतु उसे यह ज्ञात था कि उसकी अपेक्षा को वे पूर्ण नहीं कर सकते थे।

10:9 – ***"ताकि दूसरे को स्थापित करे"*** – उसका अर्थ पुरानी और नयी वाचा से था। उसने पहली को अलग कर दिया है – 8:7,13।

10:10 – ***"पवित्र किए गए हैं"*** – परमेश्वर की इच्छा को पूरी तरह से पूरा करने और विश्वासियों के लिये मरने के द्वारा, मसीह ने उन्हें पवित्र बना दिया है। इसका अर्थ यह हुआ कि उसने उन्हें अलग कर दिया है और उन्हें परमेश्वर के लोग होने के लिये समर्पित कर दिया है – 1 पतरस 2:9। पवित्र किए जाने के संबंध में लैव्य. 20:7 और यूहन्ना 17:17–19 की टिप्पणी देखें। पद 10 में यहाँ शब्द मसीहियों के पवित्रता के जीवन के विषय में नहीं बताता है। वह हमें 12:10–16 में मिलता है। विश्वासी मसीह में अभी पवित्र हैं, वे पवित्र बनाए जा रहे हैं (12:10)। अंत में वे पूरी तरह से पवित्र बना दिए जाएंगे (कुलु. 1:22)। यह मात्र कुछ विश्वासियों के विषय में नहीं, किंतु सभी विश्वासियों के संबंध में सत्य है।

10:11 – ***"खड़े होकर"*** – तम्बू या मंदिर में कोई कुर्सी नहीं थी। यह पद शायद यह दिखाता है कि वहाँ याजकों का कार्य कभी समाप्त नहीं होता है।

"पापों को कभी दूर नहीं कर सकते" – पद 4।

10:12 – ***"बार बार"*** – पद 10, 14, 9:12, 25–28। उसका एक बलिदान सदा के लिये है, क्योंकि पाप के लिये अब और कोई बलिदान शेष नहीं है।

'जा बैठा' – यह संकेत है कि उसका बलि चढ़ाए जाने का कार्य सदा के लिये है। देखें यूहन्ना 19:30। किसी भी याजक द्वारा अब किया गया कार्य किसी भी प्रकार से किसी व्यक्ति के उद्धार के लिये आवश्यक नहीं है।

"दाहिने" – लेखक हमें वापस वहीं लाता है जहाँ उसने आरंभ किया था – 1:3।

10:13 – ***"चौकी"*** – (पटरा)– 1:13, भजन 110:1। स्वर्गिक पिता ने अभी तक मसीह के शत्रुओं को पैरों की चौकी (पटरा) नहीं बनाया है। मसीह अभी तक इस प्रतीक्षा में है। ऐसा होगा – प्रका. 11:15–18,

१३ एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा, **और** उसी समय से वह
१४ इसकी प्रतीक्षा कर रहा है कि उसके बैरी उसके पांवों के नीचे की चौकी बनें। **क्योंकि** उसने
१५ एक ही बलिदान के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिए सिध्द कर दिया है। **पवित्र**
१६ आत्मा भी हमें यही गवाही देता है; क्योंकि उसने पहले कहा था, **कि** प्रभु कहता है कि जो वाचा
मैं उन दिनों के बाद उनसे बान्धूंगा वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्थाओं को उनके हृदय पर

10:14 – बहुत वर्षों तक याजकों द्वारा प्रति वर्ष बड़ी संख्या में पशु चढ़ाए जाते थे, किंतु उनके द्वारा एक पाप भी नहीं मिटाया जा सकता था। एक व्यक्ति भी 'सिद्ध' नहीं किया गया, किंतु मसीह के एक बलिदान से सदा सदा के लिये सभी विश्वासी उसमें सिद्ध बनाए गए। इसका अर्थ क्या है? यूनानी शब्द का एक अर्थ है "पूरा किया जाना"। इसका अर्थ यह होगा कि उसके लोगों के लिये मसीह का बलिदान बिना किसी कमी उन्हें पूरी तरह से बचाता है (तुलना करें 7:25)।

परमेश्वर के समक्ष खड़े रहने के लिये उसका मात्र एक बलिदान ही आधार है। उसके द्वारा प्रत्येक रुकावट हटा दी गयी है और सिद्ध मेलमिलाप किया जा चुका है।

उनके पापों को ख्रीस्त ने पूरी तरह से ले लिया है – उनके विरोध में अब एक भी नहीं रहा (रोमि. 4:8; 8:33)।

उसने उन्हें परमेश्वर के साथ एक सिद्ध संबंध दिया है (रोमि. 8:1,15; 2 कुरिं. 5:18,19)।

उसने उनके विवेक को पूर्ण रीति से शुद्ध कर दिया है (9:14)।

उसने परमेश्वर की उपस्थिति में उन्हें अभी प्रवेश करने और सदा तक रहने के लिये तैयार किया है (पद 22; रोमि. 5:2; इफि. 2:18)।

23 पदों तक यह स्पष्ट है कि सिद्ध किये जाने का अर्थ यही है। इस पृथ्वी पर कोई भी विश्वासी इस अर्थ में सिद्ध नहीं है, कि उसमें कोई निर्बलता, पाप, या त्रुटि न हो – याकूब 3:2; 1 यूहन्ना 1:8। हर प्रकार से कोई विश्वासी सिद्ध नहीं है – फिलि. 3:12 देखें, जहाँ वही शब्द उपयोग में लाया गया है। इस प्रकार की सिद्धता भविष्य में ही संभव है – 1 यूहन्ना 3:2।

"सर्वदा" – 5:9, 9:12। उसके लोगों के लिये मसीह का बलिदान व्यक्तिगत और सामूहिक रीति से स्थायी और अपरिवर्तनीय है।

"जो पवित्र किये गए हैं" – पद 10। यदि ऐसा कहें कि जो पवित्र किये जा रहे हैं (जैसा कुछ अनुवादक कहते हैं) तब तो इसका संकेत उस प्रक्रिया की ओर हुआ, जो मसीह में सभी विश्वासियों के साथ घट रही है और यही सच्चे विश्वासी की परिभाषा भी होगी। तुलना करें 12:5–10; मत्ती 5:6,8; रोमि. 6:15–22; 8:12–14; 1 यूहन्ना 3:3,6,9,10। कुछ समर्पित और पवित्रता प्राप्त किये हुए नहीं, किंतु मसीह में सभी विश्वासी सिद्ध किए जा चुके हैं, शुद्ध किये जा चुके हैं और शुद्ध हो रहे हैं।

10:15 – *"पवित्र आत्मा भी हमें यही गवाही देता है"* – 3:7; 9:8; 2 तीमु. 3:16; 2 पतरस 1:21। यहाँ वह यह प्रगट करता है कि मसीह में विश्वासियों के 'सिद्ध बनाए जाने' का अर्थ क्या है।

10:16 – यिर्म. 31:34 देखें। मसीह जिस सिद्धता में विश्वासियों को लाता है, उसमें यह तत्व बहुत महत्वपूर्ण है। परमेश्वर उसकी व्यवस्था की आत्मिक समझ और उसकी आज्ञाकारिता के लिये भीतरी इच्छा एवं योग्यता देता है। यह मसीह के पास थी (पद 7) और यीशु के बलिदान के आधार पर यह परमेश्वर अपने लोगों को देता है। यह नयी वाचा का एक आवश्यक चिन्ह है। सचमुच यदि देखें, तो इसके अतिरिक्त सच्चे विश्वासी होने का क्या चिन्ह है? यूहन्ना 14:15,23, रोमि. 8:3,4; 1 कुरिं. 2:16; 2 कुरिं. 3:3। यदि एक व्यक्ति के पास परमेश्वर के लिये हृदय नहीं, है, सेवा के लिये मन नहीं है, वचन में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में दिलचस्पी नहीं है, तो यह कहने का क्या अर्थ

१७ लिखूंगा और मैं उनके मन में डालूंगा। (**फिर** वह यह कहता है, कि) मैं उनके पापों को, और
१८ उनके अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूंगा। **जब** इनकी क्षमा हो गई है, तो फिर
१९ पाप का बलिदान नहीं रहा। **इसलिए** हे भाइयो, जबकि हमें यीशु के लोहू के द्वारा उस नये
२० और जीवित मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस हो गया है, **जो** उसने परदे अर्थात्

है कि मेरे अपराध क्षमा हुए हो गए हैं? क्या नयी वाचा की आशीषों को बाँटा जा सकता है? क्या हम एक आशीष को स्वीकार करेंगे और अन्य को नहीं करेंगे?

10:17 – लेखक का कथन कि मसीह ने विश्वासियों को "सिद्ध" बनाया है, इसे समझने में यह सहायक होता है। उसने उन्हें पापों की पूरी क्षमा दी है। यहाँ भी अर्थ वही है जो पौलुस का है, जब वह कहता है कि विश्वासियों को धर्मी ठहराया गया है। रोमि. 3:24; 4:6–8; 8:33 देखें। मसीह ने परमेश्वर के सामने विश्वासियों का स्थान सिद्ध रखा है।

10:18 – ***"तो फिर पाप का बलिदान न रहा"*** – कार्य पूरी रीति से सदा सदा के लिये किया जा चुका है। मसीह के एक बलिदान के स्थान पर और कोई दूसरे बलिदान की या मसीह के बलिदान के दोहराये जाने की आवश्यकता न रही।

10:19 – ***"इसलिये"*** – 2:1; 3:1; 4:1,14; 6:1। लेखक ने मसीह के महायाजक और नयी वाचा के मध्यस्थ के रूप में शिक्षा को यहाँ समाप्त किया है। अब वह सभी विश्वासियों को प्रोत्साहन देता है कि वे इस सच्चाई के अनुरूप व्यवहार करें। इसके द्वारा वह यह भी दिखाता है कि परमेश्वर की दृष्टि में उनका स्थान कितना "सिद्ध" है।

"प्रवेश करने का साहस" – वर्ष में एक बार महायाजक को महापवित्र स्थान में प्रवेश करने का अवसर प्राप्त होता था (9:7)। किसी इस्त्राएली को साहस नहीं था कि वह प्रवेश करे। अब विश्वासी किसी भी समय कभी भी महापवित्र स्थान में प्रवेश कर सकता है – स्वर्गिक पिता की उपस्थिति में। परमेश्वर ने सभी विश्वासियों को याजक (13:15,16; 1 पतरा 2:9; प्रका. 1:6) बनाया है और परमेश्वर की उपस्थिति में वे अपने महायाजक यीशु के पीछे आ सकते हैं। यह इसीलिये सम्भव है क्योंकि यीशु के लोहू के द्वारा पाप के लिये प्रायश्चित किया जा चुका है और वह रुकावट जो परमेश्वर और मनुष्य के बीच थी, हटायी जा चुकी है।

10:20 – पुरानी वाचा जो लोगों को दूर ही रखती थी, उससे मसीह के इस मार्ग की तुलना की गयी है – निर्ग. 19:21–25; 27:9–19। यह एक जीवित राह है जो मसीह के जीवन पर निर्भर है और जो विश्वास करते हैं उन्हें नया आत्मिक जीवन देती है – यूहन्ना 14:6; 3:1–4। यह पुरानी वाचा की मृतक रीति, विधियों और प्रथाओं के विरुद्ध है।

"पर्दा" – मिलाप वाले तम्बू और मंदिर दोनों ही में एक पर्दा था जिससे पवित्र और महापवित्र स्थान विभाजित था (9:3)। यह दिखाता था कि परमेश्वर की उपस्थिति तक पहुँचने वाला पथ अभी तक प्रगट नहीं हुआ था – 9:8। पर्दा मसीह को दिखाता है। जब मसीह शरीर में आकर हमारे पापों के लिये मरा (10:5) और हमारे अपराधों के लिये मरा, तब मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट गया था – मत्ती 27:50,51। दूसरे शब्दों में, उसकी मृत्यु ने पिता की उपस्थिति में जाने का मार्ग प्रगट किया। महापवित्र स्थान में हम मसीह की क्रूसित देह के कारण जो हमारे लिये तोड़ी गयी, प्रवेश कर सकते हैं।

10:21 – ***"हमारा ऐसा महान महायाजक है"*** – 2:17; 4:14।

"परमेश्वर का घर" – 3:6

10:22 – ***"समीप"*** – देखें 4:16, इफि. 2:18; 3:12; रोमि. 5:1,2; याकूब 4:8। हमें जिस प्रकार से

२१ अपने शरीर में से होकर, हमारे लिए खोल दिया है। **इसलिए** कि हमारा ऐसा महान याजक
२२ है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है, **तो** आओ; हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ,
और विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से
२३ धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं। **और** अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहे;
२४ क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है वह सच्चा है। **और** प्रेम, और भले कामों में प्रोत्साहन के लिए
२५ एक दूसरे का ध्यान रखा करें, **और** एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों
की रीति है, परंतु एक दूसरे को समझाते रहें, और जैसे जैसे उस दिन को निकट आते देखो,

---

उसके समीप आना चाहिये उसके संबंध में चार बातें सम्मिलित हैं।

'सच्चे मन' – लूका 12:1; मत्ती 5:8; यूहन्ना 4:23,24; 1कुरिं. 5:8।

"पूरे विश्वास के साथ" – 11:1,6 तुलना करें 3:12। सभी विश्वासियों के पास यह होना चाहिये और हो भी सकता है। हमें यह आश्वासन होना चाहिये कि मसीह ने हमारे पापों को ले लिया है और यह कि वह हमारा महायाजक है। उसके मार्ग हमें वापस परमेश्वर के पास लाते हैं; यह भी कि वह हमें अपनी उपस्थिति में ग्रहण करता है। इस संबंध में हमारे मन में संदेह और डर नहीं रहना चाहिये। इब्रानियों की पत्री में लेखक ने जो सत्य रखा है, उसे समझने पर हमारा आश्वासन बढ़ सकता है। तुलना करें 3:14; 6:19; 1 यूहन्ना 5:13; 2 तीमु. 1:12; यूहन्ना 14:1; लूका 12:32।

"विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर" – यह हृदय का छिड़काव भीतरी अनुभव को दिखाता है। देखें 9:13,14। यीशु का लोहू विश्वासी के हृदय पर छिड़का जाता है। इसका अर्थ है कि मसीह के बलिदान की समझ और इस बलिदान पर विश्वास, हृदय को धोता है।

"देह को शुद्ध जल से धुलवाकर" – इस पूरी पत्री में लेखक ने पुरानी वाचा की आराधना की भौतिक वस्तुओं के माध्यम से आत्मिक सत्यता बताने का प्रयास किया है। यहाँ पर भी वह ऐसा कर रहा है। हमारे कुछ विद्वान सोचते हैं कि वह मसीही बपतिस्मे की ओर संकेत कर रहा था। देखें निर्ग. 30:17–21; लैव्य. 8:6; 16:4। यह याजकों के शरीर का धोया जाना विश्वासियों की देह के अभी धोए जाने को दिखाती है। वे नयी वाचा के अंतर्गत याजक हैं – पद 19। जैसे उनके हृदयों की शुद्धता आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार से उनका बाहरी व्यवहार भी शुद्ध होता है। नया और जीवित मार्ग जो परमेश्वर ने विश्वासियों के लिये खोल दिया है, वह किसी सीमा तक पुराने नियम में दिया गया है। निर्ग. के 30 अध्याय में तम्बू के आत्मिक उपयोग के विषय में दी गयी टिप्पणी देखें।

10:23 – ***"वह सच्चा है"*** – 6:16–18; तीतुस 1:2; 1 यूह. 5:9,10। संदेह और अविश्वास द्वारा हमें प्रभु का अनादर नहीं करना चाहिये – हमारे संदेह और अविश्वास का अर्थ यह होगा कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य नहीं है।

10:24 – पद 19–23 में उसने परमेश्वर ओर विश्वासियों के बीच के संबंध के विषय में कहा है। अब वह दिखाता है कि एक दूसरे के प्रति उनकी जिम्मेदारियाँ हैं। देखें 3:12, रोमि. 14:19; 15:2। 1 कुरि. 9:24; कुलु. 3:15।

"ध्यान रखा करें" – हमें ऐसे तरीकों के विषय सोचना चाहिये जिनके द्वारा हम दूसरों को प्रोत्साहित कर सकें कि वे उसकी सेवा बेहतर रीति से करें।

10:25 – दूसरे विश्वासी जहाँ मिलते हैं वहाँ जाना रोकना नहीं चाहिये। प्रत्येक को संगति की आवश्यकता है और प्रत्येक ने दूसरों को मिलते रहने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।

'उस दिन को निकट आते देखो' – का अर्थ क्या है? शायद यह यरूशलेम और मंदिर के नाश की ओर संकेत है (मत्ती 24:1–3; लूका 19:41,44; 21:20–24)। यह नाश का समय उसके लिखे जाने के निकट का था या इसका अर्थ मसीह का दोबारा आना था (9:28; मत्ती 24:33), या दोनों

२६ वैसे वैसे और भी अधिक यह किया करें। **क्योंकि** सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि
२७ हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिए फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। **हां,** दण्ड
की एक भयानक प्रतीक्षा और आग का जलना बाकी है, जो विरोधियों को भस्म कर देगा।
२८ **जबकि** मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार

की ओर ही संकेत था। प्रथम शताब्दी के समय के विश्वासी इन दोनों घटनाओं को एक ही समय में घटते हुए देखने की अपेक्षा कर रहे थे।

10:26–31 – विश्वास त्याग के संबंध में यह चौथी चितौनी है। 2:1–4 की टिप्पणी देखें। यह मसीह के संबंध में परमेश्वर द्वारा प्रगट महिमान्वित सत्य के प्रकाश के विरोध में जानबूझ कर अपराध करना है।

10:26 – *"पाप करते रहें"* – यह हृदय और जीवन की एक स्थिर स्थिति को बताता है, न कि किसी एक पाप या पाप की क्रिया को। लेखक यह नहीं कहता है कि वह सोचता है कि उन लोगों में से कोई इस स्थिति में गिरेगा। वह "यदि" शब्द का उपयोग करता है (तुलना 6:6)। पद 39 में वह कहता है कि उसे निश्चय है कि विश्वासी जिन्हें वह लिख रहा है वे इस अपराध के दोषी न ठहरेंगे (तुलना करें 1 यूहन्ना 3:9,10)।

ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक किसी एक अपराध के विषय में कह रहा है। विश्वासी लोग किये हुए पापों की क्षमा प्राप्त कर सकते हैं – 1 यूहन्ना 1:9; 2:1; 5:16)। किंतु एक पाप है, जिसके लिये कोई क्षमा नहीं है। यहाँ यह पाप मसीह और उसके बलिदान का तिरस्कार करना है, उसके रक्त में नयी वाचा से मुड़ना और पवित्र आत्मा की वाणी की आज्ञा नहीं मानना है (पद 29)। ऐसे लोग भी हैं जो यह सिखाते हैं कि विश्वासी किसी पाप में गिरने के कारण सदा के लिये नाश हो सकते हैं। नये नियम की यह शिक्षा नहीं है – मत्ती 6:12, 1 यूह. 1:9; 2:1।

"सच्चाई की पहिचान" – वह यह नहीं कहता कि "पश्चाताप और विश्वास के बाद"। हमें सच्चाई का ज्ञान हो सकता है और फिर भी पश्चाताप और विश्वास को ठुकरा सकते हैं। इस पद में लेखक जिस पाप की बात करता है, वह इस बात को सतत अस्वीकार करना हो सकता है। आगे उपयोग हुए शब्दों से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

"कोई बलिदान बाकी नहीं" – यदि कोई मसीह के बलिदान को अस्वीकार करता है, तो उसने अपने आपको क्षमा के मार्ग से अलग कर लिया है। यदि ऐसा व्यक्ति सोचता है कि वह पुनः पुरानी वाचा के बलिदान को चढ़ा सकता है (या और कोई बलिदान) और यह भी कि परमेश्वर उसे ग्रहण करेगा, तो वह एक बड़ी गलती कर रहा है।

10:27 – *"दण्ड"* – 9:27; प्रेरित. 17:31; प्रका. 22:11–15।

"आग का जलना" – 12:29; 2 थिस्स. 1:7; मत्ती 3:10; मरकुस 9:42–48; लूका 16:24; प्रका. 20:14।

"विरोधियों" – उसका संकेत परमेश्वर के विरोधियों की ओर है। प्रत्येक व्यक्ति जो मसीह और उसके एक बलिदान के विषय में प्रगट सत्य को जानबूझकर अनदेखा करता है, जान जाएगा कि वह परमेश्वर का शत्रु है। तुलना करें यूहन्ना 7:7; 15:18; रोमि. 5:10; याकूब 4:4।

10:28 – देखें 2:2; व्यवस्था. 17:6,7। उन पापों को जो व्यवस्था के अंतर्गत मृत्यु दण्ड को लाते थे, देखें व्यवस्था. 21:36। एक उदाहरण देखें – गिनती 15:30–35।

10:29 – यह वह पाप है जिसके विषय में लेखक 26 पद में कहता है। तुलना करें 6:6; मत्ती 12:31; 1 यूहन्ना 5:16,17। पुरानी वाचा के अंतर्गत जानबूझकर पाप करने पर मृत्यु दण्ड का विधान था। नयी वाचा, पुरानी वाचा से बढ़कर है, इसलिये इसके विरोध में अपराध पुरानी वाचा में किये गये

२६ डाला जाता है, **तो** सोच लो कि वह और कितने भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर
के पुत्र को पांवों से रौंदा, और वाचा के लोहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था,
३० अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया। **क्योंकि** हम उसे जानते हैं,
जिसने कहा, कि पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला लूंगा; और फिर यह कि प्रभु अपने लोगों
३१,३२ का न्याय करेगा। **जीवित** परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है। **उन** पहले दिनों को

अपराध से अधिक भयानक है। परमेश्वर जितना अधिक प्रकाश और सच्चाई देता है, उतनी ही अधिक हमारी आज्ञाकारिता की जिम्मेदारी बढ़ जाती है और उसे न अपनाने पर दण्ड भी बड़ा होता है। क्या मसीह में एक विश्वासी इस पद में वर्णित पाप करेगा – मसीह को पैरों से रौंदेगा, उसके रक्त को अपवित्र करेगा, आदि? नये नियम में विश्वासियों के संबंध में जो शिक्षा है, उसको ध्यान में रखते हुए ऐसा संभव नहीं है। देखें यूहन्ना 5:24; रोमि. 8:1, 28–33; फिलि. 1:6; 1 यूहन्ना 3:9,10 आदि।

'वाचा के लोहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था" – इसका अर्थ क्या हुआ? क्या यह संभव है कि एक व्यक्ति जो उसके रक्त से शुद्ध ठहराया गया है, विश्वासी न हो या उसने उद्धार न पाया हो? पवित्रीकरण का सदैव अर्थ उद्धार और विश्वास नहीं है। इसका मूल अर्थ है, अलग करना (लैव्य. 20:7 और 1 यूहन्ना 17:17–19 की टिप्पणी देखें)। अविश्वासी के शुद्ध किये जाने के संबंध में 1 कुरिं. 7:14 देखें। यह बात ध्यान में रखें कि इस पत्री में पुरानी और नयी वाचा की तुलना है और यह पत्री इब्री लोगों को लिखी गयी थी। वे यह जानते थे कि एक इस्त्राएल के रूप में वे रक्त से शुद्ध किये गये थे (9:18–20; निर्ग. 24:7,8; 31:13; लैव्य. 21:8)। किंतु इसका अर्थ यह नहीं हुआ कि इस्त्राएल में प्रत्येक व्यक्ति एक सच्चा विश्वासी था या परमेश्वर के क्रोध से बच गया था – देखें 3:10,11,19।

"नयी वाचा की नींव मसीह का रक्त है" – 9:15। देखें 13:12, जहाँ लिखा है कि "लोगों को" अपने रक्त से पवित्र करने के लिये मसीह यीशु ने दुख उठाया। नयी वाचा इस्त्राएल के घराने से बांधी गयी थी – 8:8। इस्त्राएल राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों से विशेष कार्य के लिये अलग किया गया है (पवित्र किया गया है) – रोमि. 9:1–5; 11:11,25–29। किंतु अधिकांश लोग मसीह को अस्वीकार करते हैं और उद्धार और विश्वास बिना जीवित हैं। क्या यह कहना संभव नहीं कि पृथ्वी पर दिखने वाली कलीसिया मसीह के रक्त से शुद्ध की गई है? क्या यह कहना सत्य नहीं कि दिखने वाले चर्च में बहुत से अविश्वासी हैं और उन्होंने कभी उद्धार प्राप्त नहीं किया? 1 तीमु. 2:6 देखें, जिसमें लिखा है कि मसीह ने अपने आपको सभी लोगों के लिये रेनसम या 'मुक्तिमूल्य' के रूप में दे दिया। यह मुक्तिमूल्य वह स्वयं था, उसका अपना रक्त – 1 पतरस 1:18,19।

10:30 – व्यव. 32:35,36; भजन 135:14।

10:31 – जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, पाप से घृणा करता है, और विद्रोह एवं अविश्वास को दण्डित करेगा। यदि हमने परमेश्वर के सत्य को ग्रहण किया है और उसे मान रहे हैं और जैसा 19–25 में कहता है वैसा कर रहे हैं तो हमें घबराने की आवश्यकता नहीं।

10:32–39 – सत्य से मुकरने के संबंध में चितावनी देने के बाद जैसा उसने 6:9–12 किया, वैसा वह अभी भी करता है। वह चाहता है कि वे जानें कि उसे विश्वास है कि वे उद्धार पा चुके हैं और वे पद 26–29 का पाप नहीं करेंगे। वह चाहता है कि वे भरोसा रखें और अपने विश्वास को कार्यों से पुष्ट करें।

10:32–34 – दुखों में उनकी स्थिरता, दूसरे मसीही लोगों से प्रेम, मसीह के लिये सब कुछ खो देने की तत्परता – यह सभी एक ठोस प्रमाण थे, कि उनका विश्वास वास्तविक था।

"झमेले" – (32) पद 26; प्रेरित. 26:18; 2 कुरिं. 4:6 और 2 तीमु. 3:12।

३३ स्मरण करो, जिन में तुम ज्योति पाकर दुखों के बड़े झमेले में स्थिर रहे। **कुछ** तो इस प्रकार,
कि तुम निन्दा, और क्लेश सहते हुए तमाशा बने, और कुछ इस तरह, कि तुम उनके साझी
३४ हुए जिनकी दुर्दशा की जाती थी। **क्योंकि** तुम कैदियों के दुख में भी दुखी हुए, और अपनी
संपत्ति भी आनन्द से लुटने दी, यह जानकर कि तुम्हारे पास एक और भी उत्तम और सर्वदा
३५ ठहरने वाली संपत्ति है। **इसलिए** अपना साहस न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है।
३६ **तुम्हें** धीरज धरना अवश्य है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल

"सर्वदा ठहरने वाली" – पद 34 – देखें 6:12; मत्ती 6:19,20; रोमि. 8:17; 1 पतरस 1:4। मसीह में हमारे पास अनंतकालिक संपत्ति है, इसलिये हमारे पास क्या है या क्या नहीं है इस विषय में हमें अधिक चिंतित नहीं होना चाहिये, या इस विषय में कि हमारे पास क्या है और क्या नहीं है।
10:35–36 – ***"प्रतिफल"*** – मत्ती 19:28–30 प्रका. 22:12।

"धीरज धरना" – देखें 3:6,14; 6:11; रोमि. 3:3–5; 8:24,25; याकूब 1:2–4। चाहे कुछ भी हो, मसीह में विश्वास रखकर सब कुछ सहते रहना आवश्यक है। लेखक का विश्वास है कि वे ऐसा करेंगे (39), हमें भी यही भरोसा रखना है।

10:37,38 – हबक्कूक 2:3,4। रोमि. 1:17; गल. 3:11 देखें। परमेश्वर लोगों को उस समय धर्मी समझता है जब वे उस पर विश्वास करते हैं – रोमि. 3:24,25,28; 4:24; 5:1। धर्मी ठहराए जाने के पश्चात वे एक ऐसा जीवन आरंभ करते हैं जो उनके इस पृथ्वी के अंत समय तक का होता है (2 कुरिं. 5:7)। इब्रानियों की पत्री में विश्वास द्वारा जीवित रहने और अंत तक बने रहने पर जोर डाला गया है।

"यदि वह पीछे हट जाए" – 6:6।

10: 39 – ***"हम"*** – इसका अर्थ मसीह में सच्चे विश्वासियों से है, (उसे मालूम था कि वह उनमें से एक था, और उन्होंने भी पर्याप्त प्रमाण इस बात के दिये थे कि वे भी विश्वासी थे – पद 32–34, 6:11। यदि वे पीछे हटें, तो परमेश्वर उनसे प्रसन्न नहीं होगा। इसका अर्थ उनका नाश होगा। किंतु प्रेरित लेखक कहता है कि वे पीछे नहीं हटेंगे। कुछ लोगों का कहना है कि सच्चे विश्वासी पीछे हट सकते हैं और यहाँ 26, 2:3; 3:12; 6:; 12:25 में वर्णित पाप कर सकते हैं और सदा के लिये नाश हो सकते हैं। लेखक संकेत देता है कि ऐसा नहीं हो सकता। विश्वास कहीं अधिक सामर्थी हैं जितना लोग सोचते भी नहीं। यह संसार से अधिक सामर्थी है (1 यूहन्ना 5:4)।

यह पर्वतों को हिला सकता है और असंभव को संभव कर सकता है (मत्ती 17:20; रोमि. 4:19–22)।

यह अदृश्य को देखने योग्य बनाता है (2 कुरिं. 4:18)।

परमेश्वर ने इसे एक माध्यम के रूप में चुना है ताकि लोगों को उद्धार दे और वे उद्धार में बने रहें (इफि. 2:8; 1 पतरस 1:5)।

क्या ऐसा माध्यम जिसे परमेश्वर ने चुना है अपने आप में असफल हो सकता है? यह मसीह की विश्वासियों के लिये प्रार्थना का एक विषय है, तब क्या यह असफल होगा? इब्रानियों का लेखक अपने इस भरोसे को प्रगट करता है कि ऐसा नहीं होगा। रोमि. 5:9 और 10 की टिप्पणी देखें। विश्वासी को जिस अंतिम उद्धार की प्रतिज्ञा की गयी है, उसमें मसीह के विश्वासी निरंतर विश्वास करते हैं। अगले अध्याय में लेखक विश्वास की सामर्थ को दिखाता है।

अध्याय 11

11:1 – विश्वास अंधकार में कूदना नहीं है, यह ज्योति में छलांग लगाना है। यह मात्र कामना करना नहीं है। वह परमेश्वर के वचन के सामर्थी प्रमाण पर आधारित है। सच्चा विश्वास मनुष्य के पास परमेश्वर

३७ पाओ। **अब** बहुत ही थोड़ा समय रह गया है जबकि आनेवाला आएगा, और देर न करेगा।
३८ **और** मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, और यदि वह पीछे हट जाए तो मेरा मन उससे
३९ प्रसन्न न होगा। **परंतु** हम हटनेवाले नहीं कि नाश हो जाएं, परंतु विश्वास करनेवाले हैं कि
अपने प्राणों को बचाएं।

११ अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है; **क्योंकि**
३ इसी के विषय में प्राचीनों की अच्छी गवाही दी गई। **विश्वास** ही से हम जान जाते हैं कि सारी
सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं कि जो कुछ दिखाई देता है, वह
४ देखी हुई वस्तुओं से बना हो। **विश्वास** ही से हाबील ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के

के विषय में आने वाले प्रत्येक विचार या वे सभी बातें नहीं जिन्हें परमेश्वर प्रकाशन कहता है।

"आश्वासन" – इस शब्द का अर्थ "तत्व" या "सार" या "प्रकृति" या "हियाव" भी होता है, किंतु यहाँ आश्वासन सबसे अधिक उचित प्रतीत होता है। यूनानी में दो शब्दों का मिश्रण है। प्रथम का अर्थ है "नीचे" और दूसरे का "खड़ा"। दूसरे शब्दों में, विश्वास वह है जो किसी और पर खड़ा होता है। जिसे नींव भी कहते हैं। वह कौन सी वस्तु या बात है जिस पर विश्वास स्थिर होता है? वह सभी जिनकी यहाँ इब्रानियों में मसीह में आशा की जाती है। विश्वास हमारी आशाओं की सच्ची नींव है। विश्वास बिना हमारे पास आशा के लिये ठोस कारण नहीं होंगे और न ही आशा करने का कोई अधिकार। विश्वास एक नींव है, गुण है, जो हमें किसी भी नाश होने की संभावना और किसी भी प्रकार की कठिनाई का साम्हना करने और सहने के योग्य बनाता है। तुलना करें रोमि. 5:1–4।

"प्रमाण" या 'पुष्ट करना' या 'खोला जाना' – यूनानी भाषा में इनमें से कोई भी शब्द हो सकता है – क्रिया का उपयोग यूहन्ना 3:20; 16:8; 1 कुरि. 14:24; इफि. 5:11,13 में किया गया है। विश्वास यह कायलता है कि जिन न दिखने वाली बातों के विषय बाईबिल कहती है, वे वास्तव में हैं। तुलना करें पद 27, 2 कुरि. 4:18।

11:2 – ***"पूर्वज"*** – इसका अर्थ है पुराने समय में रहने वाले वे परमेश्वर के लोग, जिनके विश्वास की प्रशंसा परमेश्वर ने की थी। प्रशंसा का विषय यह था कि : सारी मानवजाति में से केवल वे ही सीधे मार्ग पर थे, एकमात्र परमेश्वर पर विश्वास करते थे, परमेश्वर के सामने धर्मी थे। इस अध्याय में हम इस प्रशंसा के भागी हैं। परमेश्वर की दृष्टि से मानवजाति का इतिहास उन लोगों का इतिहास है जो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं। क्योंकि विश्वास और उसके द्वारा संभव बातें ही महत्वपूर्ण हैं। केवल वही है जो बना रहेगा, बाकी सब कुछ मिट जाएगा (1 यूहन्ना 2:17)।

11:3 – विश्वास समझ या तर्क के विरोध में नहीं है – विश्वास समझ प्रदान करता है। यह आँख के समान है जो प्रकाश को भीतर आने देती है। विश्वासी जानते हैं कि विश्व की उत्पत्ति कैसे हुई क्योंकि परमेश्वर ने यह प्रगट किया है। हमें अविश्वासियों के समान उसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में तर्क नहीं करना है। परमेश्वर ने कहा और सृष्टि का निर्माण हुआ (उत्पत्ति 1:1,3,6,9, आदि; भजन 33:6; यशा 40:26; 42:5; यूहन्ना 1:3; कुलु. 1:16)।

11:4 – यहाँ लेखक विश्वास रखनेवाले पूर्वजों के विषय में बताना आरंभ करता है। वे सभी प्रतिभावान लोग नहीं थे। हाबिल एक चरवाहा था, याकूब और शिमशोन में तमाम त्रुटियाँ थीं, राहब एक वेश्या थी, किंतु उन सभी में एक बात सामान्य थी – उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया और इस बात में वे हम सभी के लिये एक नमूना थे। यहाँ पर पुराने नियम के सभी विश्वासियों के नाम नहीं दिये गये हैं। यहाँ पर विश्वास के तीन परिणाम दिखायी देते हैं।

पहला, इस विश्वास के परिणाम स्वरूप उन्होंने कुछ किया। सच्चा विश्वास जीवनरहित नहीं

लिए चढ़ाया; और उसी के द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही भी दी गई। क्योंकि परमेश्वर ने
उसकी भेंटों के विषय में गवाही दी; और उसी के द्वारा वह मरने पर भी अब तक बातें करता
५ है। **विश्वास** ही से हनोक उठा लिया गया कि मृत्यु को न देखे, और उसका पता नहीं मिला;
क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था, और उसके उठाए जाने से पहले उसके विषय में यह
६ गवाही दी गई थी, कि उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया है। **विश्वास** बिना उसे प्रसन्न करनां

है। अक्रियाशील नहीं है। यह एक शक्तिशाली बल है जो सदा क्रिया को उत्पन्न करता है (10:39; याकूब.2:14—26)।

दूसरा, विश्वास के द्वारा परमेश्वर से आशीषें प्राप्त हुई। इस सूची के अनुरूप परमेश्वर ने प्रत्येक विश्वासी को किसी न किसी अद्‌भुत तरीके से आशीष दी।

तीसरा, जिनके पास विश्वास था, उन्होंने इसके द्वारा सब कुछ अंत तक सहा। इसलिये सच्चा विश्वास कार्य करता है, प्राप्त करता है और सतत बना रहता है। जो विश्वास ऐसा नहीं करता है, वह बाईबिल आधारित सच्चा विश्वास नहीं है।

"हाबिल" — उत्पत्ति 4:1—10। हम उसमें विश्वास और बलिदान के मध्य संबंध देखते हैं। पापी के रूप में हम सभी को यहीं से आरंभ करना चाहिये और इस पत्र की यह मुख्य शिक्षाओं में से एक है। हाबिल का विश्वास एक प्रकाशन पर निर्भर था (जैसा कि सच्चा विश्वास होता है) और विश्वास के द्वारा उसने परमेश्वर द्वारा निर्धारित बलिदान को चुना था। कैन ने ऐसा करना अस्वीकार किया। इसलिये हाबिल का बलिदान उसके बलिदान से बढ़कर था।

"विश्वास... धर्मी" — तुलना करें उत्पत्ति 15:6; रोमि. 1:17; 3:22; 5:1। उसके इस नमूने से हाबिल आज तक बातें करता है और कहता है — "परमेश्वर के प्रकाशन पर भरोसा करो और परमेश्वर द्वारा निर्धारित बलिदान का चुनाव करो"। यह बलिदान यीशु मसीह का है — 7:27; 9:12,26,28; 10:10,14।

11:5 — परमेश्वर के साथ सहभागिता और विश्वास के बीच संबंध को हनोक दिखाता है। उत्पत्ति 5:11—24 देखें। बिना विश्वास के परमेश्वर को जानना या उसके साथ जीवन जीना असंभव है। अविश्वास परमेश्वर को झूठा ठहराता है (1 यूहन्ना 5:10)। दो व्यक्तियों में सहभागिता हो भी कैसे सकती है, यदि उनमें से एक में अविश्वास और दोष लगाने के विचार हैं? हनोक विश्वास और अमरता के बीच के संबंध को भी दर्शाता है, एक ऐसा परिवर्तन जो यीशु मसीह के द्वितीय आगमन पर जीवित विश्वासियों के जीवन में आएगा (1 कुरि. 15:51—53; 1 थिस्स.4:15—17)।

11:6 — *"विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है"* — मात्र कठिन ही नहीं। अविश्वास एक छोटी सी गलती नहीं है, जिसे परमेश्वर अनदेखा करता है। यह एक भयंकर पाप है जो हमारे उस संबंध के केंद्र पर प्रहार करता है जो परमेश्वर और मनुष्य के मध्य है। यह एक व्यक्ति का परमेश्वर और ज्योति के विरुद्ध पाप और अंधकार के प्रति भीतरी चुनाव है। यह परमेश्वर के प्रकाशन और परमेश्वर के पुत्र का तिरस्कार है, और परमेश्वर इसका उचित दण्ड देता है — 3:11,12,19; यूहन्ना 3:36; प्रका. 21:8।

देखें कि विश्वास दो बातों को सत्य ग्रहण करता है, यह कि बाईबिल में वर्णित परमेश्वर का अस्तित्व है और वह तत्परता से अपने खोजने वाले व्यक्ति को पुरस्कार देगा। यहाँ पर पद एक के दो दायरे हैं — अदृश्य (परमेश्वर) और भविष्य (पुरस्कार)। विश्वास इन दोनों सच्चाईयों को ग्रहण करता है क्योंकि इन्हें परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है — 1:1—3; यशा. 44:6; 45:5,18,21; यूहन्ना 1:18; मत्ती 7:7,8।

"खोजने वालों को" — व्यव. 4:29; यिर्मयाह 29:13।

11:7 — पाप के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध से बचाव और विश्वास के साथ उसका जो संबंध है, उसे हम नूह के जीवन में देखते हैं — उत्पत्ति 6:9—7:5। अब मसीह लोगों के लिये शरणस्थान है। वे

असंभव है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है; और अपने
७ खोजनेवालों को प्रतिफल देता है। **विश्वास** ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय
दिखाई नहीं देती थीं, चेतावनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिए जहाज
बनाया, और उसके द्वारा उसने संसार को दोषी ठहराया, और उस धार्मिकता का वारिस हुआ,
८ जो विश्वास से होता है। **विश्वास** ही से इब्राहीम को जब बुलाया गया तो वह आज्ञा मानकर
ऐसी जगह चल पड़ा, जिसे विरासत में लेनेवाला था, और यह न जानता था कि मैं किधर जाता
९ हूं; तौभी चला गया। **विश्वास** ही से उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में, जैसे पराए देश में परदेशी
रहकर इसहाक और याकूब समेत, जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बुओं में वास
१० किया। **क्योंकि** वह उस स्थिर नींववाले नगर की प्रतीक्षा करता था, जिसका रचनेवाला और
११ बनानेवाला परमेश्वर है। **विश्वास** से सारा ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की सामर्थ

उसकी शरण में सुरक्षित हैं।

"डर" – उत्पत्ति 20:11; भजन 34:7–11; 111:10; नीति. 1:7 की टिप्पणी।

"घर" – प्रेरित 16:31 से तुलना करें।

"संसार को दोषी ठहराया" – विश्वास का एक उदाहरण अविश्वास को दोषी ठहराता है। जिस प्रकार प्रकाश अंधकार को दोषी ठहराता है (तुलना करें यूहन्ना 3:18–21; 15:22–24)।

"जो धार्मिकता विश्वास से है" – रोमि.1:17; 3:24,25।

11:8–19 – इस अध्याय में अन्य लोगों की तुलना में अब्राहम को अधिक जगह दी गयी है। पुराने नियम में वह विश्वास का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है और उसे "विश्वास करने वालों का पिता" कहा गया है – रोमि. 4:11,16। उसके जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्र है।

11:8 – देखें उत्पत्ति 12:1–5; प्रेरित 7:2–4। यहाँ विश्वास और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में संबंध को दिखाया गया है। बिना विश्वास वास्तविक आज्ञाकारिता नहीं हो सकती और यदि कोई आज्ञाकारिता नहीं, तो यह सिद्ध होता है कि विश्वास नहीं है – 5:9 देखें, यूहन्ना 3:36; प्रेरित. 5:32; रोमि. 1:5; 2 थिस्स. 2:8 और प्रेरित. 22:10 पर टिप्पणी। सब कुछ छोड़कर अनदेखे स्थान को जाना व्यक्ति के पुराने जीवन शैली और विश्वास के छोड़ने को दिखाता है (तुलना करें लूका 14:33; 18:28,30; 2 कुरि. 6:17,18)। परंतु अपनी यात्रा आरंभ करना और यह न जानना कि हम कहाँ जा रहे हैं और क्या कर रहे हैं, यह क्या मूर्खता नहीं? मनुष्य की बुद्धि को शायद यह मूर्खतापूर्ण जान पड़ता हो, परंतु विश्वास के लिये और उसकी बड़ी समझ के लिये नहीं।

11:9,10 – उत्पत्ति 12:6–9। इब्राहिम का तम्बुओं में रहना और प्रायः एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना विश्वास और यात्रा के बीच संबंध को दिखाता है। पद 13–16 देखें। इब्राहिम की आँखें अनंत संसार पर लगी थीं, इसलिये उसने अपनी आँखें इस संसार पर नहीं लगायीं। तुलना करें 1 पतरस 2:11। विश्वासियों का यही दृष्टिकोण होना चाहिये। उनकी सदा ठहरने वाली सम्पति और नागरिकता स्वर्ग की है (10:34; मत्ती 6:19,20; फिलि. 3:20)। विश्वास के द्वारा वे इस बात को समझते हैं और इस सच्चाई में आनंदित होते हैं कि यह संसार उनका घर नहीं, परंतु इस राह से वे मात्र गुज़र रहे हैं और उनका असली ठिकाना स्वर्ग में परमेश्वर का नगर है (12:22; गल. 4:26; प्रका. 21:2)।

11:11,12 – उत्पत्ति 15:4–6; 21:1–5; रोमि. 4:18–21। यह सच है कि इब्राहिम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया कि उसे और उसकी पत्नी सारा को संतान होगी। पुत्र की प्रतिज्ञा दिये जाने के समय सारा के विश्वास के विषय कुछ भी नहीं कहा गया है। उत्पत्ति 18:10–15 देखें। इब्रानियों के लेखक के अनुसार बाद में उसने भी विश्वास किया। विश्वास और फलदायकता, विश्वास और दिखने वाली असंभवता (मत्ती 17:20) के बीच जो संबंध है उसे वे दोनों दिखाते हैं।

१२ पायी; क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करनेवाले को सच्चा जाना था। **इस** कारण एक ही जन से जो
मरे हुए के समान था, आकाश के तारों और समुद्र तट की बालू के समान, अनगिनित वंश
१३ उत्पन्न हुआ। **ये** सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नहीं पायीं;
परंतु उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी
१४,१५ हैं। **जो** ऐसा कहते हैं, वे प्रगट करते हैं कि वे स्वदेश की खोज में हैं, **और** जिस देश से वे
१६ निकल आए थे, यदि उसके विषय में सोचते तो उन्हें लौट जाने का अवसर था। **परंतु** वे एक
उत्तम अर्थात् स्वर्गिक देश के इच्छुक हैं, इसी लिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे
१७ नहीं लजाता, इसलिए उसने उनके लिए एक नगर तैयार किया है। **विश्वास** ही से इब्राहीम
ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिसने प्रतिज्ञाओं को सच माना
१८ था, **और** जिससे यह कहा गया था, कि इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा, वह अपने एकलौते
१९ को चढ़ाने लगा। **क्योंकि** उसने विचार किया कि परमेश्वर सामर्थी है, कि मरे हुओं में से
२० जिलाए। इसलिए उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर उसने इसहाक को फिर पा लिया। **विश्वास**
२१ ही से इसहाक ने याकूब और एसाव को आनेवाली बातों के विषय में आशीष दी। **विश्वास** ही
से याकूब ने मरते समय यूसुफ के दोनों पुत्रों में से एक एक को आशीष दी, और अपनी लाठी
२२ के सिरे पर सहारा लेकर उपासना की। **विश्वास** ही से यूसुफ ने, अपनी मृत्यु के समय,

---

11:13 – वे एक ऐसे विश्वास का नमूना हैं जो अंत तक बना रहता है (10:39)।

"परदेशी और यात्री" – पद 9,10। मात्र इब्राहिम ही नहीं, किंतु वे सभी जिनके नाम यहाँ पर हैं, यही समझ एवं दृष्टिकोण रखते थे। आशा की ही हुई बातें, अदृश्य बातें (पद 1), उनके विचारों, इच्छाओं और विश्वास के बड़े लक्ष्य थे।

11:17–19 – उत्पत्ति 22:1–19 की वर्णित घटना में विश्वास के कई एक दायरों को देखा जा सकता है, जैसे परखे जाने के समय विश्वास और विजय, कठिन समय में विश्वास और आज्ञाकारिता, विश्वास और पुनरुत्थान, विश्वास और न बदलने वाली (स्थिर) परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ। उत्पत्ति 21:12 में परमेश्वर द्वारा की गयी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिये इसहाक का जीवित रहना जरूरी था। इब्राहिम को विश्वास था कि यदि वह इसहाक को बलि चढ़ाता है, तो परमेश्वर उसे मरे हुओं में से जिलायेगा; और परमेश्वर हर तरह से अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेगा। विपरीत परिस्थितियों के बावजूद सच्चा विश्वास बना रहता है। वह इस सच्चाई को थामे रहता है कि परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता।

11:20 – उत्पत्ति 27:27–40। यह विश्वास और आशा की गई वस्तुओं (पद1) के मध्य में जो संबंध ा है, उसे दर्शाता है।

11:22 – उत्पत्ति 49:1–28; 50:24,25। याकूब और यूसुफ उस विश्वास को दर्शाते हैं जो भविष्य में परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा की हुई बातों पर है, जब तक व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त न कर ले (पद13)। याकूब का विश्वास उसके जीवन के अंत में ही अधिक तीव्रता से चमका था। सच्चा विश्वास मृत्यु की घड़ी आने पर भी पीछे नहीं हटता (10:39)। जिन लोगों को यह पत्र लिखा गया था, क्या कठिनाईयों के कारण उन्हें अपने विश्वास से मुकर जाने की इच्छा हुई थी? उन्हें अपने पूर्वजों की ओर दृष्टि करनी चाहिये। उन्हें कैसी कैसी कठिनाई और समस्या का साम्हना करना पड़ा? विश्वास के द्वारा परमेश्वर लोगों को यह सब प्राप्त करने योग्य बनाता है।

11:23 – निर्ग. 1:22; 2:2; प्रेरित. 7:20। उन्होंने अर्थात् मूसा के माता–पिता ने परम पिता परमेश्वर पर विश्वास किया इसलिये वे राजा की आज्ञा से न डरे। दृढ़ विश्वास डर पर जय पाता है – 13:6; मत्ती 8:26; मरकुस 4:40; प्रेरित 4:13।

इस्राएल की सन्तान के निकल जाने की चर्चा की, और अपनी हड्डियों के विषय में आज्ञा दी।
२३ **विश्वास** ही से मूसा के माता पिता ने उसको उत्पन्न होने के बाद तीन महीने तक छिपा रखा;
२४ क्योंकि उन्होंने देखा कि बालक सुन्दर है, और वे राजा की आज्ञा से न डरे। **विश्वास** ही से
२५ मूसा ने बड़े हो जाने पर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया, **इसलिए** कि उसे
पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना और उत्तम लगा;
२६ **और** मसीह के कारण निन्दित होने को उसने मिसर के भण्डार से बड़ा धन समझा। क्योंकि
२७ उसकी आंखें फल पाने की ओर लगी थीं। **विश्वास** ही से राजा के क्रोध से न डरकर उसने
२८ मिसर को छोड़ दिया, क्योंकि वह अनदेखे को मानो देखता हुआ दृढ़ रहा। **विश्वास** ही से
उसने फसह और लोहू छिड़कने की विधि मानी, ताकि पहिलौठों का नाश करनेवाला इस्राएलियों

11:24—26 – निर्ग. 2:11,13; प्रेरित 7:23—36। मूसा ने 40 वर्ष की आयु में मिस्त्र और परमेश्वर के बीच एक चुनाव किया। मिस्त्र को चुनने का अर्थ था संसारिक सामग्री, सम्पत्ति और आमोद प्रमोद को चुनना। परमेश्वर को चुनने का अर्थ था सब कुछ त्यागना और मिस्त्र में गुलाम लोगों के साथ दुख उठाना। वह ऐसा इसलिये कर सका क्योंकि उसके पास विश्वास था और विश्वास लोगों की सहायता करता है कि वे बातों को सही मूल्य दे सकें। विश्वास इस सच्चाई से कायल होता है कि भविष्य की परमेश्वरीय और अनदेखी बातें उन बातों से बढ़कर हैं जो संसार हमें दे सकता है। फिलि. 3:7,8 से तुलना करें।

मूसा विश्वास और त्यागे जाने के मध्य जो संबंध है उसका नमूना है। देखें 10:34; लूका 14:33; 18:28—30; मत्ती 4:18—22; 10:37—39; 17:24—28। सच्चा विश्वास मसीह के लिये हर प्रकार का त्याग करने के लिये तैयार रहेगा। जो तैयार नहीं हैं, वे भले ही कहते रहें कि उनके पास विश्वास है, और दूसरे भी उनके विषय में भले ही कहते रहें कि उनके पास विश्वास है, परंतु वास्तव में देखा जाये तो वे बाईबिल के सच्चे विश्वास से दूर हैं। उनके विषय हम क्या कहें जो मूसा और पौलुस के मार्ग को त्याग देते हैं और मसीह के लिये कष्ट उठाने के बजाए आमोद प्रमोद, सम्पत्ति और संसार में अधिकार के पीछे जाते हैं? उन्हें यह सच्चाई सीखने की आवश्यकता है – मसीह के लिये कष्ट उठाना संसारिक धन संपत्ति से बढ़कर है (पद 26; 13:13; प्रेरित. 5:41; 1 पतरस 4:12—16)।

11:27 – ***"बिना डरे"*** – निर्ग. 2:14 में लिखा है, कि मूसा इसलिये भयभीत हो गया क्योंकि उसके कार्यों के विषय में जिनका वर्णन 11,12 पद में है, लोगों का ज्ञात हो गया था। उसने यह महसूस किया कि उससे उसके लोगों को और अधिक कठिनाई होगी। इसलिये उनके डर के कारण वह भागा, न कि अपने जीवन को बचाने के लिये। डर के कारण नहीं, किंतु विश्वास से उसने मिस्त्र छोड़ा। सच्चा विश्वास सदा परमेश्वर के किसी वचन पर आधारित होता है। मूसा ने मिस्त्र देश इसलिये छोड़ा था क्योंकि उसे यह मालूम था कि परमेश्वर ने उससे ऐसा करने के लिये कहा था। वह विश्वास में बना रहा (10:39) और उसने अदृश्य परमेश्वर को देखा (पद1; 2 कुरिं.4:18)। विश्वास लोगों को आत्मिक दृष्टि देता है।

11:28 – निर्ग. 12:1—30 देखें। यहाँ परमेश्वर के दण्ड से छुटकारा और विश्वास दिखायी देता है। तुलना करें पद 7, 9:27,28; 1 कुरिं. 5:7।

11:29 – निर्ग. 14:15—31। यहाँ विश्वास और शत्रुओं से छुटकारा है।

11:30 – यहोशू 6:12—20 देखें। यहाँ विश्वास और जो परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है उसे ले लेने के संबंध में बताया गया है। तुलना करें यहोशू 1:3; 1 यूहन्ना 5:14,15; मरकुस 11:24।

२९ पर हाथ न डाले। **विश्वास** ही से इस्राएली लाल समुद्र के पार ऐसे उतर गए, जैसे सूखी भूमि
३० पर से; और जब मिस्रियों ने वैसा ही करना चाहा, तो सब डूब मरे। **विश्वास** ही से, सात दिन
३१ तक चक्कर लगाने के बाद यरीहो की शहरपनाह, गिर पड़ी। **विश्वास** ही से राहाब वेश्या
आज्ञा न माननेवालों के साथ नाश नहीं हुई; इसलिए कि उसने भेदियों को कुशल से रखा था।
३२ **अब** और क्या कहूं? क्योंकि समय नहीं रहा, कि गिदोन का और बाराक और समसून का, और
३३ यिफतह का, और दाऊद और शमुएल का, और भविष्यद्वक्ताओं का वर्णन करूं। **इन्होंने**
विश्वास ही के द्वारा राज्य जीते; धर्म के काम किए; प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं प्राप्त कीं, सिंहों के
३४ मुंह बन्द किए, **आग** की ज्वाला को ठंडा किया; तलवार की धार से बच निकले, निर्बलता में
३५ बलवन्त हुए; लड़ाई में वीर निकले; विदेशियों की फौजों को मार भगाया। **स्त्रियों** ने अपने मरे
हुओं को फिर जीवित पाया; कितने तो मार खाते खाते मर गए, और छुटकारा न चाहा; इसलिए
३६ कि उत्तम पुनरुत्थान के भागी हों। **कई** एक ठट्ठों में उड़ाए जाने, और कोड़े खाने, वरन् बान्धे जाने,

---

11:31 – यहोशू 2:1–21; 6:24,25 देखें। यहाँ वह विश्वास है जो बड़े पाप और अज्ञानता पर विजय हासिल करता है और परमेश्वर के श्राप से छुटकारा भी (तुलना करें गल.3:10–14; यूहन्ना 5:24)।

"आज्ञा न मानने वालों के साथ" या "विश्वास करने से इनकार" – यूनानी शब्द दोनों की ही ओर संकेत करता है। देखें यूहन्ना 3:36।

11:32 – पुराने नियम से लेखक ने और कई एक उदाहरण दिये होते, किंतु यह आवश्यक नहीं था। उसने यह दिखाया है कि सच्चा विश्वास क्या है और यह क्या करता है। वह यहाँ विश्वास के अनेक योद्धाओं का वर्णन करता है और दिखाता है कि उनके विश्वास ने किस प्रकार कार्य किया, प्राप्त किया और उन्हें संभाला (पद 4 की टिप्पणी)।

11:33–38 – ये पद वे बातें दिखाते हैं जिन्हें पुराने नियम के विश्वासियोंश्ने प्राप्त किया और वे आठ बातें जिन्हें उन्होंने सहा। उनके विश्वास के विषय में भी जो आशा की हुई वस्तुओं के प्रति था, जिससे उन्हें वह सब सहने की योग्यता मिली, जो उन्होंने सहा।

11:33 – *"राज्य"* – गिनती 21:23–35; यहोशू 12:7–24; 2श्शमू. 8:1–14।

"प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ प्राप्त कीं" – पुराने नियम में वे सभी प्रतिज्ञाएँ जो परमेश्वर ने दी थी, इसलिये दी गई, क्योंकि कोई न कोई (अधिकारी) उन पर विश्वास करने के लिये इस पृथ्वी पर था।

"सिंहों" – दानि. – 6:16–22।

11:34 – *"आग"* – दानि. 3:19–27।

"तलवार" – 1श्शमू. 17:45–50।

"बलवंत हुए" – यहूदा 6:15; 7:7,8; 16:21,28–30; 2 इति.14:11; यशा.40:31। तुलना करें 2 कुरिं. 12:9,10।

11:35 – *"अपने मरे हुओं को फिर जीवित पाया"* – 1 राजा 17:17–24; 2 राजा 4:32–37।

"छुटकारा न चाहा" – यदि दुष्टता और अविश्वास के साथ समझौते की बात थी, तो उन्होंने छुटकारा न चाहा।

"उत्तम पुनरुत्थान" – अनंत जीवन के लिये भविष्य का पुनरुत्थान, जो कि उपरोक्त दो स्त्रियों के जिलाए गए पुत्रों के जिलाये जाने से कहीं अधिक बेहतर है।

11:36 – *"कैद में पड़ने"* – उत्पत्ति 39:20; यिर्म. 37:15,16; 38:6।

11:37 – *"पत्थरवाह किए गए"* – मत्ती 23:27।

"आरे से चीरे गए" – ऐसा माना जाता है कि यशायाह के साथ ऐसा हुआ।

"परीक्षा की गई" – यह बात उस समय से सभी विश्वासियों और विश्वास के वीरों के विषय

३७ और कैद में पड़ने के द्वारा परखे गए; उन पर पथराव हुआ; वे आरे से चीरे गए; उनकी परीक्षा
की गई; तलवार से मारे गए; वे कंगाली में और क्लेश में और दुख भोगते हुए भेड़ों और
३८ बकरियों की खालें ओढ़े हुए, इधर उधर मारे मारे फिरे। **और** जंगलों, और पहाड़ों, और गुफाओं
३९ में, और पृथ्वी की दरारों में भटकते फिरे। **संसार** उनके योग्य न था; और विश्वास ही के द्वारा
४० इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई, तौभी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली। **क्योंकि**
परमेश्वर ने हमारे लिए पहले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिध्दता को न पहुंचे।

१२ **इस** कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमको घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकने
वाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें,
२ **और** विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनन्द के

में सत्य है। इस सूची मे दी गई बातों में हम सभी की परीक्षा शायद न हो, किंतु हम सभी अनेकों परीक्षाओं और प्रलोभनों का साम्हना करेंगे।

"कंगाली, क्लेश, दुख" – प्रायः इतिहास के हुए सर्वोत्तम लोगों के विषय में यह बात सत्य है। तुलना करें यूहन्ना 15:18–21; 16:2,3,33; रोमि. 8:35–37; 1 कुरिं. 4:11–13।

11:38 – संसार ने उनके साथ ऐसा व्यवहार किया मानों वे इसके योग्य हों, किंतु सच्चाई इसके विपरीत थी। वे पृथ्वी पर कोई घर प्राप्त न कर सके, किंतु परमेश्वर ने उनके लिये स्वर्ग में घर तैयार किया था।

11:39,40 – *"अच्छी गवाही"* – पद 2

"प्रतिज्ञा की हुई वस्तु" – पद 10,16। लेखक उस प्रतिज्ञा की हुई वस्तु की ओर संकेत कर रहा है, जो मसीह लाने वाला था – 1:14; 6:12; 9:15।

"उत्तम बातें" – इसमें वे सभी बातें निहित हैं जो इस पत्र में दिखायी देती हैं – 7:19; 8:6; 9:23। परमेश्वर की योजना थी और है भी कि जो विश्वासी मसीह के पहले जीवित थे और जिन्होंने बाद में विश्वास किया, वे सभी एक साथ सिद्ध किए जाएं। मसीह का बलिदान उनके और हमारे लिये समान है और किसी भी व्यक्ति की सिद्धता के लिये एक उपाय है – 10:14; रोमि. 3:25,26। पूर्ण सिद्धता मसीह के आने के पश्चात आएगी – रोमि. 8:23–30; 1 थिस्स.4:15–17; 1 यूहन्ना 3:2।

अध्याय 12

12:1,2 – यहाँ हमारे पास गवाहों की एक बड़ी भीड़ है (अध्याय 11 के विश्वासी), वे रुकावटें जिनसे हमें दूर रहना है (पाप, आदि), जिस दौड़ में हम दौड़ रहे हैं उसका सिद्धान्त (धीरज के साथ दौड़ना), और वह बड़ा आदर्श जिसकी ओर हमें देखना है, अर्थात् यीशु। लेखक बताना चाहता है कि अन्त में एक बड़ा पुरस्कार होगा।

"गवाह" – यूनानी भाषा में इसका अर्थ है, वे लोग जो उन बातों की गवाही देते हैं जिन्हें उन्होंने देखा या अनुभव किया है। बाईबिल में हम जहाँ कहीं देखते हैं, ये गवाह अध्याय 11 के विश्वासी दिखाई देते हैं। पवित्र वचन के पन्नों में से वे हमें देख रहे हैं और हमें साक्षी देते हैं। वे हमसे कहते हैं कि विश्वास का जीवन भला है, उसके पुरस्कार बड़े हैं। वे यह भी कहते हैं कि प्रत्येक बाधा पर विजय हासिल की जा सकती है।

"उलझानेवाले पाप" – हमारी विश्वास की दौड़ में उलझाने वाली वस्तु वह है जो हमारी गति धीमी कर देती है, हमारा ध्यान भटका देती है, बाधक होती है या दौड़ को कठिन कर देती है या हमारे जीतने के निर्णय को हम से छीन लेती है। यह आलस्य, संसारिकता, अनुशासन का अभाव,

लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और
३ सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। **इसलिए** उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में
४ पापियों का इतना वाद–विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो। **तुमने** पाप
५ से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लोहू बहा हो। **और** तुम उस उपदेश
को जो तुमको पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल गए हो, कि हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को

निराशा या और कुछ भी हो सकता है। सबसे बुरी रुकावट 'पाप' है। ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक विशेष पाप के विषय में सावधान करता है – "पाप जो आसानी से हमें फंसा लेता है।" ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक अविश्वास की ओर संकेत करता है, हालांकि कुछ लोग सोचते हैं कि वह सब प्रकार के पाप की ओर संकेत कर रहा है। विश्वासियों की दौड़ में 'अविश्वास' सबसे बड़ी रुकावट है और प्रत्येक दौड़नेवाले की एड़ी में यह चुभता है।

12:2 – *"यीशु की ओर ताकते रहे"* – यीशु स्वर्ग में है, किंतु विश्वास से हम अपनी आँखें उसकी ओर लगा सकते हैं (11:1,27; 2 कुरिं. 4:18)।

"कर्ता" – यदि हमारे पास विश्वास है, तो वही इसे उत्पन्न करने वाला है। (इफि. 2:8; फिलि. 1:29)।

"सिद्ध करनेवाला" – यीशु वह है, जो उसको आमने सामने देखने के दिन तक हमारे विश्वास को बढ़ाएगा (10:39; लूका 22:32; फिलि. 1:6)। जिस कार्य का उसने आरंभ किया है, उसे वह पूरा भी करता है।

"आनंद" – यीशु किस तरह से सह सका – 2 कुरिं. 5:21; 1 पतरस 2:24; यशा. 53:5,10। दूसरी ओर उसके लिये आनंद प्रतीक्षा कर रहा था (भजन 16:11)। उसका आनंद क्या था? शायद पिता परमेश्वर को प्रसन्न करना और अपने कार्य को समाप्त करना (यूहन्ना 4:34)। शायद बहुत से पुत्रों को महिमा में आते हुए देखना (2:11)। अनंत उद्धार की प्राप्ति हेतु पापियों के लिये एक मार्ग खोलना (लूका 15:7,10)।

"शर्म" – क्रूस की मृत्यु सर्वाधिक शर्मनाक बात थी।

"बैठ गया" – 10:12; 1:3।

12:3 – विश्वास के जीवन में विश्वासी के लिये यीशु सबसे अच्छा उदाहरण है (1 पतरस 2:21–23)। अपने मन को उसके विचारों से भर लेना विश्वासी की दौड़ में बड़ा प्रोत्साहन है – देखें 3:1; कुलु. 3:12।

"विरोध" – मत्ती 9:3,34; 12:14,24; 21:23,46; 22:15; 26:3,4,14–16, 47–50, 65–68; 27:20–23, 27–31, 35–44।

12:4 – विश्वास का जीवन मात्र दौड़ नहीं है, यह एक युद्ध है (इफि. 6:10–18; 2 तीमु. 2:3; 4:7)। पाप शत्रु है। यह भीतर और बाहर से लड़ता है (1 यूहन्ना 1:8; रोमि. 7:17,18)। इसके विरुद्ध युद्ध रोक देना समस्या का आहवान करना है।

12:5–13 – हालांकि अपने विश्वास के लिये उन्होंने अपने प्राण नहीं दिए थे (पद4), उन्होंने कई प्रकार से दुख उठाया था (10:32–34)। अविश्वासी यहूदियों ने उनसे यह कहा होगा कि वे कष्ट इसलिये उठा रहे हैं क्योंकि परमेश्वर उनसे इसलिये अप्रसन्न था क्योंकि उन्होंने यहूदी धर्म की बातों को छोड़ दिया था। लेखक चाहता था कि लोग यह समझें कि मसीहियों के जीवन में कठिनाईयाँ और समस्याएँ परमेश्वर के प्रेम का प्रतीक हैं, न कि उसकी अप्रसन्नता का। परमेश्वर उनका अनुशासन कर रहा था, क्योंकि वे उसकी संतान थे और वह उनकी भलाई के लिये वचनबद्ध था। यहाँ पर हम ताड़ना के विषय में पाँच सच्चाईयाँ सीख सकते हैं (अनुशासन और ताड़ना द्वारा

६ हल्की बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो धीरज न छोड़। **क्योंकि** प्रभु, जिससे प्यार
करता है, उसकी ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको छड़ी भी लगाता
७ है। **तुम** दुख को ताड़ना समझकर सह लो। परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव
८ करता है। वह कौन सा पुत्र है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? **यदि** वह ताड़ना जिसके

प्रशिक्षण)।

प्रथम, विश्वासी इससे बच नहीं सकते। *'प्रत्येक पुत्र'* जिसे वह ग्रहण करता है, उसे अनुशासित करता है (पद 6)।

द्वितीय, उपयोग किया जानेवाला तरीका पीड़ामय होता है। यह छड़ी लगाने के समान है। इससे आनंद नहीं, पीड़ा होती है (पद11)।

"कोड़े लगाता है" – यह मत्ती 10:17; मरकुस. 10:34; लूका 18:33 में उपयोग किया गया है। हालांकि परमेश्वर स्वयं वास्तविक कोड़े का उपयोग नहीं करता है, किंतु उसकी ताड़ना और अनुशासन हमारे हृदय और मन पर इस प्रकार से होती है जैसे शरीर पर कोड़े लगाए जाने से पीड़ा होती है। लोग हमें वास्तविक कोड़े से पीड़ा दे सकते हैं, जो परमेश्वर हमारे अनुशासन के लिये उपयोग में लाता है।

तीसरा, यह अनुशासन एक चिन्ह है। यह सिखाता है कि जिनकी ताड़ना होती है वे परमेश्वर की संतान हैं। यह इस बात का चिन्ह भी है कि वह विशेष रीति से हमारा ध्यान रखता है। जैसे कि आदर्श पिता करता है, वैसे ही वह प्रेम करता है और अनुशासन करता है (पद 8)। कुछ लोग सोचते हैं कि यदि परमेश्वर हमसे प्रेम करता होता तो ऐसा व्यवहार नहीं करता, किंतु वह ऐसा करता है क्योंकि वह हमसे प्रीति रखता है।

चौथा, परमेश्वर द्वारा अनुशासित किये जाने का एक अद्‌भुत उद्देश्य है – हमारी भलाई, हमारी पवित्रता (पद 10)।

पाँचवी, जो लोग धीरज से प्रतीक्षा करते हैं (पद 7), आधीन हो जाते हैं (पद 9) और सहते रहते हैं (पद 11), उन्हें इसका प्रतिफल प्राप्त होता है।

परमेश्वर के अनुशासन या ***"कोड़े मारे जाने"*** के प्रति हमारे तीन प्रकार के रवैये हो सकते हैं। लोग इसका ठट्ठा (तुच्छ जानना, अस्वीकार करना) कर सकते हैं या हताश हो सकते हैं या परमेश्वर के प्रति आधीन होकर प्रशिक्षण पा सकते हैं। चुनाव यह होता है कि हम अस्वीकार करें या स्वीकार करें। लेखक यह नहीं बताता कि परमेश्वर हमारा अनुशासन करने के लिये किन माध्यमों का उपयोग करता है, किंतु उसके मन में क्या वे सब बातें नहीं थीं जिनका वर्णन वह 10:32–34; 11:35–38; में करता है? 1 कुरि.11:29–32; 2 कुरि. 12:7–10; 1 पतरस 1:6,7 भी देखें। तुलना करें भजन 66:10–12 और भजन 73 देखें, जहाँ परमेश्वर का एक जन अपने अनुशासन के समय के अनुभव का वर्णन करता है।

12:5,6 – नीति. 3:11,12; अय्यूब 5:17; भजन 94:12, और 118:67,71,75 भी देखें।

12:7,8 – ऐसा प्रतीत होता है कि सच्चे विश्वासी दूसरे अन्य लोगों से अधिक कठिनाईयों का साम्हना करते हैं (भजन 73:2–14)। यहाँ उसका कारण भी है। परमेश्वर उनसे पुत्र के रूप में व्यवहार करता है। एक व्यक्ति जो अपने आपको मसीही समझता है, उसे यह चिंता नहीं करनी चाहिये कि परमेश्वर उसका अनुशासन कर रहा है। उसे तब परेशान होना चाहिये जब उसका अनुशासन नहीं होता है। परमेश्वर शैतान की संतान का अनुशासन नहीं करता है। उनके ऊपर उसका क्रोध बना रहता है। वह उन्हें दण्ड देता है और प्रत्येक का निश्चित समय पर न्याय करता है।

12:9 – *"शारीरिक पिता"* – नीति. 13:24; 18:18; 22:15; 23:13,14।

९ भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे! **फिर**
जबकि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे, तो क्या हम आत्माओं के पिता
१० के और भी आधीन न रहें, जिससे जिएं। **वे** तो अपनी अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के
लिए ताड़ना करते थे, परंतु परमेश्वर तो हमारे लाभ के लिए करता है, कि हम भी उसकी
११ पवित्रता के भागी हो जाएं। **वर्तमान** में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, परंतु शोक ही
की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के
१२ साथ धार्मिकता का प्रतिफल मिलता है। **इसलिए** ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो,

---

"आदर" – जब माता–पिता स्नेह से अपने बच्चों का अनुशासन करते और दण्ड देते हैं, बच्चे समझते हैं और उनका सम्मान करते हैं। यदि माता–पिता अनुशासन नहीं करते हैं तो वे सोचते हैं कि माता–पिता सचमुच में प्रेम करते भी है या नहीं।

"आत्माओं के पिता" – यह बाईबिल में मात्र एक बार आया है (इससे मिलती जुलती बात हमें गिनती 16:22; 27:16 में मिलती है)। ऐसा लगता है कि लेखक पार्थिव पिता और स्वर्गिक पिता की तुलना कर रहा है। वे अपने बच्चों के शरीर को पीड़ा देते हैं, स्वर्गिक पिता अपनी संतानों के भीतरी मनुष्यत्व को बदलना चाहता है।

12:10 – ***"भलाई"*** – रोमि 8:28।

"पवित्रता" – परमेश्वर चाहता है कि उसकी संतान इस संसार की नैतिक अशुद्धता से शुद्ध की जाए (2 कुरिं.6:17) ताकि वे पाप से लड़ते हुए उस पर विजय हासिल करने के साथ अपने हृदय में अधिक पवित्र बन सकें (मत्ती 5:8)। इस दृष्टिकोण को साम्हने रखते हुए वह उन्हें अनुशासित करता, ताड़ना देता और दण्ड देता है। जब समस्याएँ इस प्रकार का प्रतिफल लाती हैं तो उनका स्वागत करना चाहिये। यदि परमेश्वर की पवित्रता में और अधिकता में भागीदार होने और हमें शुद्ध करने में हमें कुछ पीड़ा सहनी पड़े तो कोई बात नहीं।

यहाँ देखें कि उसकी पवित्रता के भागीदार होने के लिये परमेश्वर अपने बच्चों को किस प्रकार योग्यता देता है – ऐसा वह जीवन में एक बार असाधारण अनुभव देकर नहीं करता है। वह अनुशासित करने का कार्य जारी रखता है और निस्संदेह जब तक हम इस संसार को न छोड़ें, करता रहता है। अय्यूब 3:20 की टिप्पणी में स्पष्ट है कि अनुशासन के कुछ और लाभ हैं।

12:11 – यही एक फसल है जिसकी इच्छा सभी विश्वासियों को होती है (मत्ती 5:6)। इसलिये अनुशासन, ताड़ना और दण्ड आदि जिसका उपयोग परमेश्वर इस फसल को उत्पन्न करने में करता है, हमें ग्रहण करना चाहिये।

"सहते सहते पक्के हो गये हैं" – समस्याओं और दुखों के कारण हम अपने सम्बन्ध में दुख महसूस करते हैं और निराश हो जाते हैं। बजाए इसके हमें अपना परीक्षण करके, ताड़ना का कारण ज्ञात करके अपने आपको सुधारना चाहिये। विलापगीत 3:40 से तुलना करें।

12:12–16 – ***"इसलिये"*** – लेखक विश्वासियों से चार बातों को करने के लिये कहता है, ***"सीधे करो"*** (पद 12), ***"सीधे मार्ग बनाओ"*** – (पद 13), ***"खोजी हो"*** – (पद 14), ***"ध्यान से देखते रहो"*** – (पद 15)। यदि परमेश्वरीय अनुशासन कुछ अपेक्षा से है, तो हमें मात्र निष्क्रिय रहने के बजाए पूर्ण रूप से उसके साथ सहयोग करना चाहिये।

12:12 – ***"सीधे करो"*** – यदि किसी व्यक्ति के घुटने मुड़े हैं और हाथ सीधे लटक रहे हैं, तो वह व्यक्ति भली रीति से कैसे दौड़ में भाग ले सकता है (पद 1)? मसीह में परमेश्वर के पास हमारे लिये सामर्थ है और हमें इसे उपयोग में लाना सीखना चाहिये। देखें भजन 29:11; 73:26; 105:4; इफि. 1:18,19; 6:10; कुलु. 1:11,12,29।

१३ **और** अपने पांवों के लिए सीधे मार्ग बनाओ कि लंगड़ा भटक न जाए, परंतु ठीक हो जाए।
१४ **सब से** मेल मिलाप रखें, और उस पवित्रता के खोजी हों जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि
१५ न देखेगा। **और** ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह
जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं।
१६ **ऐसा** न हो, कि कोई जन व्यभिचारी, या एसाव के समान अधर्मी हो, जिसने एक बार के भोजन

12:13 – *"सीधे मार्ग बनाओ"* – अच्छी तरह दौड़ने के लिये यह आवश्यक है कि सीधा और समतल मार्ग हो। यह हम पर निर्भर है कि हमें ऐसा मार्ग प्राप्त होता है या नहीं। यदि हम अपने जीवन में दुष्टता को रहने देंगे तो हम जीत नहीं हासिल कर पाएंगे।

"लंगड़ा भटक न जाए" – नीति. 4:25–27 परमेश्वर के अनुशासन के मार्ग पर चंगाई है यदि हम आधीन हो जाएं। शोक की बात यह है कि बहुत से मसीही लंगड़े पैरों से दौड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं।

12:14 – *"खोजी हो"* – एक बार हम पुनः देखते हैं कि हमारा व्यक्तिगत प्रयास सम्मिलित है। जीवन में यों ही लहरों से बहाए जाने वाले जीवन का स्वप्न हमें नहीं देखना चाहिये।

"मेलमिलाप" – मत्ती 5:9; रोमि. 12:18।

"पवित्रता" – पद 10 – पवित्रता के लिये प्रयत्न आवश्यक है। अधिक प्रयास (रोमि. 8:13; 1 कुरिं.9:27; 2 कुरिं. 7:1; गल. 5:16–18; इफि. 4:22–32; कुलु. 3:5; इब्रा. 12:4,10–13; 1 पतरस 1:13–16;2 पतरस 1:5–8)। पवित्रता के पीछे लगे रहना है यह जानकर कि ऐसा करना उचित है।

पवित्रता एक अति आवश्यक बात है (मत्ती 5:8; 1 कुरि. 6:9–11)। जो लोग संसार, शरीर और शैतान के अनुसार जीते हैं और अपने आपको मसीही कहते हैं और परमेश्वर के पवित्र स्वर्ग में स्वागत की अपेक्षा कर रहे हैं वे भयानक रीति से आश्चर्य में पड़ जाएंगे। (लैव्य.20:8; यूहन्ना 17:17–19 में पवित्रता पर नोट्स देखें।

12:15 – *"ध्यान से देखते रहो"* – यह संभव है कि कलीसिया के कुछ लोग परमेश्वर के अनुग्रह से अनजान रहें – तुलना करें 2 कुरिं. 6:1; गल. 5:4,7। लेखक अपने पवित्रता के विषय को जारी रखता है। वह यह जानता है कि पवित्र होने का मात्र उपाय परमेश्वर का अनुग्रह है और यदि एक व्यक्ति उसका ध्यान नहीं रखता है तो वह इस एक मार्ग के संबंध में अनजान रहेगा। यदि ऐसा होता है तो कड़वाहट की जड़ें हृदय में और कलीसिया में निकल सकती हैं। यदि सावधानी न बरती जाए तो किसी भी कलीसिया में झगड़े, विभाजन, बुरा बोलना, बदला लेना आदि हो सकता है जिससे सभी प्रभावित होंगे। कुछ सीमा तक कुरिंथ और गलतिया की कलीसिया में ऐसा हो रहा था।

12:16 – ऐसी बहुत सी बातें है जिन्हें हमें कलीसिया में देखते रहना चाहिये। बाईबिल में हम गलत राह पर चलने की भयंकर सम्भावनाओं को देखते हैं।

"एसाव" – उत्पत्ति 25:24–34। वह ऐसे लोंगों का नमूना है, जो अनुग्रह से वंचित रह जाते हैं। एसाव ने जन्म अधिकार के और इससे जुड़ी प्रतिज्ञाओं के महत्व को न जाना।

"अधर्मी" – यूनानी शब्द का अर्थ "अशुद्ध" "सामान्य" है। एसाव ऐसा ही व्यक्ति था जिसे आत्मिक बातों में कोई रुचि नहीं थी। वह ऐसे लोगों का नमूना है जो शरीर की बातों पर मन लगाते हैं (रोमि. 8:5–8), जो परमेश्वर के बजाए स्वयं को प्रसन्न करना मांगते हैं। क्या हमारी कलीसिया में और कलीसिया के अगुवों के बीच आज ऐसे लोग नहीं हैं? जब तक ऐसे लोगों के जीवन में पूर्ण बदलाव नहीं आता, तब तक उनका अन्त एसाव के समान ही होगा – त्यागे हुए। तुलना करें मलाकी 1:3।

12:17 – *"बाद में"* – उत्पत्ति 27:30–40।

"मन फिराव" – शायद इसका अर्थ है कि उसने अपने पिता के मन को बदलना चाहा, जिसने याकूब को आशीष दे दी थी। कुछ लोग सोचते हैं कि एसाव ने अपने मन को बदलने का प्रयत्न

१७ के बदले अपने पहिलौठे होने का पद बेच डाला। **तुम** जानते तो हो, कि बाद में जब उसने
आशीष पानी चाही, तो वह अयोग्य गिना गया, और आंसू बहा बहाकर चाहने पर भी मन फिराव
१८ का अवसर उसे न मिला। **तुम** तो उस पहाड़ के पास जो छूआ जा सकता था और आग से
१९ प्रज्वलित था, और काली घटा, और अन्धेरा, और आन्धी के पास; **और** तुरही की ध्वनि, और
बोलनेवाले के ऐसे शब्द के पास नहीं आए, जिसके सुननेवालों ने बिनती की कि अब हमसे और
२० बातें न की जाएं। **क्योंकि** वे उस आज्ञा को न सह सके, कि यदि कोई पशु भी पहाड़ को छूए,
२१ तो उसे पत्थरवाह किया जाए। **और** वह दर्शन ऐसा डरावना था, कि मूसा ने कहा, मैं बहुत
२२ डरता और कांपता हूं। **परंतु** तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवित परमेश्वर के नगर
२३ स्वर्गिक यरूशलेम के पास, **और** लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और
कलीसिया जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं, और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध
२४ किए हुए धर्मियों की आत्माओं, **और** नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के उस लोहू

किया, किंतु यह सही नहीं लगता है।

12:18 – *"तुम तो... नहीं आये"* – मसीह में विश्वासी होने के नाते वे व्यवस्था के अंतर्गत नहीं थे – रोमि.6:14। विश्वासियों ने पिता के साथ संगति के लिये पुरानी वाचा को एक उपाय के रूप में देखना भी नहीं चाहिये।

"पहाड़" – सीनै पर्वत। इस पद में वर्णित बातें और अगले दो पदों की सच्चाईयाँ निर्ग. 19:16–19; 20:18,21 और व्यवस्था. 4:11 पर निर्भर हैं।

12:19–20 – यह सब कुछ संकेत है कि व्यवस्था का दिया जाना भयानक बात है। निर्ग. 19 पर नोट्स देंखें।

12:21 – यहाँ पर मूसा द्वारा कहीं बातें, बाईबिल में और कहीं नहीं हैं। मूसा की कही बातों को पवित्र आत्मा जानता था और किसी न किसी प्रकार पत्री के लेखक पर प्रगट की गयीं।

12:22 – *"सिय्योन पर्वत के पास"* – लेखक मसीह में विश्वास और मसीह द्वारा स्थापित नयी वाचा के आशीषित कारणों को दिखाता है। वह स्वर्गिक सिय्योन पर्वत, जो कि पार्थिव शहर की आत्मिक सच्चाईयों की वास्तविकता थी, उसकी छाया के विषय में बताता है।

"स्वर्गिक यरूशलेम" – गल. 4:26; प्रका. 21:10।

12:23 – *"साधारण सभा"* – यूनानी में इसका अर्थ सात लोगों की सामान्य सभा, आराधना की सभा या सार्वजनिक उत्सव था।

"पहिलौठा" – जो लोग महान पहिलौठों से जुड़ चुके हैं – देखें रोमि. 8:29; कुलु. 1:15,18; प्रका. 1:5।

"स्वर्ग में लिखे हुए" – लूका 10:20; प्रका. 21:20।

"न्यायी" – भजन 50:4–6; 96:13; यशा. 33:22; प्रेरित. 17:31; रोमि. 2:16।

"सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं" – जो लोग विश्वास में मर चुके हैं और मसीह के बलिदान से सिद्ध किए गए हैं (इब्रा. 10:10,14) और परमेश्वर की उपस्थिति में बिना कलंक के हैं।

12:24 – *"मध्यस्थ यीशु"* – 8:6; 9:15, 1 तीमु.2:5। इस संसार के परमेश्वर के पास हम मात्र यीशु के द्वारा ही आ सकते हैं (10:19–22)।

"नयी वाचा" – 8:8–13, मत्ती 26:26–28।

"छिड़काव का लोहू" – 9:14; 10:22 1 पतरस 1:2।

"हाबिल" – उत्पत्ति 4:1। हाबिल का रक्त उस व्यक्ति पर दण्ड और बदले के लिये पुकारता

२५ के पास आए हो, जो हाबील के लोहू से उत्तम बातें कहता है। **सावधान** रहो, और उस
कहनेवाले से मुंह न फेरो, क्योंकि वे लोग जब पृथ्वी पर के चेतावनी देनेवाले से मुंह मोड़कर
२६ न बच सके, तो हम स्वर्ग पर से चेतावनी करनेवाले की अनसुनी करके कैसे बच सकेंगे? **उस**
समय तो उसके शब्द ने पृथ्वी को हिला दिया, परंतु अब उसने यह प्रतिज्ञा की है कि एक बार
२७ फिर मैं केवल पृथ्वी को नहीं, वरन् आकाश को भी हिला दूंगा। **यह** वाक्य 'एक बार फिर' इस
बात को प्रगट करता है, कि जो वस्तुएं हिलाई जाती हैं, वे सृजी हुई वस्तुएं होने के कारण
२८ टल जाएंगी; ताकि जो वस्तुएं हिलाई नहीं जाती, वे अटल बनी रहें। **इस** कारण हम इस राज्य
को पाकर जो हिलने का नहीं, उस अनुग्रह को हाथ से न जाने दें, जिसके द्वारा हम भक्ति,
२९ और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना कर सकते हैं जिससे वह प्रसन्न होता है।
क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करनेवाली आग है।

रहा, जिसने उसे बहाया था। मसीह का लोहू छुटकारे और क्षमा के विषय बात करता है – इफि. 1:7। 18–24 पदों में लेखक ने स्पष्ट भाषा में दिखाया है कि नई वाचा पुरानी वाचा से कितनी बेहतर है। पुरानी भय और दण्ड के विषय है, नयी वाचा, दया, परमेश्वर तक पहुँच और अनंत आशीष के विषय है।

12:25–29 – इस पत्र में यहाँ विश्वास त्याग के विषय मे चितौनी है (2:1–4; 3:7–19; 6:4–8; 10:26–31)। यह नयी वाचा के परमेश्वर के प्रकाशन के विरोध में खड़ा होना है।

12:25 – ***"कहने वाले"*** – परमेश्वर है (1:1,2)।

"पृथ्वी" – सीनै पर्वत पर मूसा से परमेश्वर ने बातें की।

"स्वर्ग" – अपने पुत्र के द्वारा उसने ऐसे वार्तालाप किया जैसे कि स्वर्ग से सीधे (यूहन्ना 1:18; 8:23; 23:49,50)। जिन्होंने मूसा के द्वारा दिये गये परमेश्श्वर के वचन की अनसुनी की, वे बच न सके। इसलिये मसीह के वचन को अस्वीकार करने से कौन बचेगा (2:3; 10:28,29; यूहन्ना 12:48)।

"यदि" – देखें 6:6; 10:26।

12:26 – ***"पृथ्वी को हिला दिया"*** – निर्ग. 19:18।

"स्वर्ग" – हग्गै 2:6।

12:27 – 1:10–12 देखें। प्रका. 6:12–14; 21:1। आने वाले समय में भौतिक सृष्टि जाती रहेगी, किंतु परमेश्वर का राज्य (सिद्धता) जो नई वाचा के कारण आया है, वे बातें जो 22–24 पदों में हैं, कभी भी नहीं टलने की।

12:28 – ***"राज्य"*** –मत्ती 4:17; रोमि. 14:17।

"परमेश्वरीय भय" – उत्पत्ति 20:11; अय्यूब 28:28; भजन 34:11–14; 90:11; 111:10; नीति.1:7। बिना परमेश्वर के आदर और सत्कार और ईश्वरीय डर के बुद्धि नहीं मिलती और न ही इस प्रकार की आराधना परमेश्वर को ग्रहणयोग्य है।

12:29 – ***"आग"*** – निर्ग. 3:2 के नोट्स देखें।

"भस्म करने वाली आग" – उस पवित्रता को दिखाती है जो इसके विपरीत की सभी बातों को नाश करती है। जो न्याय अविश्वासियों, उसको भूलने वालों और उसकी वाणी न सुननेवालों पर आएगा वह भयानक होगा। तुलना करें 2 थिस्स.1:7,8।

अध्याय 13

13:1 – यूहन्ना 13:34; रोमि.12:10; 13:8।

13:2 – रोमि. 12:13; 1 पतरस 4:9; 3 यूहन्ना 1:5–8।

१३ **भाईचारे** की प्रीति बनी रहे। **अतिथि**–सत्कार करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कितनों ने
३ अनजाने स्वर्गदूतों की पहुनाई की है। **कैदियों** का ऐसा ध्यान रखो कि मानो उनके साथ तुम
भी कैद हो; और जिनके साथ बुरा बर्ताव किया जाता है, उनकी भी यह समझकर सुधि लिया
४ करो कि हमारी भी देह है। **विवाह** सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक
५ रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा। **तुम्हारा** स्वभाव
लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है,"मैं
६ तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।" **इसलिए** हम बिना झिझक के कहते हैं, कि
७ प्रभु, मेरा सहायक है; मै न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है? **जो** तुम्हारे अगुवे थे, और
जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उनके चाल चलन

"स्वर्गदूत" – उत्पत्ति 19:2,22; 19:1–3। प्रायः स्वर्गदूत मनुष्यों के रूप में प्रगट होते हैं। यदि हम पहुनाई करेंगे, तभी किसी स्वर्गदूत की अनजाने में पहुनाई का घर में अवसर मिल सकता है।

13:3 – लूका 6:31; रोमि.12:15; मत्ती 25:34–40। प्रेम हमें स्वयं को दूसरों के स्थान पर रखने योग्य बना सकता है ताकि हम उन बातों का अनुभव कर सकें और दया दिखा सकें।

13:4 – *"आदर की बात"* – मसीहियों में विवाह को आदरणीय समझना चाहिये क्योंकि इसे परमेश्वर ने ठहराया है (मत्ती 19:4–6)।

"परमेश्वर यौन संबंधी पाप करनेवालों का न्याय करेगा।" प्रका. 21:8; कुलु. 3:5,6; इफि. 5:3–6; 1 कुरिं. 6:9,10।

13:5 – *"लोभरहित"* – देखें 1 तीमु. 6:9,10; मत्ती 6:19,20,24; लूका 12:15–21; 16:14; यूहन्ना 12:4–6।

"संतोष करो" – लूका 3:14; फिलो. 4:12; 1 तीमु. 6:6–8।

"मैं तुझे कभी न छोडूंगा" – व्यव. 31:6; मत्ती 28:20; यूहन्ना 14:16। संसार की सम्पत्ति से कहीं अधिक बढ़कर हमारे साथ परमेश्वर की उपस्थिति है। यदि वह हमारे साथ है तो वह हमारी आवश्यकता को पूरा करेगा (मत्ती 6:25–34; फिलि. 4:19) और भीतर उसकी उपस्थिति से हम सभी परिस्थितियों में सन्तुष्ट रहेंगे। परंतु यदि विश्वासी पाप करे, तो क्या परमेश्वर उन्हें त्याग नहीं देगा? क्योंकि वह कहता है कि मैं तुम्हें नहीं छोडूंगा, तो अवश्य ही नहीं छोड़ेगा। इसका अर्थ यह नहीं कि वे पाप करने के लिये स्वतंत्र हैं। उसके विपरीत प्रभु उन्हें स्वतंत्र करता है कि वे पवित्र बनें (रोमि. 6:1,2; 15:18)। किंतु क्या विश्वासी उसे छोड़ नहीं सकते? वे ऐसा नहीं करना चाहते हैं और न ही करते हैं (10:39; यूहन्ना 10:27)। कुछ लोग मसीही होने का दावा करते हैं, किंतु हैं नहीं, वे उसे छोड़ना चाहते हैं और छोड़ भी देते हैं। यदि सच्चे विश्वासी ने ऐसा करना भी चाहा जो कि वे नहीं करेंगे, तो यह बहुत कठिन होगा (देखें भजन 139:7–12)।

13:6 – देखें भजन 118:6,7; रोमि.8:31; मत्ती 10:28–31; भजन 27:1–3। मनुष्यों ने पहले ही उनके विरोध में बहुत कुछ किया (10:32–34), किंतु मनुष्यो का डर उनके जीवन में स्थान नहीं था। जो कुछ मनुष्य कर सकते थे, वह क्षणिक था। यदि परमेश्वर उनके साथ था, तो उनके लिये आशीषित अनंत प्रतीक्षा थी। तुलना करें 2 कुरिं. 4:17,18।

13:7 –*"अगुवे"* – वह शायद उनके विषय कह रहा है जिन्होंने पहले उन्हें सुसमाचार सुनाया।

"अनुकरण" – 1 कुरिं. 4:16; 11:1; फिलि.3:17; 1 थिस्स. 1:6; 2 थिस्स. 3:7,9।

13:8 – मानवीय अगुवे जीवित रहते हैं, मरते हैं, आते हैं, जाते हैं। मसीह सदा एक सा है (1:12)। महान महायाजक के रूप में उसकी सेवा वैसी ही है (7:24,25)। निस्संदेह मुख्य बात यहाँ यह है कि उसके चरित्र या लोगों के लिये उसकी प्रेम भरी सेवा में कोई परिवर्तन नहीं होगा। वह सदाकाल तक

८ का परिणाम देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो। **यीशु** मसीह कल और आज और
९ युगानुयुग एकसा है। **अनेक** प्रकार के और ऊपरी उपदेशों से न भरमाए जाओ, क्योंकि मन
का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है, न कि उन खाने की वस्तुओं से जिनसे काम रखनेवालों को कुछ
१० लाभ न हुआ। **हमारी** एक ऐसी वेदी है, जिस पर से खाने का अधिकार उन लोगों को नहीं,
११ जो तम्बू की सेवा करते हैं। **क्योंकि** जिन पशुओं का लोहू महायाजक पाप–बलि के लिए पवित्र
१२ स्थान में ले जाता है, उन पशुओं की देह छावनी के बाहर जलाई जाती है। **इसी** कारण, यीशु
ने भी लोगों को अपने ही लोहू के द्वारा पवित्र करने के लिए फाटक के बाहर दुख उठाया।
१३ **इसलिए** आओ, उसकी निन्दा अपने ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलें।
१४ **क्योंकि** यहां हमारा कोई स्थिर रहनेवाला नगर नहीं, वरन् हम एक आनेवाले नगर की खोज
१५ में हैं। **इसलिए** हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम

वही रहेगा जो वह अनंत से है, पुराने नियम में था और इस पृथ्वी पर अपने जीवन काल में था।

13:9 – *"ऊपरी उपदेश"* – इफि. 4:14; रोमि.16:17; प्रेरित. 20:20; मत्ती 7:15। स्पष्ट है कि लेखक के मन में रीति विधियों से सम्बंधित भोजन के आत्मिक मूल्य से संबंधित यहूदी शिक्षाएँ थी (तुलना करें रोमि.14:2,14,21; 1 कुरिं.8:8; कुलु. 2:8,16–23; लैव्य. 11:2–23 पर नोट्स देखें)। केवल परमेश्वर का अनुग्रह आत्मिक जीवन का पोषण कर सकता है, भौतिक वस्तुएँ नहीं।

13:10 – *"एक वेदी"* – मसीह में विश्वासियों की कोई दिखनेवाली, पदार्थिक वेदी नहीं है। लेखक मसीह के क्रूस के बलिदान की बात करता है। जो लोग मसीह को विश्वास से ग्रहण करते हैं, उनके पास आत्मिक जीवन है, रीति विधि वाला भोजन नहीं (यूहन्ना 6:53–58,63)। जो लोग पुराने यहूदी व्यवस्था में सेवा करते हैं और मसीह एवं नयी वाचा को अस्वीकार करते हैं उन्हें इस "वेदी" में कोई भाग नहीं है।

13:11 – वह प्रायश्चित के दिन की ओर संकेत करता है – 9:7। लैव्य.16:27 देखें। उस दिन बलिदान किए हुए पशुओं का माँस कोई नहीं खाता। यह भी निश्चित है कि मसीह की बलिदान की गई यथार्थ की देह को कोई नहीं खा सकता। यह अविश्वसनीय है।

13:12 – *"पवित्र करने", "पवित्र बनाना"* या ***"अलग करना", "समर्पित करना"*** – 10:10। यीशु का रक्त विश्वासियों के लिये यही करता है।

"फाटक के बाहर" – क्रूस का स्थान (गुलगुता या कलवरी) यरूशलेम शहर के बाहर था (मत्ती 27:32,33)।

13:13 – *"छावनी के बाहर"* – यहूदी मत या पुरानी वाचा की विधि के बाहर।

"निंदा" **या *"बदनामी"* – 12:2। दोषी ठहराए हुए अपराधी क्रूस पर चढ़ाए जाते थे। यदि हम उस**की (मसीह की) मृत्यु को स्वीकार करते हैं तो हम यह मान रहे हैं कि हम ऐसे पापी हैं जो मृत्यु के योग्य हैं। विश्वासी लोग क्रूसित उद्धारकर्ता के क्रूसित लोग हैं (गल.6:14), और यह कहने में उन्हें शर्माना भी नहीं चाहिये।

13:14 – *"नगर"* – 11:10,16; 12:22।

13:15,16 – पुरानी वाचा में याजक बलिदान चढ़ाया करते थे। यहाँ लेखक संकेत देता है कि मसीह में सभी विश्वासी नयी वाचा के याजक हैं। देखें 1 पतरस 2:5,9; प्रका. 1:6। उनका बलिदान पशु नहीं है, न ही भौतिक वेदी पर भौतिक वस्तु, किंतु कुछ और बेहतर।

"स्तुति" – देखें भजन 33:1–3।

"भलाई करना" – नए नियम के याजक होने के नाते विश्वासियों की यह अत्यंत महत्वपूर्ण सेवा है। देखें मत्ती 5:16; 25:34–40; लूका 6:27,35; रोमि. 12:21; 2 कुरि. 9:8; गल. 6:10; कुलु.

१६ का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें। **भलाई** करना, और उदारता न
१७ भूलो; क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है। **अपने** अगुवों की मानो और उनके
आधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा,
कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ
१८ नहीं। **हमारे** लिए प्रार्थना करते रहो, क्योंकि हमें भरोसा है कि हमारा विवेक शुद्ध है, और हम
१९ सब बातों में अच्छी चाल चलना चाहते हैं। **और** इसके करने के लिए मैं तुम्हें और भी समझाता
२० हूं, कि मैं शीघ्र तुम्हारे पास फिर आ सकूं। **अब** शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को,
जो भेड़ों का महान रखवाला है, सनातन वाचा के लोहू के गुण से मरे हुओं में से जिलाकर ले
२१ आया, **तुम्हें** हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी करो, और जो कुछ

1:10; 2 थिस्स. 2:17; याकूब 1:27; 1 पतरस 2:12।

– मत्ती 5:42; रोमि. 12:13; गल. 6:6; 1 तीमु. 6:18; 1 यूहन्ना 3:17। परमेश्वर इस प्रकार की भेंटों से प्रसन्न होता है। तुलना करें 10:6; और दूसरी भेंट के लिये जो उसे प्रसन्न करती हैं, देखें रोमि. 12:1।

13:17 – ***"अगुवे"*** – कलीसिया में अगुवे होने चाहिए और अगुवों के पास अधिकार होना चाहिए। उनका अधिकार परमेश्वर की ओर से आता है जो उन्हें नियुक्त करता है। लेखक जानता था कि इब्री कलीसिया के अगुवे अच्छे थे। सभी अगुवे अच्छे नहीं होते हैं, और जो अगुवे परमेश्वर द्वारा प्रगट की गयी सच्चाईयों के अनुसार जीवन नहीं बिताते हैं (तुलना करें प्रे. का. 4:19; 5:29), और नये नियम की शिक्षा के अनुसार आज्ञा नहीं देते हैं, उनकी बातों को नहीं मानना चाहिए। कलीसिया के अच्छे अगुवे सदस्यों की देखभाल करते हैं – प्रे. का. 20:28; 1 पतरस 5:1–4।

"लेखा" – कलीसिया के अगुवों को न ही अपने व्यक्तिगत् जीवन का हिसाब देना होगा, किंतु परमेश्वर के लोगों के ऊपर उनके नेतृत्व का भी।

13:18 – ***"शुद्ध विवेक"*** – 2 कुरिं. 1:12; 4:2।

13:19 – रोमि. 15:30–32; फिले. 22।

13:20 – ***"शांति का परमेश्वर"*** – 7:2; रोमि. 15:33; 16:20; 2 थिस्स.3:16।

"मरे हुओं में से जिलाकर" – मत्ती 28:6। इस पत्री में यही एकमात्र स्थान है जहाँ लेखक मसीह के पुन्रुत्थान के विषय में कहता है। परंतु कई बार वह इस बात को सूचित करता है – 1:3; 2:9; 10:12–13।

"सनातन वाचा का लोहू" – 9:12; 10:29; मत्ती 26:28। यहाँ नयी वाचा को सनातन कहा गया है। परमेश्वर ने अपने लोगों के लिये जो कुछ निश्चित किया है उसे यह वाचा पूरी करती है। और दूसरी वाचा की जरूरत नहीं है।

13:21 – प्रत्येक विश्वासी के लिये परमेश्वर यह कर सकता है और कोई विश्वासी अपने लिये नहीं कर सकता, और दूसरा कोई विश्वासी स्वयं के लिये नहीं कर सकता। यदि परमेश्वर हमें तैयार न करे, तो हम कभी तैयार नहीं हो सकते। यदि वह हममें कार्य न करे, तो हमारे काम उसे कभी प्रसन्न नहीं कर सकते। तुलना करें 2 कुरि. 3:5; फिलि. 2:13; कुलु. 1:29। प्रत्येक विश्वासी का लक्ष्य प्रभु यीशु के समान होना चाहिए (मत्ती 26:39; यूहन्ना 4:34; 6:38; 8:29) – परमेश्वर की इच्छा – कम नहीं, अधिक नहीं, और कुछ नहीं। परमेश्वर मसीह के "द्वारा" विश्वासी में यह करता है। वह परमेश्वर के अनुग्रह और सामर्थ का एकमात्र ज़रिया है।

13:22 – ***"उपदेश"*** – जिन सैद्धान्तिक सच्चाईयों को लेखक ने यहाँ प्रस्तुत किया है, उनमें बीच बीच में उपदेश दिए गए थे। बार बार उसमें लिखा गया है "इसलिये" और "आओ हम" – वचन 13,15; 2:1; 4:1,11,14,16; 6:1; 10:19,22,23,24; 12:1,28। वह व्यावहारिक कारण से लिखता है और उन्हें गहन

उसको भाता है, उसे यीशु मसीह के द्वारा हममें उत्पन्न करे, जिसकी बड़ाई युगानुयुग होती
२२ रहे। आमीन। **हे** भाइयो, मैं तुमसे बिनती करता हूं, कि इन उपदेश की बातों को सह लो;
२३ क्योंकि मैंने तुम्हें बहुत संक्षेप में लिखा है। **तुम** यह जान लो कि तीमुथियुस हमारा भाई छूट
२४ गया है और यदि वह जल्द आ गया, तो मैं उसके साथ तुमसे भेंट करूंगा। **अपने** सब अगुवों
२५ और सब पवित्र लोगों को नमस्कार कहो। इटली वाले तुम्हें नमस्कार कहते हैं। **तुम** सब पर
अनुग्रह होता रहे। आमीन।।

सच्चाई देता है कि वे उस पर अमल करें और गहरा आत्मिक जीवन बिताएँ।

13:23 – ***"तीमुथियुस"*** – प्रे. का. 16:1। स्पष्ट है कि वह कैद में था।

13:25 – ***"अनुग्रह"*** – यूहन्ना 1:14,16; रोमि. 1:7; 2 कुरि. 8:9 आदि की टिप्पणी देखें।